नयी दिशाएँ

(भारतीय दूरदर्शन पर आयी हुई
घटना-श्रृखलाओं पर आधारित युवा-पीढ़ी की
समस्याओ का समाधान करने वाला उपन्यास)

रवीन्द्र वाघ्र

हमारे नवीनतम प्रकाशन

नीली रेखा तक (काव्य)	भवानीप्रसाद मिश्र
सूर्यपुत्र (खण्ड काव्य)	जगदीश चतुर्वेदी
व्यक्तिगत (नाटक)	डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल
बलराम की तीर्थयात्रा (नाटक)	डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल
अरुण कमल एक (नाटक)	डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल
मनु (नाटक)	डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल
पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र सिद्धान्त और परिदृश्य	डॉ० नगेन्द्र
कविप्रिया प्रकाश	डा० ओम्प्रकाश सिंहल

मूल्य बीस रुपये
प्रथम सस्करण 1989

प्रकाशक **पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी** 888 ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 (भारत) दूरभाष कार्यालय 526933 आवास 5721321

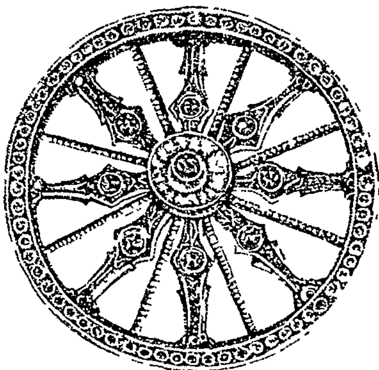
मुद्रक **पीयूष प्रिंटर्स पब्लिशर्स प्रा०लि०** जी-12 उद्योग नगर, रोहतक रोड, इन्डस्ट्रीयल एरिया नई दिल्ली-110 041 दूरभाष 5472440

NAYEE DISHAYEN Dr Ravindra Wagh Price Rs 20 00

युवा पीढी की समस्याओ पर ज्वलन्त उपन्यास

नयी दिशाएँ

डा० रवीन्द्र वाघ



लेखक के विषय मे

डॉ० रवीन्द्र वाघ पिछले 20 वर्षो से देश के प्रमुख स्कूल कैथीड्रल जॉन कॉनन स्कूल, बम्बई मे अध्यापन-रत हैं जिससे उन्हे विद्यार्थियो को बहुत निकट से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। उन्होने नाटक के क्षेत्र मे भी बहुत काम किया है और उनके दो नाटक – "पागलो की दुनिया", और "लॉटरी का धमाका" दूरदर्शन पर दिखाए जा चुके हैं। नाटक के क्षेत्र मे उनकी विशिष्ट सेवाओ पर बम्बई विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की है। उन्होने अनेक पुस्तको की रचना की है जो कि विद्यार्थियो मे बहुत लोकप्रिय हैं।



पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग

नई दिल्ली-110005 भारत

संदेश

ऐ नौजवान, कमजोरी की बात मत सोचो। पहचानो, अपनी असीम शक्ति को और लग जाओ अपने कर्त्तव्य का पालन करने मे। यह भूलो मत कि तुम्ही आने वाले कल के निर्माता हो, तुम्ही अपने भाग्य के विधाता हो। तुम्हारे दिल मे इन्सानियत का अनत सागर हिलोरे ले रहा है। उठो, और अपनी शक्ति से तोड दो उन दीवारो को जिसके कारण इन्सान शैतान बनता जा रहा है। जगा दो अपनी सोयी शक्ति को। तुम चाहो तो बजर धरती को चीर कर उसमे से सोना उगा सकते हो। तुम खुद एक मजबूत चट्टान हो। अपनी जिन्दगी की मुसीबतो की चट्टानो को तोड दो। उठो। धरती के दु खी इन्सान तुम्हे पुकार रहे हैं। नयी आकाक्षाओ के फूल खिला दो। प्यार के रिश्तो मे दुनिया के हम इन्सानो को करीब लाकर एक कर दो।

तुम एक ऐसी दुनिया का निर्माण करो जहा हम सभी इन्सान प्यार से, सुख से और अमन से इस दुनिया के चमन मे जी सके। दुनिया का इतिहास गवाह है कि तुमने अन्याय को मिटाने के लिए अपना कीमती खून बहाया हे। अपनी जिन्दगी कुर्बान की है। तुम्हारा खून पानी नही हो सकता। उठो, दुनिया की बुराइयों को जलाकार खाक कर दो। कुछ बुजदिल, कुछ गुमराह और कुछ कमजोर बने जवानो की अच्छाइयो को जगा दो और दे दो उन्हे नयी दिशाए।

दो शब्द

नयी दिशाएँ हिन्दी साहित्य मे प्रथम उपन्यास है जो युवा-पीढी की जिन्दगी के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालता है। दिल्ली दूरदर्शन पर 'नयी-दिशाएँ' घटना-श्रृखला के रूप मे प्रस्तुत किया जा चुका है और अत्यधिक चर्चित हुआ है। आज युवा-पीढी की समस्याओ पर चिन्तन की आवश्यकता है। इसलिए मैने गुरूजनो और मित्रो के सुझाव पर अनावश्यक बातो को निकालकर मूल समस्याओ के समाधान हेतु उपन्यास रूप देने का निश्चय किया है।

इस उपन्यास मे मैंने युवा-पीढी की शक्ति को ललकारा हे। वे अपनी असीम-शक्ति से बडे-बडे परिवर्तन कर सकते हें। कभी-कभी दुर्बलताओ के कारण वे सही रास्ते से भटक जाते हैं लेकिन सही और नयी दिशा प्राप्त होने पर उनकी रचनात्मक शक्तिया जागृत हो उठती हें। नशीले पदार्थो के सेवन करने से कमजोर मन के विद्यार्थी नये वातावरण मे जीवन का पुनर्निर्माण कर सकते हें। शिक्षा की समस्याए, पीढियो का सघर्ष, शहर एव गॉव की समस्याएँ, आडम्बर, तस्करी, आदि विषयो का लेखा-जोखा इस उपन्यास मे हुआ है। पैंतीस वर्षों से अध्यापन-कार्य करते समय युवा-पीढी को मैंने काफी करीब से देखा है। मैंने ऐसा महसूस किया है कि उचित मार्गदर्शन से युवा-पीढी व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ देश के सर्वतोन्मुखी विकास मे भी चार चॉद लगा सकते हैं।

—लेखक

समर्पण

नई पीढी के युवको और युवतियो
को समर्पित
जो आधुनिक भारत के
निर्माता
हैं।

प्रकरण एक

रामकृष्ण कालेज जुहू के सागर-किनारे से जरा दूरी पर बहुत ही खूबसूरत जगह पर बाधा गया था। कालेज के चारो ओर हरियाली फैली थी और हरियाला के किनारो पर नारियल के पेडो की कनारे पहरेदारो की भाति खडी थी। इस हरियाली के बीच लाल मिट्टी के रास्तो का जाल बिछा हुआ था। कॉलेज के सामने दीवार से सटकर रगीन फूलो के पौधे मद हवा के झोको मे लहराते हुए दिखाई दे रहे थे। कालेज के प्रवेश-द्वार के बीचोबीच राष्ट्रपिता गाधीजी की मूर्ति विराजमान थी। इस प्रशस्त प्रवेश-द्वार से विद्यार्थी, विद्यार्थिनिया, प्रोफेसर आदि आते-जाते दिखाई देते थे। प्रवेश-द्वार के ऊपर दीवार पर 'रामकृष्ण कालेज आफ कामर्स' का फलक दिखाई दे रहा था।

कालेज से कुछ दूर, छात्रावास की इमारत थी जिसमे केवल सीनियर विद्यार्थी रहते थे। चौथी मजिल पर प्रोफेसरो के लिए चार फ्लैट थे। कालेज के पीछे प्रिंसिपल का छोटा-सा बगला था। पिछले वर्ष ही कालेज ने पच्चीस वर्ष पूरे किए थे और इन पच्चीस सालो के इतिहास म रामकृष्ण कालेज ने तेज़ रफ्तार से तरक्की की थी। कालेज के प्रागण के बाहर बगीचा, खेल का मैदान, कालेज का कटीन और इस कटीन के पास ही विद्यार्थियो के मनोरजन के लिए और आराम से बैठकर बात करने के लिए बहुत बडा हॉल था। राम-कृष्ण कालेज का भवन पत्थरो से बना था और बीच-बीच मे दीवारो पर हिन्दू देवी-देवताओ की मूर्तियाँ लगी हुई थी। कालेज

का भवन अर्द्ध-चन्द्राकार था। चार मजिलो के इस विशाल भवन मे पहली मजिल पर प्रोफेसरो के लिए स्टाफ रूम था और उसी के पास सटकर कालेज का दफ्तर था। प्रिंसिपल तथा वाइस-प्रिंसिपल के रूम चौथी मजिल के कोने मे थे। कुछ क्लास-रूम बडे थे और कुछ छोटे थे। क्लास-रूमो के सामने का बरामदा काफी चौडा था। अक्सर विद्यार्थी इस बरामदे मे खडे खडे बाते करते दिखाई देते थे।

इस कालेज मे आने वाले विद्यार्थी दो प्रकार के थे। ग्यारहवी और बारहवी के जूनियर कालेज के विद्यार्थियो का बी० काम० के विद्यार्थियो से इतना मेलजोल नही था। जूनियर कालेज के विद्यार्थियो मे ऐसे अनेक विद्यार्थी थे जो मराठी, गुजराती और हिन्दी माध्यम से दसवी उत्तीण करके आए थे। ये विद्यार्थी कुछ सहमे सहमे से रहते थे। वे अपने दोस्तो का दल बनाकर साथ-साथ घूमते रहते थे। बातचीत मे वे केवल अपने दोस्तो के सामने रग जमा देते। अग्रेजी बोलने मे उन्हे दिक्कत होती थी इसलिए आम तौर से हिन्दी म ही बातचीत होती रहती। इन विद्यार्थियो मे अग्रेजी माध्यम मे पढ कर आये विद्यार्थी जोर-जोर से अग्रेजी मे बाते करके इन पर प्रभाव जमाने की कोशिश मे रहते थे। प्रातीय भाषाओ के माध्यम मे पढकर आये विद्यार्थियो को अग्रेजी भाषा सीखने मे समय लग जाता था। विश्वविद्यालय की शिक्षा मे हमारी यह बहुत बडी कमजोरी है। होशियार होकर भी अग्रेजी-भाषा मे कमजोर होने के कारण अधिकाश विद्यार्थी निराश हो जाते थे। इस तरह की शिक्षा-पद्धति मे होशियार विद्यार्थी कभी-कभी कमजोर हो जाते हैं। दूसरी बात यह थी कि क्लासेज बडे होने के कारण प्रोफेसर विद्यार्थियो की व्यक्तिगत समस्याओ की ओर ध्यान नही दे सकते। इसी कारण अनेक विद्यार्थी परीक्षाओ के लिए चुने हुए प्रश्नो के उत्तरो को रट-कर अपनी परीक्षाएँ उत्तीण करते रह थे। किसी भी विषय का गहराई मे अध्ययन नही होता।

सीनियर विद्यार्थी बी० काम० के लिए तीन सालो तक अध्ययन करते हैं। ये सभी विद्यार्थी जूनियर कालेज के विद्यार्थियो पर प्रभाव जमाने की इच्छा मे रहते हैं। ये विद्यार्थी तीन प्रकार के होते

हैं। कुछ विद्यार्थी मन लगाकर दिन-रात अपने अध्ययन मे लगे रहते हैं। कुछ विद्यार्थी अध्ययन को इतनी गम्भीरता से नही लेते। बाजारो मे मिलने वाले गाइड्स आदि लेकर परीक्षा के लिए उपयोगी प्रश्नो के उत्तर तैयार करके अपनी डिग्री ले लेते है। तीसरे प्रकार के वे विद्यार्थी होते है जो केवल मनोरजन और दिखावे के लिए कालेज मे आते है और थोडी-सी तयारी करके डिग्री लेने की कोशिश करते है।

अक्सर यह देखा गया है कि अध्ययन को गम्भीरता से लेने वाले विद्यार्थी कालेज के दूसरे कार्यक्रमो मे भी भाग लेते रहते है। कुछ अमीर बच्चे दूसरे विद्यार्थियो का ध्यान आकर्षित करने के लिए पैसो को पानी की तरह बहा देते है। इनमे से कुछ बियर और शराब के आदी होते है। इनमे से ही कुछ विद्यार्थी गर्द और हेरोइन आदि भी लेते है। गर्द आदि लेने वाले विद्यार्थी सागर के किनारे पेडो के पास पडे हुए मिलते है। जीवन की विफलताओ या टूटते परिवारो की परेशानियो से ये बच्चे पूरी तरह से निराश हो जाते हैं और जब उन्हे लगता है कि अब जीना बेकार है तो गर्द आदि नशीली चीजो का सहारा लेते है। समाज भी इनकी उपेक्षा करता है। इस तरह बम्बई शहर के कालेजो के लगभग चार लाख विद्यार्थियो मे रोज दो-तीन जवान विद्यार्थी मौत के मुह मे चले जाते हैं। ऐसे विद्यार्थियो की लाश कभी-कभी सागर के किनारे या सडक के फुटपाथ पर पडी दिखाई देती है। विद्यार्थियो और प्रोफेसरो मे जो सामजस्य या सुसगति होनी चाहिए वह नही है। उदासीनता और अलगाव की भावना दिन-ब-दिन बढती जा रही है।

कालेज के लेक्चररो मे अधिकाश लेक्चरर लेक्चर देने का काम करके चले जाते हैं। कुछ सीनियर लेक्चरर अध्यापन के साथ-साथ कालेज के दूसरे कार्यो का उत्तरदायित्व भी निभाते हैं। कालेज के खेल, योग, भारतीय सगीत तथा नृत्य, नाटक, वाद-विवाद स्पर्धा, समाज-सेवा आदि बातो के लिए अलग-अलग सीनियर लेक्चरर है। अध्ययन के साथ-साथ अन्य मनोरजक बाते होने के कारण विद्यार्थियो मे जिन्दादिली की भावना मौजूद है।

कुछ सीनियर लेक्चरर अपनी जिम्मेदारियो से भी ज्यादा काम

करते ह। वे कालेज के सभी कार्य निजी कार्य समझकर पूरा करते ह। इनमे से वाइस-प्रिंसिपल प्रो० भारती विद्यार्थियो मे बहुत मशहूर ह। वे कालेज के होस्टल मे ही रहते है। वे विद्यार्थियो के बहुत ही करीब ह। वे कुछ खास समय उन विद्यार्थियो के लिए रखते हे जो किसी-न-किसी समस्या के साथ पीडित हैं। वे उनसे बाते करने, उन्हे समझाते और प्रोत्साहन देते है।

प्रो० भारती का सबसे प्रिय विद्यार्थी है मिलन। मिलन चदन पुर गाँव का आदिवासी लडका है। पढाई मे वह होशियार तो है ही लेकिन तरह-तरह के खेलो मे भी उसने अनेक पुरस्कार जीते है। वह भी होस्टल मे रहता है और हरदम हर काम म तत्पर है। मिलन के दोस्तो मे से रॉबर्ट कोलासो और कुशल सागर खास दोस्त ह। रॉबर्ट को सभी रॉबी कहकर पुकारते ह। कुशल अमीर खानदान का लडका है। उसके पिता अनेक कारखानो के मालिक ह। राबी के पिता इन्जीनियर थे और दुघटना मे गुज़र चुके थे। रॉबी गोवा का निवासी था। पिता की नौकरी के कारण वह बम्बई मे था। मा अब गोवा मे ही अपने पुराने मकान मे रहने लगी थी। राबी अकेला ही एक चाल मे रहता है। उसके साथ एक बूढा नौकर है। मिलन, रॉबी और कुशल—ये तीनो थर्ड इयर बी० काम० मे ह। पढाई खत्म होने के बाद तीनो तीन अलग-अलग दिशाओ मे जाने वाले है।

रामकृष्ण कालेज के प्रिंसिपल सिद्धात खोसला बहुत ही सख्त और अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। प्रो० भारती इकनामिक्स के प्रोफेसर थे। प्रिंसिपल खोसला का ऐसा लग रहा था कि मि० खोसला के बाद प्रो० भारती इस कालेज के प्रिंसिपल बन जायेंगे।

दुर्भाग्य से कुशल ब्राउन शुगर लेने लगा था और इससे उसकी पढाई पर असर हो रहा था। वह मिलन और रॉबी को छोडकर उन बदमाश विद्यार्थियो के साथ जाया करता था जिनसे उसे ब्राउन शुगर मिलता था। प्रो० भारती को लगा था कि कुशल एक होनहार विद्यार्थी होगा। कालेज मे कुशल को बहुत से विद्यार्थी जानते थे। अमीर होने के बावजूद वह परिश्रमी, सेवाभावी और नम्र स्वभाव का था। उसके दादा कैलाशनाथ सागर का कुशल पर

काफी अमर था। पिछले वर्ष ही उनका देहान्त हो चुका था। गरीबी से संघर्ष करके कैलाशनाथ ने अपने व्यावसायिक जीवन मे चार चाँद लगा दिए थे। उसूलो के साथ चलकर परिश्रम के सहारे उन्होने अपने व्यवसाय का काफी विस्तार कर दिया था। कुशल की बहिन स्नेहा भी अपने दादा से प्रभावित थी। स्नेहा बारहवी कक्षा मे थी। कुशल के पिता अपने व्यवसाय मे डूबे रहते थे। कुशल की माँ श्रीमती कचन सागर का अधिकाश समय क्लबो और पार्टियो मे बीत रहा था। इस सागर खानदान मे तनाव और अशाति का वातावरण था। मि० सागर और श्रीमती सागर मे हमेशा लडाई-झगडे होते थे। कुशल एक भावुक लडका था इसलिए उस पर इनके व्यवहार का असर होने लगा था। ब्राउन शुगर की लत पडने का कारण शायद माता-पिता द्वारा उसकी उपेक्षा की गई थी।

मिलन कुशल की इस आदत को रोकने की जी-जान से कोशिश कर रहा था। राँबी भी कुशल को समझा-समझा कर हार गया था, एक दो बार मिलन और कुशल का भारी झगडा भी हो गया था। मिलन ने कुशल के हाथो से ब्राउन शुगर छीनकर फेंक भी दिया था और कुशल ने मिलन को दो थप्पड भी लगाये थे। इसके बाद दो दिनो तक उनमे बातचीत ही नही हुई। अन्त मे कुशल ने मिलन से माफी माँगी। कुशल को इस बात का डर था कि यह बात प्रो० भारती को ज्ञात हो गई तो उसे कालेज से निकाल दिया जाएगा।

कालेज के आस-पास गर्द (ब्राउन शुगर) और अन्य नशीली चीजे बेची जा रही थी। एक दो छोटे-छोटे टी स्टाल्स थे। कुछ विद्यार्थी वहा चाय के बहाने जाते थे और गर्द खरीद कर ले जाते थे। वहाँ दो-चार पान की दुकाने भी थी। वहा भी गर्द बेची जा रही थी। कालेज से सागर की ओर जाने वाले रास्ते पर गर्द के नशे मे चूर कुछ विद्यार्थी पेडो के नीचे पडे रहते। गर्द का नशा करने के बाद कुशल किसी दोस्त के पास खडा रहता। धीरे-धीरे उसकी आँखे अन्दर धँसने लगी थी और शरीर मे कमजोरी भी आ गई थी। वह अब खेलो मे भी दिलचस्पी नही लेता था। मिलन ने प्रो० भारती से यह बात बताने की धमकी दी तो कुशल रो पडा। उसने

उसके पैर पकडे और कहने लगा, "मैं खुद इस नशाखोरी से बाहर आना चाहता हूँ लेकिन मजबूर हूँ। दोस्त मेरी मदद करो, नहीं तो मैं बरबाद हो जाऊँगा।" कुशल के इन शब्दो मे मिलन द्रवित हो गया था। कुशल को समझाकर वह रॉबी के घर उसे बार-बार ले जाता था।

मिलन बम्बई से करीब सौ कि० मी० दूर चन्दनपुर गाव मे रहता था। उसके पिताजी दयानन्द खेती का काम करते थे। वे पढना-लिखना जानते थे इसलिए गाँव के लोग उनका आदर करते थे। माँ का नाम जानकी था। वह बहुत ही धार्मिक थी और जबसे मिलन बम्बई गया था तब से वह हर रोज अपने बेटे के लिए पूजा-पाठ और प्रार्थना करती थी। चदनपुर गाँव मे लगभग तीन सौ छोटे-मोटे घर थे और इनम से बहुत घर झोपडीनुमा थे। गाँव के कोने मे शिवजी का मन्दिर था। पास मे ही एक छोटी नदी थी। यह छोटा-सा गाव दो पहाडो की गोद मे बसा हुआ आदिवासी लोगो का गाँव था। मिलन कुशल और राबी को अपने गाँव ले गया था। इन दोनो को मिलन का गाँव बहुत ही अच्छा लगा था। जानकी माई के हाथ की बाजरे की रोटी और आम का अचार खाकर वे दोनो तृप्त हो जाते और बाद मे आग्रह करके जानकी उन्हे एक-एक गिलास दूध पीने के लिए मजबूर कर देती। जानकी माई मे ममता कूट-कूट कर भरी थी। मिलन उन्हे अपने खेतो पर ले जाता और उन्हे हल चलाना सिखाता। वहा की शाम बहुत ही सुहावनी होती थी। पश्चिम मे डूबते सूरज की लाली आकाश मे फैल जाती और पूरा गाव इस लाल प्रकाश मे नहा उठता। गाव के रास्तो पर किसान और कुछ मजदूर दूर दूर से गाव को वापिस आते दिखाई देते थे। बम्बई मे गाव करीब होने के कारण छुट्टियो मे मिलन बार-बार अपनी मा जानकी से मिलने गाव आ जाता था। इस प्रकार मिलन कुशल और राबी इन तीनो की दोस्ती मशहूर थी। विद्यार्थी इन्हे ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहकर चिढाते थे।

सोमवार के दिन, सुबह होते ही रामकृष्ण कालेज के विद्यार्थियो, लेक्चररो और प्रिंसिपल ने जो खबर सुनी उससे कालेज के माहौल मे ही नही बल्कि पूरे बम्बई शहर म सनसनी फैल गई। सुबह

सुबह जब सूर्य की सुनहली किरणो से धरती माँ सज रही थी और चारो ओर के मन्द पवन मे पेड, पौधे और खुशबूदार फूल जागने लगे थे तथा चारो आर धरती पर शोरगुल और हलचल मचने लगी थी तब कालेज के कोने मे एक छोटे-से बगीचे मे एक नौजवान की लाश पडी थी। वह कालेज का सबसे अच्छा विद्यार्थी मिलन था। उसके शरीर के नीचे कुछ पौधे दब गये थे। सिर के पास के पौधो पर गुलाब के फूल खिले थे।

पुलिस कास्टेबल, दो इस्पेक्टर और एक सीनियर पु० इस्पेक्टर जयचद वहाँ मौजूद थे। होस्टल के विद्यार्थी, प्रोफेसस, लेक्चरर तथा कालेज के अन्य कर्मचारी भी वहा आ गये थे। कालेज के दूसरे विद्यार्थी भी आने लगे थे। पुलिस कास्टेबलो ने भीड को दूर कर दिया था। जहाँ लाश पडी थी वहाँ प्रिसिपल खोसला और वाइस प्रिसिपल भारती सीनियर इस्पेक्टर जयचद के साथ खडे थे।

जिस छोटे से बाग मे बैठकर वह अपने मित्रो के साथ तरह-तरह के विषयो पर बहस करता रहता था उसी जगह पर आज उसकी लाश पडी थी। इस आदिवासी बालक पर प्रकृति-माँ के खिले हुए गुलाब के फूल मानो इस शहीद के लिए श्रद्धा के फूल थे। मिलन ने अपनी जिन्दगी मे अनेक सपने सजाए थे। वह आज अपने अधूरे सपनो के साथ इस ससार को छोड चुका था।

वहाँ खडे हुए लोगो के चेहरो पर अनेक प्रश्न-चिह्न थे। इतने अच्छे और होशियार विद्यार्थी का खून किसने किया होगा ? क्या मिलन को इसी जगह पर मारा गया ? उस समय कालेज के वाचमैन कहा थे ? इसका खून करने मे कुछ बदमाश गुण्डो का हाथ तो नही है न ? या चदनपुर गाव के कुछ बदमाश आदिवासी लोगो ने किसी दुश्मनी की वजह से यहा आकर उसका खून किया होगा ?

इ० जयचद वहा उपस्थित प्रिसिपल, वाइस प्रिसिपल, प्रोफेसर एव विद्यार्थियो से तरह-तरह के सवाल पूछने जा रहे थे और दूसरे इस्पेक्टर यह सारी तहकीकात रजिस्टर मे दर्ज करते जा रहे थे। मिलन की खास जानकारी के लिए इ० जयचद ने कालेज के प्रिसिपल मि० खोसला से आग्रहपूर्वक अनुरोध किया तो उन्होने कहा— "सचमुच, हमारा यह दुर्भाग्य है कि हमने एक बहुत ही होशियार

और ध्येयवादी विद्यार्थी खो दिया। मिलन के विद्यार्थी-जीवन के इन तीन सालो मे मैने कभी किसी से कोई शिकायत उसके बारे मे नही सुनी। बी० काम० की परीक्षा के बाद इन गरमी की छुट्टियो मे यह लडका प्रो० भारती और हमारे कालेज के कुछ सीनियर विद्यार्थियो के साथ आदिवासी लोगो के गाँवो मे समाज-सेवा करने जाने वाला था। इस योजना का सूत्रधार यही था। हमारे इस कालेज का मिलन एक आदर्श विद्यार्थी था।'' उन्होने मिलन की याद मे उस दिन कालेज को छुट्टी दे दी। वैसे भी सीनियर विद्यार्थियो की पढाई के लिए छुट्टिया शुरू हो चुकी थी। प्रिंसिपल ने सभी विद्यार्थियो को वहाँ से जाने के लिए कहा।

अब तक यहाँ दो विद्यार्थी नही दिखाई दे रहे थे—कुशल और रावी। प्रो० भारती को इस बात का ताज्जुब हो रहा था कि इन दोनो मे से इस वक्त यहा कोई भी मौजूद न था। इ० जयचद ने कुछ विद्यार्थियो से यह जान लिया था कि शनिवार की शाम को मिलन और कुशल का कालेज कैंटीन मे झगडा हुआ था। कुशल ने मिलन को जोर का धक्का देकर गिरा दिया था और वह वहा से चला गया था। कुछ विद्यार्थियो द्वारा यह भी ज्ञात हो गया कि कुशल ब्राउन शुगर का नशा करता है और मिलन उसे उस बुरी लत से रोकने के लिए बार-बार उससे लडता रहता था। इ० जयचद ने ये सारी बाते नोट कर ली।

मिलन की लाश के पास आते ही इ० जयचद ने यहाँ से चदनपुर गाँव खबर दे दी थी। इसी वक्त लाश ले जाने के लिए वहा शववाहिनी आ पहुँची। और इस गाडी के साथ वहाँ रावी भी दौडता हुआ आ पहुँचा। पुलिस कान्स्टेबलो ने बगीचे के बाहर उसे रोकने की कोशिश की लेकिन इ० जयचद ने उसे भीतर छोडने के लिए कह दिया। आते ही उसने मिलन की लाश की ओर नजर दौडाई। उसके गमगीन चेहरे की आखो मे पानी भर गया। शब्द गले से अटक कर रह गये।

इ० जयचद ने रावी से सवाल पूछने शुरू किये। अनेक छोटे-छोटे प्रश्नो के उत्तर देने के बाद रावी ने कहा—''कल, मैने इसे और कुशल को अपने घर डिनर के लिए बुलाया था। कल रात भर म

इनका इन्तजार करता रहा।" बोलते-बोलते रॉबी की आखो से ऑसू बहने लगे। प्रो० भारती ने उसे शात किया। इ० जयचद ने पूछा—"तुम्हारा दोस्त कुशल कहाँ है? अब तक उसे भी यहाँ आ जाना चाहिए था।" रॉबी शात था। इ० जयचद ने दूसरा सवाल पूछा—"क्या कुशल ब्राउन शुगर और दूसरी नशीली चीजो का नशा करता है?" इस प्रश्न से रॉबी ने चिन्तित होकर प्रो० भारती और प्रिंसिपल खोसला की ओर देखा। उसने कहा—"हॉ, कभी-कभी। हमने कुशल को रोकने की बहुत कोशिश की थी।" प्रो० भारती ने कहा, "रॉबी, तुमने मुझे यह बात क्यो नही बताई? और न ही मिलन द्वारा मुझे यह बात मालूम हुई। कुशल की भयकर आदत के बारे मे बताते तो मैं उसे इस बुरे रास्ते से हटाने मे शायद कामयाब हो जाता।" रॉबी ने अपना सिर नीचे झुकाकर कहा—"मुझे माफ कर दीजिए सर, आइ एम ऐक्सट्रीमली सॉरी।"

और इसी समय एक खूबसूरत मोटरगाडी बगीचे की ओर आती दिखाई दी। कुशल के पिता मि० सागर इस गाडी से उतरे और भीड को चीरते हुए आगे बढे। वे मिलन की लाश की ओर कदम बढाते हुए प्रिंसिपल खोसला के पास आये। थोडी देर के लिए खामोशी छा गई। उन्होने मिलन की लाश देखी और उन्हे एक धक्का-सा लगा। गाडी रोक कर यहाँ तक आते समय भीड को देख कर उनके मन मे शका-कुशका पैदा हो गई थी। विद्यार्थियो की बाहर खडी भीड, पुलिस, लेक्चरर और प्रिंसिपल आदि लोगो को इस तरह खडे देखकर उन्होने किसी भयकर बात का अन्दाजा कर लिया था। प्रि० खोसला ने जयचद से परिचय कराया।

इ० जयचद ने पूछा—"आपका बेटा कुशल कहाँ है?"

मि० सागर बोले, "मैं यहाँ उसी के बारे मे प्रिंसिपल साहब से पूछने आया हूँ। वह पिछले तीन दिनो से घर मे नही आया है। हम उसे ढूढ रहे है। और अब मिलन की लाश देखकर मै अधिक चिंतित हो गया हूँ। मिलन को हम अच्छी तरह जानते है।"

इ० जयचद ने कहा—"ताज्जुब है, आपने अब तक पुलिस-स्टेशन मे इस बात की शिकायत नही की।" फिर रॉबी की ओर इशारा करके पूछा, "इस लडके ने मिलन को और आपके बेटे कुशल को कल

डिनर के लिए बुलाया था। यह जाहिर है कि कल तक मिलन और कुशल दोनो साथ-साथ होगे। और आज मिलन का खून हो चुका है और कुशल ? वह लापता है। मि० सागर हमे कुशल की खोज करनी होगी। और मने यह भी सुना है कि कुशल और मिलन का झगड़ा हुआ था। कुशल गर्द जैसी भयकर नशीली चीजो का शिकार हो चुका है।" थोडी देर तक मि० सागर अवाक रह गए। उनके चेहरे पर गहरी चिन्ता दिखाई देने लगी। रूमाल से उन्होने पसीना पोछा।

फिर मि० सागर बोले, "देखिए आप मेरे बेटे कुशल पर शक कर रहे है। शायद आपको पता नही होगा कि मिलन और कुशल मे गहरी दोस्ती थी। क्या कुशल अपने दोस्त का खून कर सकता है ? यह बात नामुमकिन है। मेरे बेटे को यहाँ सभी अच्छी तरह जानते है। आप गर्द की बात कर रहे है लेकिन मेरा बेटा ऐसा बुरा काम नही कर सकता। जरूर कुछ गलतफहमी हुई है।" इ० जयचद ने उन्हे बताया—"तहकीकात और पूरी जाच के बाद ही हम किसी नतीजे के बारे म सोच सकते। कुशल की खोज करना जरूरी है।" फिर रवी की ओर देखकर बाले, "तुम्ह अपने दोस्त की खोज मे हमारी मदद करनी होगी। हो सकता है कि वह किसी मुसीबत मे फस गया हो।" इस्पेक्टर जयचद ने अपने दो इस्पेक्टरो से बातचीत की। वे फौरन शववाहिनी की ओर गये। कुछ कास्टेबल स्ट्रेचर लेकर मिलन की लाश के पास आये। लाश को स्ट्रेचर पर रखा गया। स्ट्रेचर पर रखते समय पीठ की जख्म दिखाई दी। वहा की कमीज पूरी तरह फट चुकी थी। पीठ पर खून फैलकर सूख गया था। लाश को शववाहिनी मे रखा गया। इस शववाहिनी म प्रिंसिपल खोसला, वाइस प्रिंसिपल भारती और रवी इ० जयचद के साथ बैठ गए। जयचद ने मि० सागर से कहा—"मि० सागर हम बहुत जल्द आपके घर आयेंगे।" सुनकर मि० सागर के चेहरे पर डर और चिन्ता के भाव छा गये। और, शववाहिनी चली गई।

□□

प्रकरण दो

रात भर की लम्बी प्रतीक्षा के बाद दयानद को मगल के दिन सुबह बम्बई के जे० जे० अस्पताल से मिलन का मृत शरीर मिला। पोस्टमार्टम के मुताबिक मिलन का खून रविवार को मध्य रात्रि के समय किया गया था। दयानद और चदनपुर के दो आदमी मिलन का शव गाँव ले जाने की तैयारी मे थे। प्रो० भारती ने शववाहिनी का इन्तजाम किया था। मिलन की शव-यात्रा मे शामिल होने के लिए मिलन के अनेक मित्र, लेक्चरर, प्रो० भारती, प्रिंसिपल सिद्धात खोसला और रावी था।

राँवी ने उस दिन लगातार कुशल की तलाश की लेकिन वह निराश हो गया। उसके मन मे तरह-तरह के बुरे खयाल आने लगे थे। कही कुशल का भी खून नही हुआ हो ? उसे खोजने ड्रग्ज बेचने वालो के अड्डो पर भी वह गया लेकिन वहाँ से भी उसे कुशल का सुराग नही मिला था। अब रावी चुपचाप मिलन के पिता के साथ शववाहिनी मे बैठ गया था।

कुछ विद्यार्थी तथा अन्य लोग रेलगाडी मे चदनपुर रवाना हुए थे। और कुछ विद्यार्थियो ने अपने मित्रो की कारो मे बैठने की जगह प्राप्त की थी। कुछ विद्यार्थी मोटर-साइकिलो पर थे। करीब दस कारें और चौदह मोटर-साइकिलें थी। सभी शववाहिनी के साथ थी।

मिलन का शव स्ट्रेचर पर हिल रहा था। उसके मृत शरीर पर बहुत-सी फूल मालाएँ थी। जो विद्यार्थी मिलन की शव-यात्रा मे शामिल नही हो सके थे वे मिलन के शरीर को फलो के हार पहना कर चले गये थे। शववाहिनी मे रॉबी मिलन के स्ट्रेचर के साथ बैठा था। मिलन के हिलते शरीर को देखकर उसके तप्त मन मे अतीत के चित्र सरकते जा रहे थे। वहाँ बैठे हुए सभी लोग मौन हो गए थे। सभी के मन मे कुछ-न कुछ खलबली मची हुई थी। शायद सभी के मन मे जीवन की क्षणभगुरता के विचार आते होगे। सचमुच, मृत्यु कितनी भयानक होती है ! एक पल मे रिश्ते नातों के सारे धागे टूट जाते हैं। किसी के सुख का कोमल स्पर्श हमेशा के लिए खत्म हो जाता है।

शववाहिनी, मोटर-गाडियाँ और मोटर-साइकिल—सभी तेज गति से चदनपुर की ओर दौड रही थी। हमारा जीवन भी समय की गति पाकर इसी प्रकार दौडता रहता है और यही समय की गति एक दिन उसका साथ छोड देती है। तब ऐसा लगने लगता है कि ससार मे हर चीज का निर्माण नष्ट होने के लिए हुआ है। फूल खिलते है मुरझाने के लिए और मनुष्य जन्म लेता है मृत्यु की गोद मे सो जाने के लिए। रावी को अपने पिता की मृत्यु की याद आई। कितने सपने थे उनके ? सब टूट कर बिखर गए। उस समय रॉबी को यह महसूस हुआ था जिन्दगी का आखरी अजाम मौत ही तो है। अकड से चलने वाला रॉबी तब से शात हो गया था। उसे लग रहा था कि इस छोटी-सी जिन्दगी मे आदमी क्यो अहकारी बन जाता है ? क्यो लडाई-झगडे करता है ? और क्या दिखावा करता रहता हे ? यह सारी दुनिया मुसाफिरखाना ही तो हे। हम सभी मुसाफिर इस मुसाफिरखाने मे रुकते हे और अपनी यात्रा के लिए निकल जाते ह। लेकिन ऐसे विरक्ति के भाव थोडी देर तक ही रुकते है और मनुष्य सब-कुछ भूलकर फिर से अपने जीवन की बातो मे मग्न हो जाता है।

मिलन के साथ विताये दिनो की याद करके रावी दुखी हो रहा था। अनजाने मे ही उसकी आखो से आसू टपक रहे थे। वह सोच रहा था—कुशल को सुधारने के लिए मिलन ने कितनी कोशिश

थी। उसने शिवजी से प्रार्थना की थी कि उसका बेटा सुरक्षित वापस घर आ जाए लेकिन बेटे का मृत शरीर वापिस आ गया था।

इस छोटे से गाँव मे बिजली की तरह मिलन की मौत की खबर फैल गई। स्त्रियाँ, पुरुष, बच्चे और बूढे—सभी दयानद के घर की ओर आ धमके। स्त्रिया मिलन की याद मे आँसू बहा रही थी। छोटे बच्चे जिज्ञासा के भाव से यह सब देख रहे थे। कुछ औरत जानकी को उठाकर घर के अन्दर ले गयी, उन्होने उसे ज़मीन पर लिटाया। किसी ने प्याज को नाक के पास सूघने के लिए रखा। दो औरतें हाथो और पैरो को मलने लगी थी। दयानद ने जानकी को बेहोश होते देखा तो 'जानकी! जानकी!' पुकारने लगे। वे उसकी ओर दौडना चाहते थे। उन्हे एक बुजुर्ग ने रोक दिया। दयानद अपनी पत्नी को बेहोश देखकर अत्यन्त व्याकुल हो उठे लेकिन वे उसके पास न जा सके। उसके इस दारुण दुख का हल्का करने के लिए वे अपनी पत्नी जानकी को सात्वना देना चाहते थे।

जब बुजुर्गो ने शव-यात्रा की तैयारी शुरू की तो ऐसा लगा कि दुख की भी एक अपनी मर्यादा होती है। गाव के बुजुर्ग जनाज़ा बाँधने म लगे। शहर से आए हुए विद्यार्थी, लेक्चरर, प्रोफेसर भारती, प्रि० खोसला आदि एक ओर शात खड थे। उन्हे यह समझ मे नही आ रहा था कि वे किस प्रकार की मदद करे। मिलन के शरीर को गरम पानी से स्नान कराया गया। चन्दन और हल्दी की पाउडर लगाई गई। उसके शरीर पर सफेद कपड का कफन डाला गया। जनाज़े के चारो ओर फूलो की मालाएँ थी। जनाज़े के बीच म गुलाब के फूल बिखरे थे। मिलन के शरीर का उठाकर जनाज़े पर रखा गया। लोग फूलो की मालाएँ लेकर आगे आते और उसके शरीर को पहना कर हाथ जोडते और जाकर एक ओर खडे हो जाते। उसके सिर के पास अगरबत्तिया जल रही थी। गाव के ब्राह्मण-पुजारी वहाँ आकर गीता के श्लोक बोलने लगे। कोने म भजन-मण्डली ने आसन जमाया था। ढोलक और मजीरे के साथ वे भजन गाने लगे थे। कबीर के पद के शब्द वहाँ गूजने लगे थे—

दम तन धन की कौन बडाई ?

हाड जलै जैसे सूखी लकडी, बाल जलै जैसे घास की पूजी।

इस तन-धन की कौन बडाई ?

शव-यात्रा की इन अलग-अलग क्रियाओं के कारण आदमी अपना दुख भूलकर कर्त्तव्य मे जुट जाता है। शायद खामोशी मे दुख की गहराई बढती जाती है। होश मे आते ही जानकी रोने लगी। उसकी आँखों से निरन्तर आसुओ की धाराएँ बहने लगी थी। वह मिलन को देखना चाहती थी। कुछ औरतो के सहारे वह मिलन के मृत शरीर के पास आई। उसके काँपते हाथ अपने बेटे के चेहरे को प्यार से सहलाने लगे। मन्त्र उच्चारण करन वाले ब्राह्मण ने जनाजा उठाने के लिए कहा। जानकी सिसकिया ले रही थी और दयानद भी रोने लगे थे। जब कुछ स्त्रियो ने जानकी को एक ओर ले जाने के लिए ज़बरदस्ती की तब दयानद ने कहा—"उसे अपने बेटे को जी भरके देख लेने दो। हमारे बेट के ये आखरी दर्शन है।" लोगो ने जब अर्थी उठाई गई, गाँव के कुछ लोगो ने मिलन के शरीर पर फूल फेंके और शव-यात्रा का प्रारम्भ हो गया।

गाँव से कुछ दूरी पर मिलन के दाह-सस्कार का काय पूरा होने वाला था। गाव के सरपच शकरदास ने शरीर को चिता पर रखा और मिलन को सम्बोधित करके कहा—"यह हमारा भूमि-पुत्र था। हमे सुधारने आया था। हमारे पुराने रीति-रिवाजो को बदलने आया था। कितने सपनो के साथ इसने इस भूमि पर जन्म लिया था। इस छोटे से गाव मे वह पाठशाला बनाना चाहता था। लोगो के पक्के घर बनाना चाहता था। गाँव के टेढे मेढे रास्ता को चौडे करना चाहता था। यह सब काम वह प्यार से सबको साथ लेकर करना चाहता था। अपने आदिवासी भाइयो को महापुरुषो की कहानियाँ सुनाता था। क्या कहूँ और क्या न कहूँ।" बोलते-बोलते शकरदास की ज़बान लडखडाने लगी। वे स्वय सौ साल पूरे कर चुके थे। वे बोले—"यहा हम अपने भूमि-पुत्र की समाधि बनायेंगे। सौ साल की इन पुरानी हड्डियो मे शक्ति का सचार हो गया है। आओ, हम सब शपथ लेते हैं कि हम इस लाडले बेट

के सपनो को साकार करूँगा।" शंकरदास ने अपने हाथों में फूल लेकर मिलन के शरीर पर डाल दिए। वृद्ध के इस जोश को देखकर अनेक लोगों ने मिलन के शरीर पर फूल समर्पित किये। शहर के सभी लोग इन आदिवासी लोगों के प्रेम से गद्‌गद हो गये थे। प्रो० भारती ने भी वहाँ के लोगों से कहा—"मैं मिलन के इन सभी दोस्तों के साथ आपके गाँव में जरूर आऊँगा। मिलन के सपनों को साकार बनाने में हमारा भी साथ होगा।"

दाह-संस्कार का कार्य पूरा हो गया और धीरे-धीरे सभी श्मशान-भूमि से जाने लगे। दयानंद और सरपंच शंकरदास जाने वाले लोगों के सामने हाथ जोड़ कर आभार प्रदर्शित कर रहे थे।

सूर्य-देवता पश्चिम में ढल चुके थे। आकाश में लालिमा फैल गई थी। पेड़ों की छायाएँ लम्बी हो रही थीं। ऐसा लग रहा था कि चिता की लाल लपटें आकाश की लालिमा में घुलमिल जाना चाहती थीं। मंद मंद हवा के झोंकों में फिर से हरे-भरे खेत लहराने लग थे। अँधेरा प्रकाश को निगल रहा था। शहर के लोग गाँव छोड़कर कब के निकल गए थे। दयानंद, शंकरदास और गाँव के थोड़े से लोग श्मशान-भूमि में रुके हुए थे। चिता जलने के बाद अस्थियाँ को मंगल-कलश में रखकर वे दयानंद के घर की ओर मुड़े। अब तक चारों ओर रात का अँधेरा फैल चुका था। मिलन की इस अचानक मृत्यु के कारण सारा गाँव शोक के अँधेरे में डूब गया था। आकाश में कहीं-कहीं तारे टिमटिमा रहे थे और नीचे धरती पर चंदनपुर में बिजली की बत्तियाँ दूर से टिमटिमाती हुई नज़र आती थी। रात के अंधकार ने आकाश और धरती को एक कर दिया था। चारों ओर रात का सन्नाटा छा गया था।

रात का तीसरा प्रहर शुरू हो गया था और अब भी गाँव के कुछ लोग आँगन में दिखाई दे रहे थे। दयानंद ने उन सभी से बार-बार प्रार्थना की थी कि वे सब जाकर सो जायें। घर के भीतर एक छोटा दीपक टिमटिमा रहा था जो मिलन के कमरे में था। ज़मीन को गोलाकार में गोबर से पोतकर उसके बीच इस दीये को रखा गया था। वहीं जानकी दीवार से सटकर बैठी हुई थी। बड़ी हिम्मत से

उसने दूसरी स्त्रियो को जाकर सोने के लिए कहा। थोडी देर के बाद सभी स्त्रियाँ अपने-अपने घर गयी। जानकी उस कमरे मे अब अकेली थी। उसने दीये मे तेल डाला और वह बाहर आई। दयानद जाग रहे थे और बाकी आदमी वही सो गये थे। जानकी दयानद के पास आई और उसने कहा—"दो दिन के इस दौड-धूप मे आपके मुह मे अन्न का एक कण भी नही गया। आप थक कर चूर-चूर हो गये। जरा सो जायेगे तो थोडा आराम मिलेगा।" जानकी के मुह से इन कापते शब्दो को सुनकर दयानद की आँखो से आँसू बहने लगे। उसे लगा कि मेरी यह पत्नी किस मिट्टी की बनी है और कितना सहन करती है। मुझे इसे धीरज देना चाहिए लेकिन अपने भयकर दुख को दबाकर यह मेरा विचार कर रही है। दयानद ने कहा—"जाओ, पहले तुम सो जाओ तो मुझे नीद आएगी।" दोनो ने यह समझ लिया था कि उन्हे नीद आनेवाली नही है। फिर भी जानकी ने झूठ कहा कि वह थक गई है और उसे नीद आ रही है। वह कमरे के भीतर जा गई।

अब भी दीपक की ज्योति जल रही थी। सदूक पर मिलन के कपड पडे हुए थे। जानकी ने उन कपडो को वहाँ से उठा लिया और उन्हे अच्छी तरह से सजाकर अपने तकिये पर रखा। उसकी कुछ किताबो को साफ करके अलमारी मे बन्द कर दिया। दीपक की रोशनी बाहर न जाये इसलिए उसने दरवाजा बन्द कर लिया। पूरे कमरे को वह ठीक कर रही थी। उसी वक्त उसकी नजर एक दीवार की ओर गयी। वहाँ मिलन की तस्वीर टँगी हुई थी। वह कितनी देर तक उस तस्वीर को निहारती रही। आसू उसके गालो पर से धीरे-धीरे बहते जा रहे थे। उस तस्वीर को देखते देखते जानकी अतीत मे खो गई। उसी तस्वीर मे अतीत की अनेक रगीन तस्वीरे दिखाई देने लगी। मिलन हमेशा अपनी मा को छेडता रहता और कहता, 'तू तो बहुत भोली-भाली है, तुझे मै अग्रेजी पढाऊँगा और फैशनेबल कपड पहनाऊँगा।' इस वक्त भी इस बात की याद से जानकी के चेहरे पर एक हल्की मुस्कराहट आ गई। न जाने ऐसी कितनी ही यादो के चित्रो मे वह खो गई थी। नही वह

सो गई और अपने बेटे के कपडो को तकिये की तरह सिर के नीचे रख लिया था।

सुबह का आगमन हो गया था। दयानद ने उन आदमियो को जगाकर भेज दिया। उन्होने दरवाजा खोल दिया। जानकी दीपक के पास ही सो गई थी। उसके सिर के नीचे मिलन के कपडे थे। दयानद ने जानकी को ऐसी हालत मे देखा तो दुखी हो गए। उन्होने मिलन के कपडे धीरे से निकाल लिए और माथे के नीचे तकिया सरका दिया। वे उन कपडो को अलमारी मे रखना चाहते थे। जैसे ही वे अलमारी के पास पहुँचे तो उन कपडो से मुह ढक कर सिसकियाँ लेने लगे। अब तक जानकी जाग गई थी। वह उठी और अपने पति के पीछे आकर खडी हो गई। उसकी आँखे भी गीली थी। उसने अपने पति के हाथ से कपडे लिए और अलमारी मे रख दिए। जानकी ने कहा—"अब हम इस गाँव मे नही रहेगे। मै तो मिलन की याद मे यहाँ घुल-घुलकर मर जाऊँगी।" अपने आँसू पोछते हुए दयानद ने कहा—"पगली जैसी बाते करती हो। हम अपने बेटे को यहाँ अकेला छोडकर कही और जा सकते है ? है तुम मे हिम्मत ? यह मिलन का कमरा, मिलन का बगीचा, यहा रखी मिलन की सारी चीजे तुम्हे पुकार-पुकार कर वापिस बुला लेगी।" दयानद ने मिलन के एक गुलाब के पौधे की याद दिलाई। पता नही कैसे, जानकी मे अचानक एक ताकत-सी आ गई। उसने दयानद के मुह पर हाथ रख दिया और 'पानी लाइए' कहती हुई बाहर दौडकर गई। दयानद पानी लेकर बाहर आए। दोनो ने पौधे का पानी दिया आस-पास की मिट्टी को सँवारा। चारो ओर से पौधे को मिट्टी से ढक सा दिया। दयानद पानी डालते रहे। दोनो के हाथ कीचड से सने थे। जानकी ने दयानद की ओर देखा—"मै इस पौधे को मरने नही दूगी। यह मिलन का पौधा है।"

"इसे हम जिन्दा रखगे।" दोनो कितनी देर तक वही खडे रहे। थोडी देर के बाद वे वही बैठ गए। सूरज ऊपर चढ रहा था। फिर से लोग आँगन मे आने लगे थे। गाँव की कुछ औरते भी आ गयी। वहाँ के रिवाज के मुताबिक जानकी और दयानद को कुछ नही करना पडा। एक किसान ने जानवरो को दाना-पानी दे दिया और

आँगन मे विखरे सामान को ठीक लगा दिया। जानकी और दयानद ने स्नान कर लिया। वहाँ आई हुई औरते दाल और चावल ले आई थी। वडी मुश्किल से दोनो ने थोडा-सा खा लिया। थोडी देर के वाद फिर से दोनो ही रह गए। रह-रहकर उन्हे कुशल की याद आ रही थी। जानकी वहाँ कुशल को न देख दुखी और चकित हो गई थी। वह वार-वार अपने पति से पूछ रही थी। दयानद इतना ही कहते कि कुशल वम्वई म नही है। वह कुछ दिनो के लिए कही चला गया है। जानकी इस वात को मानने के लिए तैयार नही थी। उसके मन मे शका की भावना पैदा हो गई थी।

शहर मे तो ऐसी वात फैल गई थी कि कुशल ने मिलन का खून किया है। जानकी के कानो म ऐसी भनक पडी तो वह और भी दुखी हो जाएगी। जानकी कुशल को अपना दूसरा वेटा मानती थी। ऐसा दुख शायद वह वर्दाश्त नही कर सकेगी। दयानद तो उसे झूठी वातो से वहला रहे थे—"कुशल वम्वई आते ही अपने घर दौडकर आ जाएगा। उसे कितना दुख होगा। आएगा, कुशल जरूर आएगा, हम दोनो का देखने आएगा।" और जानकी इन्तजार करने की तैयारी दिखाती थी।

उस दिन शाम को शकरदास अपने हाथ म लाठी टेकते टेकते दयानद के घर आ पहुँचे। उनके साथ और भी कुछ लोग थे। उनके चेहरो पर क्रोध की भावना थी। दयानद को उनके ऐसे चेहरे देख कर ताज्जुब हो गया। उन्होने उन्हे विठा दिया। शकरदास ने कहा—"दया, यह कुशल कौन है ? वही लडका तो नही जो मिलन के साथ दो-चार वार आया था ? क्या उसने मिलन का खून किया है ? अखवार मे मिलन के खून के वारे मे पूरी जानकारी छपी है। और इस लडके पर शक किया गया है। ऐसी वाते सुनते ही जानकी का दिल काप उठा। उसके दिल ने कहा कि यह वात विल्कुल झूठ है। जव-जव कुशल यहाँ आया है उसने मिलन की देखभाल करने की कसम खायी है और मिलन ने भी कहा था कि वीमारी के समय कुशल ने उसकी कितनी सेवा की थी। नही, नही कुशल ऐसा नही हो सकता। जानकी अपने मन को वार-वार समझा रही थी। कुशल से मिलने की तीव्र इच्छा उसके मन म

पैदा हो गई। उसी समय दयानद गाव के लोगो को समझा रहे थे कि अखबार की खबर गलत है। कुशल स्वय ही मुसीबत मे फंसा हुआ है। वह बम्बई से कही दूर गया है। कालेज के प्रिंसिपल, वाइस प्रिंसिपल और दूसरे लोग भी कुशल को मिलन का खूनी नही मानते। दयानद ने समझाया कि वे स्वय फिर से बम्बई जाने वाले है और उस समय उन्हे असलियत का पता जरूर चल जाएगा। फिर भी यह सुनकर गाँव के लोगो की शका का समाधान नही हुआ।

दयानद जानकी को समझाने लगे कि कुशल भी मुसीबत म है। इस बात पर कोई विश्वास नही करना कि कुशल ने मिलन का खून किया है। जानकी शाति से अपने पति की मन स्थिति को पढ रही थी। सब कुछ सुनने के बाद जानकी ने भी यह बताया कि कुशल ऐसा काम नही कर सकता। दयानद की अतरात्मा भी यही कहने लगी थी कि कुशल ऐसा काम नही कर सकता। दोनो ने यह फैसला कर लिया कि वे कुशल को देखने बम्बई जायेगे। दयानद ने रावी का घर तो देख लिया था। उन दोनो ने यह विचार किया कि वे रावी के यहाँ रहेगे और कुशल को मिलकर आयेगे। वे दोना मिलन की मृत्यु-तिथि से तेरह दिना तक कही जाने वाले नही थे। उसके बाद ही वे गाव के लोगो से मिलना शुरू करने वाले थे। और वही समय बम्बई जाने के लिए भी उचित था। कुशल को वे बेटे के रूप म देखते थे। कुशल मिलन की कमी को तो दूर नही कर सकता था लेकिन उससे दो प्यार भरी बाते सुनने के बाद इन दोनो को कुछ सतोष जरूर मिलता। कुशल को जानकी से जो मा का प्यार मिला था वह उसको अपनी माँ से नही मिला था। कुशल की जानकी माई की पुकार मे बहुत प्यार छिपा था। दयानद भी कुशल के पिता की तरह उसे डाँटते नही थे। कुशल को यहा आकर एक सकून मिलता था। शहर से आते समय वह इन दोनो के लिए कुछ-न-कुछ खरीद लाता था। वे इस प्यार को कैसे भुला सकते थे। उन्हे कुशल के दिल म मिलन की धडकनें सुनायी देती थी। उन्होने कुशल को मिलने का निश्चय किया था।

प्रकरण तीन

कुशल का पता अब तक नही चला था। मिलन की मृत्यु के बाद सागर परिवार मे चिन्ता और तनाव का वातावरण बना रहा। इ० जयचद ने कुशल की जानकारी प्राप्त कर ली थी। कालेज मे सागर परिवार के यहाँ और उसके दोस्तो के घर कुशल के बारे मे पूछताछ शुरू हो गई। जानकारी के मुताबिक कुशल जब गद का नशा करता, तो वह सभी लोगो से दूर किसी दोस्त के घर या किसी होटल म पडा रहता था। इ० जयचद ने रावी की मदद से नशीली चीज बेचने वालो के सभी अड्डे छान डाले थे। धीरे-धीरे उनके मन मे शका के बादल छा गए थे कि मिलन की तरह कुशल का भी खून न हो गया हो। कालेज के विद्यार्थियो म कुशल की बात हो रही थी।

एक दिन रात के दस बजे इ० जयचद रावी के घर आये। रावी इस वक्त अपने पुराने नौकर के साथ खाना खा रहा था। जब इ० जयचद ने राँवी को साथ देने के लिए कहा तो राँवी खाना छोडकर उठ गया। इस्पेक्टर ने रावी को इसलिए बुलाया था ताकि वह कुशल को खोजने मे उनकी मदद कर सके। वे दोनो जीप गाडी मे बठकर रास्तो पर और यहा-वहा के नुक्कड के अड्डा पर कुशल की खोज करते रहे। इसके पहले दिन ही किसी एक चरसी विद्यार्थी ने यह बताया था कि कुशल को उसने बोरिवली के नेशनल पाक म

पेड के नीचे पड़ा देखा था। अचानक इस बात की याद आने से रॉबी खुश हुआ और उसने इंस्पेक्टर से कहा कि यदि जीप बोरिवली तक जा सके तो बेहतर होगा। इं० जयचंद ने पूछताछ की तो पता चला कि इस नेशनल पार्क के आस-पास के झोपड़ों में ये नशीली चीज़ें मिलती हैं। कुछ बच्चे इन चीजों को खरीदकर वहीं दो दो चार-चार दिनों तक पड़े रहते थे। उन झोपड़ों में रहने वाले इन बच्चों से पैसे लेते थे। कहीं-कहीं बोरिवली के जंगल में झोपड़ियाँ बनाकर पैसों के लिए इन बच्चों की ओर खास ध्यान दिया जाता था। इन बच्चों को मालूम था कि पुलिस-अधिकारी इतने दूर नहीं आ सकते थे। इं० जयचंद ने रॉबी की सलाह मान ली और जीप गाड़ी बोरिवली की ओर तेज रफ्तार में दौड़ने लगी। बम्बई से करीब पैंतीस किमी० दूर बोरिवली बम्बई की लोकल गाड़ियों का एक जंकशन स्टेशन है और दिल्ली, अहमदाबाद, बरोदा और सूरत आदि शहरों से दिन-रात यहां गाड़ियां आती रहती हैं। इस स्टेशन पर तस्करी की काफी चीजें पकड़ी जाती हैं। दो तीन बार तो गांजा और हेरोइन आदि भी पकड़ी गई थी। इन सब बातों की वजह से इं० जयचंद ने रॉबी के साथ बोरिवली की ओर अपनी जीप ले ली थी।

उन्होंने नेशनल पार्क के पास जीप रोक दी थी। दूर से किसी झोपड़ी में कुछ-कुछ रोशनी दिखाई दे रही थी और कोई एक अंग्रेजी गाना बज रहा था। झोपड़ी में अंग्रेजी गीत ? इं० जयचंद ने अपने हाथ में टार्च लिया और जीप को ड्राइवर के साथ छोड़कर धीरे-धीरे उस रोशनी की ओर चलने लगे। उस झोपड़ी के करीब आकर एक पेड़ की आड़ में वे दोनों खड़े रहे। तीन-चार हिप्पी नाच रहे थे और दो नौजवान अपने सिर नीचे किये हुए बैठे थे। इतने में रॉबी चिल्लाया—"कुशल ! सर, यही कुशल है। इं० जयचंद ने उसे शांत किया और अपनी जेब से पिस्तौल निकाली। उन्होंने रॉबी से कह दिया कि वह जाकर कुशल को मजबूती से पकड़ ले और वे पिस्तौल दिखाकर उन सबको जीप में बैठने के लिए मजबूर कर देंगे। गोली चलाते समय किसी ने टार्च की रोशनी देख ली। उसने थोड़ी देर तक उसी दिशा में ध्यान दिया और वहां से टार्च जलाया। रोशनी

इ० जयचद पर गिरी। वह हिप्पी डर से चिल्लाया—"भागो, पुलिस !" नाचनेवालो ने अपने हाथ जो भी सामान आया उसे ले लिया और भाग खडे हुए। कुशल और दूसरा साथी दोनो उठकर भागने वाले थे कि इ० जयचद और राँवी ने दोनो को पकड लिया।

कुशल ने राँवी को जोर मे धक्का मारकर गिरा दिया। उसने दौडना चाहा लेकिन राँवी ने उठकर उसे कसकर पकड लिया। जीप के ड्राइवर को ऐसा लगा कि वहाँ कुछ झगडा हो रहा है। जीप को लेकर ड्राइवर वहाँ आ पहुँचा। कुशल चिल्ला रहा था—"छोडो मुझे ! मैं किसी को पहचानता नही हूँ। मुझे आप पकड नही सकते। मैं आजाद हूँ। अब दुनिया की कोई ताकत मुझे पकड नही सकती ! मै आजाद हूँ।" न जाने वह क्या-क्या बक रहा था। वह गद के नशे मे चूर था और चलन म असमथ था। दूसरे साथी ने नशा किया था। इस्पेक्टर अपनी हथकडिया कुशल को पहना रहा था और राँवी न कुशल को पकड रखा था। इस मौके का फायदा उठाकर वह दूसरा साथी जोर से भाग निकला। रांवी पीछा करना चाहता था लेकिन इ० जयचद ने मना कर दिया। इस तरह कुशल का दूसरा साथी उन हिप्पियो की तरह गायब हो गया।

कुशल जीप गाडी मे बैठने से इन्कार कर रहा था। दोनो न उसे उठाकर जीप मे रखा तो कुशल ने ज़ोर-ज़ोर से हाथ-पैर हिलाने शुरू किए। इ० जयचद ने कुशल को एक ज़ोर का तमाचा लगा दिया। लाचार होकर कुशल ने गुस्से से राँवी की ओर देखा। जीप गाडी चल पडी। इस वक्त रात के करीब दो बज चुके थे। जीप तेज़ रफ्तार से जुहू की ओर दौडने लगी और करीब आधे घटे के भीतर वह सागर परिवार के बगले पर आ धमकी। कुशल करीब-करीब बेहोशी की हालत म था। मि० सागर अब तक जाग रहे थे। जीप की रोशनी से भयभीत होकर वे बाहर आये। जब जीप म कुशल को ऐसी हालत म देखा तो वे बहुत दु खी हो गए। उन्होने अपने नौकरो को जगाया। वे सभी जीप के पास आ गये। वे सभी कुशल को अपने हाथो पर उठाकर एक कमरे के भीतर ले गए। मि० सागर ने फौरन अपने दोस्त डा० रोहित को फोन कर दिया। इस हलचल के कारण

मिसेज सागर भी जग गयी थी। अपने बेटे कुशल की दयनीय स्थिति पर रो पडी।

इस गर्द ने कुशल के जिस्म का बिल्कुल ही दुबल कर दिया था। आँखे अन्दर धँस गई थी और चेहरे की रौनक चली गई थी। शरीर पर छोटी-छोटी फुंसियाँ हो गई थी। शरीर के कपडो से दुर्गन्ध आ रही थी। फौरन कपडे बदले गए। यूडिकोलन और गरम पानी से शरीर को साफ किया गया। पूरे शरीर को सुगन्धित पाउडर लगाया गया। मुह से बार-बार लार टपक रही थी। श्रीमती सागर उसका मुह साफ करती जा रही थी।

रॉबी भी नौकरो की मदद कर रहा था। उसी समय इस्पेक्टर जयचद ने अपने पुलिस-स्टेशन पर फान किया और कुशल के मिलने की खबर दी। पुलिस स्टेशन से कुशल के विरुद्ध उन्हे बहुत सी बातें सुनने को मिली। कुशल गर्द आदि चीजे खरीदने के लिए गर्द बेचने वालो के अड्डो पर भी जाया करता था। इस्पेक्टर ने फान रख दिया और रावी को बुलाया। रॉबी ने बताया कि एक बार दो ड्रग्ज बेचनेवालो ने मिलन को धमकाया था। हाथापाई की नौबत आ गई थी पर रावी ने ही मिलन को शात किया था। मिलन ने इनके बुरे धन्धो के बारे मे पुलिस मे खबर देने की चेतावनी दी थी और ऐसी धमकी सुनकर वे मुस्कराए थे। रावी इन दोनो को पहचान सकता था। सबूत के बिना कोई भी मुकदमा नही चल सकता। इ० जयचद अब दुविधा म थे क्योकि क्रोध मे आकर कुशल मिलन का खून कर सकता था। नशीली चीजो के लिए कभी कभी पैसे नही मिलते तो इन चीजो का नशा करने वाले चोरियाँ करते है और कभी-कभी तो मारपीट करके भी पैसे ले जाते है। मिलन बार बार कुशल का विरोध करता रहा। तो ऐसी हालत मे कुशल के हाथो से गलती हो सकती थी।

कुशल के दो अपराध थे। एक तो वह गर्द, हेराइन, आदि नशीली चीजे ले रहा था। कानून की निगाह म यह अपराध था। मिलन का खून यह जो दूसरा अपराध था, सिद्ध होना बाकी था। कुशल की सेहत बिल्कुल बिगड गई थी। सभी डा० रोहित के इन्तजार म थे। करीब आधे घण्टे के बाद डा० रोहित आ गए।

वे कुशल को जाँचने के लिए कमरे म आगे बढे ये कि वह जाग गया, वह पेट पकडकर बैठ गया और हाथ-पाँव हिलाने लगा। डाक्टर ने उसे सुलाने की कोशिश की लेकिन वह चिल्लाने लगा। वह गर्द माँग रहा था। मुझे दो। मुझे दो!! —लगातार वह चिल्लाने लगा। डा० रोहित इजेक्शन देना चाहते ये लेकिन कुशल अपने हाथ-पैर पटक रहा था और डा० रोहित को वहाँ से जाने के लिए कह रहा था। डा० रोहित ने राँवी की मदद से उस पकड रखा या और बाद मे पथीड्रीन इजेक्शन दे दिया। इस इजेक्शन से कुशल शात हो गया और बहुत जल्द व सो गया।

डाक्टर रोहित बाहर आए। कुशल की इस हालत को देखकर वे बहुत ही परेशान हो गए ये। एक बार कुशल को देखकर उन्ह सन्देह हो गया था, लेकिन कुशल की बाते सुनकर वह सन्देह दूर हो गया था। वे सोचने लगे थ कि कुशल की ऐसी हालत के लिए कौन जिम्मेदार होगे। डा० रोहित मि० सागर के अच्छे दोस्त ये क्योकि बहुत पहले से वे दोनो एक-दूसरे को जानते ये। वे हमेशा किसी भी महत्त्वपूर्ण काम मे एक-दूसरे की सलाह जरूर लेते ये। डा० रोहित जानते ये कि मि० सागर बहुत ही परिश्रमी एव जिद्दी स्वभाव के इन्सान ये। इसी कारण उनके अपने व्यवसाय में खूब तरक्की हो गई थी। श्रीमती सागर के पास वक्त नही था क्योकि वे अपनी सहेलियो के साथ शानदार दावत खाने मे तथा क्लबो मे जाकर ताश खेलने और गप्पे हाकने मे ही सारा समय आराम से गुजार रही थी। सागर परिवार के पति-पत्नी मे हमेशा जोरदार बहस होती रहती। दोनो मे अहकार की भावना होने के कारण समझौते का प्रश्न ही नही उठता। यही वजह थी कि प्यार और मदद का अभाव था। सभी भौतिक सुख मौजूद ये लेकिन ममता की कमी थी।

ये दोना पति-पत्नी अपने अहकार का और आडम्बर को जिन्दगी से निकाल नही पा रहे ये। स्नेहा अपने पिता से बेटी की तरह बात करने को तरसती रहती थी और कुशल अपनी माँ के कोमल हाथो के प्यार भरे स्पश को चाहता था। ये दोनो माता-पिता जिन्दगी के रास्ते से भटक गए थे। वास्तव मे देखा जाये तो ये दो मासूम जिन्दगिया इन माता-पिता के झगडो के कारण अपनी-अपनी राह

अलग वनाने लगी थी। राकेश अपने वच्चो को पैसे देकर यह समझते कि उनकी अपनी जिम्मेदारी पूरी हो गई।

मि० सागर और मिसेज सागर ने डाक्टर रोहित से इस वात को छिपाकर रखने का अनुराध किया तो डा० रोहित क्रोधित हो गए। उन्होंने वताया कि इन नशीली चीजो का असर भी भयकर होता है। कुशल नीद से जब जाग जाएगा तो उसके वदन म मोच आएगी। पसीने म वह भीग जाएगा। वह चीखेगा और चिल्लाएगा। उन्हे कुशल के इलाज की चिन्ता करनी चाहिए। अपनी आन और इज्जत वचाने के लिए इस असली वात को वे कव तक छिपाने वाले थे। डा० रोहित ने कहा—"मैं चाहता हूँ कि इसे म अपने ड्रग्ज रिहविलिटेशन सेटर मे ले जाऊँ। इसके शरीर से इन जहरीली और नशीली चीजो का असर निकालने के लिए वक्त लगेगा। और कभी यह मत सोचिए कि दूसरे लोग क्या कहेगे ?"

मि० सागर वोले—"डा० रोहित आपकी वात विल्कुल ठीक है लेकिन लोगो को पता चलने से हमारी वदनामी होगी और हमारे वेटे का भविष्य विगड जाएगा। हमारे सम्वन्धी और मित्र कुशल को लेकर चर्चा करते रहगे।"

कुशल की माँ कचन भी इस वात को छिपा रखने के लिए अनुरोध करने लगी तो डा० रोहित दु खी हो गए और उन्हे समझाने लगे—"कुशल के शरीर को अब इन नशीली चीजो की इतनी आदत हो गई है कि वह उनके विना वहुत तडपेगा। उसके शरीर स इन जहरीली चीजो के असर को निकालने की सख्त जरूरत है, नहीं तो उसकी हालत विना जल की मछली जैसी होगी।

कचन आगे कुछ न वोल सकी। उनकी आखो मे आसू आ गए। उसी समय इ० जयचद वहा आ गए और उन्होने उन्हे समझाया कि वे कुशल को सरकारी अस्पताल ले जायगे, वही उसका इलाज होगा।

मि० सागर वोले—"आप क्या वात कर रहे ह ? मेरा वेटा और सरकारी अस्पताल म ? इस्पेक्टर जयचद, आप इस वात का

अच्छी तरह याद रखिए कि म उसे इलाज के लिए विलायत भी ले जा सकता हूँ।"

इ० जयचद ने जवाब दिया, "देखिए, कुशल पर मिलन के खून का शक है और हमे बहुत-से ऐसे सबूत भी प्राप्त हुए है।"

कचन ने जाश मे आकर कहा—"मेरा बेटा ऐसा काम नही कर सकता! यह सब झूठ है।"

इ० जयचद बोले—"काश! यह बात झूठी होती। मि० सागर और मिसेज सागर मुझे माफ कीजिए। डाक्टर रोहित जी आप मुझे कुशल के इलाज के बारे म एक स्टेटमेन्ट दीजिए। अब कुशल का इलाज हम सरकारी अस्पताल मे ही करेगे। अभी हमारे साथी इस्पेक्टर डिसोजा रोगी-वाहन लेकर आ रहे ह। सो, कुशल इज अण्टर अरेस्ट।"

कुशल के मिलन की उनकी खुशी गायब हो गई। डाक्टर रोहित इन्स्पेक्टर जयचद को स्टेटमेन्ट देकर चले गए। अब तक स्नेहा भी जाग गई थी। कुशल को देखकर खुशी तो हुई लेकिन कुछ पला के लिए। घर मे सभी नौकर भी दु खी थे। इन्जेक्शन के असर के कारण कुशल पूरी नीद म था। अब तक की जो बात वहा हुई थी उनकी जानकारी उसे बिलकुल नही थी। मिस्टर सागर कुशल को घर पर ही रखना चाहते थे और वहा चाहे तो पुलिस का पहरा रखने की बात भी उन्होने बताई। इस्पेक्टर जयचद इस बात के लिए तैयार नही थे क्याकि उन्हे लग रहा था कि कुशल का अपराध सगीन था।

स्नेहा पर इस माहौल का बुरा असर हो रहा था और वह अपनी पढाई ठीक तरह से नही कर रही थी। कालेज मे कुशल को लेकर जो बात होती थी उनसे वह परेशान और दु खी हो जाती थी। उसकी सहेलियाँ भी कुशल के बारे मे पूछती तो वह क्रोधित हो जाती थी। आज कुशल को गिरफ्तार किया जा रहा है। वह कालेज मे किसी को अपना मुह नही दिखा सकेगी। माँ-बाप की लडाइयो का उस पर असर था लेकिन वह मन से मजबूत थी। वह पढाई के साथ-साथ कुछ-न-कुछ समाज-कार्य करके अपनी खुशी प्राप्त कर लेती थी। इसी कारण मा-बाप के प्यार का अभाव उसे इतना

खलता नही था। स्नेहा पर दादा के उसूलो का बहुत प्रभाव था। उनके दादा का कहना था कि मन का सकल्प हो, तो सारी कम जोरिया भाग खडी होती है और वह इन्सान अपने सुनहले भविष्य का मालिक बन जाता है। स्नेहा मे समझदारी और समझौते की भावनाएँ प्रबल थी। वह भी कुशल की तरह बहुत ही भावुक थी लेकिन हर कार्य का हाथ लगाने से पहले सोच लेती थी। उसका भाई कुशल भी पहले कितना अच्छा था! कितना होशियार! उसने तो स्नेहा से भी ज्यादा सोशल कार्य किया है। इसी माल कुशल इन नशीली चीजो का शिकार बनकर कमजोर हो गया। स्नेहा जानती थी कि कुशल अपने मां-बाप की वजह से बहुत ही तनाव और चिंता महसूस करता जा रहा था। यह एक मानसिक रोग था। शरीर के रोग दवाइयो से और अच्छे माहौल से मिट जाते है लेकिन मन के रोग के लिए प्यार, समझदारी, सहायता और सहानुभूति की जरूरत होती है। सहानुभूति ऐसी, जो अपने कार्यों म प्रकट हो।

सागर परिवार के सभी लोग बेबस होकर खडे थे। मि० सागर को ऐसा लगा कि उनकी बहुत बडी हार हो गई है। फिर भी परिवार के प्रमुख व्यक्ति के नाते उन्होने सभी को हिम्मत दी और बताया कि कुशल बहुत जल्द अस्पताल से घर वापस आ जाएगा। उन्होंने मिसेज सागर के आँसू पोछ दिए और स्नेहा के माथे पर प्यार से अपना हाथ रखा। मि० सागर की इन बातो से सभी को अच्छा लगा लेकिन मायूसी कम न हुई। कुशल को ले जाते समय इ० जयचद भी दु खी हुए थे लेकिन कानून से उनके हाथ बँधे हुए थे। उन्होंने मि० सागर को समझाया—"मिलन के खूनी के बारे मे हम पूरी जाच करेंगे लेकिन खूनी कुशल ही होगा तो यह आपका दुर्भाग्य होगा। सच्चाई को सामने लाने की मैं जी-जान से कोशिश करूँगा और इतनी बात जरूर याद रखिए कि कुशल निर्दोष छूट गया तो सबसे ज्यादा खुशी मुझे होगी।"

उसी समय रोगी-वाहन वहाँ से सरकारी अस्पताल तक पहुँचा।

प्रकरण चार

मि० सागर ने फौरन वकील की सलाह ली और कुशल को छुडाने के लिए उन सभी बातों की सम्भावना पर बातचीत की जिनके सहारे क्या-क्या किया जा सकता है। वकील ने यह कहा कि कुशल के एक ड्रग-अडिक्ट होने की वजह से मुकदमा जरा कमजोर हो गया है। मि० सागर अब तक रिश्वत आदि देकर छोटे-छोटे काम आसानी से करवा लेते थे। पहली बार उन्हे यह अहसास हुआ कि पैसा यहा कुछ नही कर सकता। वे शात होकर अपने दोस्तो और रिश्तेदारो की राय लेने लगे थे। बाद मे वे कालेज के प्रिंसिपल सिद्धात खोसला और वाइस प्रिंसिपल भारती से भी मिले। कालेज मे कुशल को काफी सम्मान प्राप्त था क्योकि कुशल ने कालेज मे बहुत से अच्छे-अच्छे काम किए थे और वह पढाई मे भी एक होशियार विद्यार्थी था। रामकृष्ण कालेज के बहुत-से विद्यार्थी भी कुशल को बहुत चाहते थे और व कुशल को निर्दोष मानते थे। इन बच्चो को मिलन और कुशल की दोस्ती देखकर ताज्जुब होता था। कालेज मे जाकर मि० सागर को अपने बेटे की अच्छी बाते सुनकर कुछ कुछ मानसिक शाति मिल रही थी।

कालज के जनरल नोटिस-बोर्ड पर मिलन का फोटो लगा हुआ था और प्रिंसिपल तथा वाइस प्रिंसिपल ने मिलन के बारे मे अच्छे लेख लिखे थे, जो फोटो के बगल मे थे। दाहिनी ओर कुशल के बारे

म लिखा गया था और यह बताया गया था कि वह कितना होशियार था और अपने कालेज के लिए कितनी बाते उसने की थी, लेकिन ब्राउन-शुगर (गद) ने उसे मानसिक रूप से कितना कमजोर बना दिया था! ब्राउन-शुगर, हेराइन, चरस और *अन्य नशीली* चीजो से हमारे 'युवको' का किस तरह नुकसान होता है, आदि बातो का उल्लेख वहाँ था। स्टूडेण्टस सेक्रेटरी ने लिखा था—"कालेज मे कोई भी इन नशीली और ज़हरीली चीजो को अपने पास रखता हो तो फौरन प्रिंसिपल या वाइस प्रिंसिपल को खबर दी जाय। यदि किसी विद्यार्थी को कालेज के आसपास कोई भी ड्रग बेचनेवाला मिले तो कुछ विद्यार्थियो की मदद से उसे पकड कर वह प्रिंसिपल के पास ले आए।' कालेज मे आकर मि० सागर ने यह जनरल नोटिस बाड देखा और उस पर लिखी हुई बाते भी पढी। कालेज के इस माहौल म आकर मि० सागर को पश्चात्ताप हुआ। अगर उन्होने कुशल के जीवन म दिलचस्पी ली होती तो उसकी तरक्की मे चार चाद लग जाते। वे केवल पैसे देकर अपनी ज़िम्मेदारी पूरी हो गई, ऐसा समझते थे। उन्हे अपनी पत्नी पर क्रोध आया। यदि वह कुशल के कामो की सराहना करती और उसकी ओर थोडा-सा भी ध्यान देती तो कुशल की राह बदल जाती। ऐसा सोचते समय उन्होने अपने आपको ही अधिक दोषी पाया। दिन-रात व्यवसाय बढाने के चक्कर मे वे अपने परिवार को भूल से गए थे। उन्होने अपने मन मे निश्चय कर लिया कि वे अब अपने परिवार की ओर अधिक ध्यान देगे।

कुशल का सरकारी अस्पताल म एक अलग कमरे मे रखा गया था और बाहर दो पुलिसवालो का पहरा था। सरकारी डाक्टरो न जाच की थी और डा० रोहित न भी वहाँ आकर डाक्टरो को कुशल क बारे मे समझाया था। वहा कुशल पर इलाज शुरू हो गया था। पहले दिन तो माता-पिता और डा० रोहित के अलावा और किसी को अन्दर जान की इजाज़त नही मिली। कुशल को कोल्डटर्की का दौरा पडा था, इसलिए वह ज़ोर-ज़ोर मे चिल्ला रहा था। उसके पेट मे और सिर मे काफी दर्द शुरू हो गया था। पूरा बदन पसीने स तर हो गया था और बार-बार उल्टी करन की इच्छा हो रही थी। पैर अकडन लग थे, इसलिए वह बिस्तर पर तडपने लगा था।

डाक्टरो न उसके हाथ-पैर पकडे और एक इन्जेक्शन दिया दे जिससे कुशल का शरीर शिथिल हो गया और उसका तडपना कम हो गया। कुछ ही देर म ऐसा लगा कि वह सो गया है। कुशल के सारे लक्षण कोल्डटर्की के थे। ड्रग्ज लेकर नशा करने वाले के सारे शरीर मे इन नशीली चीजो का असर बढता जाता है। उसके शरीर की पूरी क्रिया ही बदल जाती है। अगर बाद मे उसने गर्द का नशा नही किया तो वह कोल्डटर्की का शिकार हो जाता है। इसे हम एक प्रकार का रोग कह सकते है जिससे सारा जिस्म पीडित हो जाता है।

दवाइयो से धीरे-धीरे कुशल की सेहत मे सुधार दिखाई देने लगा। वह अब आनेवाले डाक्टरो और मुलाकातियो से अच्छी तरह बात करने के काबिल हो गया था। अब उसे मिलने के लिए कालेज के विद्यार्थी, प्रो० भारती, राबी आदि लोग आने लग थे। धीरे-धीरे कुशल अपनी वास्तविक हालत की ओर अपने कदम बढाने लगा था। रह-रहकर उसे मिलन की याद आती थी और उसकी आँखे आँसुओ से भर जाती। राबी और प्रो० भारती से उसन कह दिया था कि मिलन का खून उसने नही किया। उसका खून करन वाले ड्रग-पेडलस है।

ड्रग-पेडलस यानी गर्द, हरॉइन, गाँजा, चरस आदि नशीली चीजे बेचन वाले लाग। इन चीजो को बेचकर ये ड्रग-पेडलस हजारो रुपए कमाते थे और इनके हाथ इन चीजो को देने वाले लाखो रुपये कमा लेते थे। यदि ऐसी बाते पुलिस अधिकारियो को ज्ञात हो जाती है तो इनके लिए यह खतरा साबित होता था। नशीली चीजो लानेवाले और इन्हे बेचनेवाले और खरीदनेवाले—इन सबका आपस मे एक तालमेल सा था। एक आदमी के पकड जाने से अनेक आदमी पकड जा सकते थे और इस व्यवसाय मे खतरा पैदा हो सकता था। इसी कारण नशीली चीजे खरीदनेवालो को वे अपने अड्डे नही दिखाते। ढाबो मे, पान-बीडी की दुकानो मे या किसी निश्चित किए नुक्कड पर इन जहरीली चीजो का व्यापार चलता था। पुलिस अधिकारियो म कुछ रिश्वत आदि लेने वाले अधिकारी इतना ध्यान नही देते थे क्योकि इन्ही लोगो से इनकी कमाई मे बरकत थी।

मिलन ने कुशल को ड्रग्ज देने वाले लोगो को धमकाया था कि

वे ड्रग्ज बेचना छोड दे नही तो वह पुलिस अधिकारियों को बताकर उन्हे पकडवा देगा। कुशल ने ड्रग्ज खरीदते समय मिलन का हमेशा टालने की कोशिश की थी लेकिन मिलन कुशल को इस तबाही के रास्ते से बचाना चाहता था। उसने एक ड्रग्ज बेचनेवाले का दो थप्पड भी लगाए थे और दोबारा न आने की कसम खाने पर उसे छोड दिया था। कुशल ने मिलन को बार-बार समझाया था कि ये बहुत ही खतरनाक लोग है और इनसे टक्कर लेना खतरे से खाली नही। मिलन ने कुशल की इन बातो की जरा भी परवाह नही की थी।

प्रो० भारती, डा० रोहित और रावी मिलन के खूनी के बारे म जानने के लिए बहुत ही उत्सुक थे। कुशल ने यह बताया—"यदि उस खूनी का नाम मैने बताया तो शायद वे मुझे भी जिन्दा नही छोडेगे, लेकिन मुझे इस बात का डर नही है। पुलिस के कुछ अधिकारी भी इनसे मिले हुए है और वे रिश्वत लेकर चुप हो जाते ह। ये नशीली और जहरीली चीजे विदेशो से भी आती ह और इन बदमाशो ने ऐसी चीजे बेचनेवालो के पास पिस्तौल दे रखे ह। नशीली चीजे बेचनेवालो पर भी निगाह रखने के लिए इन्होन गुण्डो को नियुक्त किया है। कुछ अमीर लोग भी ऐसे व्यापारो म दिलचस्पी ले रहे है।"

प्रो० भारती ने पूछा—"लेकिन मिलन का खून होते समय तुम वहा मौजूद थे? और तुम उसका हुलिया बता सकते हो।" कुशल न डरते हुए धीरे-धीरे कहा—'मै और मिलन रावी के घर जा रह थे, क्योकि रावी ने हमे डिनर पार्टी के लिए बुलाया था। अचानक हम दोनो पर हमला हुआ। कुछ लोगो न मिलन को खूब मारा। उसने इन सबका प्रतिकार तो किया लेकिन वह अकेला था और मुझे कुछ लोगो ने पकड रखा था। मेरे मुह पर रुमाल बाध दिया गया था। मिलन चिल्ला रहा था— कुशल! कुशल!!' लेकिन म मजबूर था, इसलिए उसे बचा न सका। मिलन के साथ उन्होने क्या किया इसका मुझे पता ही न लगा। मुझे उन्होन अपनी जीप गाडी म बिठाकर बोरिवली पार्क के पास छोड दिया था। इन्होन मुझे धम काया था कि यदि मिलन के बारे मे कुछ भी बताया तो वे स्नेहा का

अपहरण कर लगे। डर और तनाव से मैं चुप रहा। खूब विचारने के कारण मेरा दिमाग फटने लगा था इसलिए मैंने फिर से ब्राउन शुगर (गर्द) का सहारा लिया। इस जहरीली दवा के सिवा उस समय मेरे पास कोई नहीं था। मुझे रामू दादा पर शक है क्योंकि उसने मुझे धमकाया था कि यदि पुलिस को खबर देने की मैंने कोशिश की तो मेरी भी मिलन की तरह दुर्गति हो जाएगी और वे हाथ धोकर मेरे परिवार के पीछे पड जायेंगे। इसी कारण मैं चाहता हूँ कि मेरा नाम कहीं न आए।" कुशल ने उदासी और बेवसी से अपनी गर्दन झुका दी।

कुशल की बातों से प्रो० भारती, रॉबी और डा० रोहित को सन्तोष हुआ। उन्होंने ये सारी बातें इ० जयचद को बताइ। जयचद ने जब कुशल के मुँह से पूरी कहानी सुनी तो रामूदादा के बारे मे उनके शक की भावना विश्वास मे बदल गयी। कुशल को खोजते समय वे रामूदादा के अड्डे पर भी गये थे लेकिन उस समय इन्स्पेक्टर जयचद का मकसद कुशल की खोज करना था। उन्होंने कुशल को दिलासा दिया और चेतावनी दी कि ऐसी बातें हर जगह पर वह न कहे। रॉबी ने इ० जयचद को यकीन दिलाया कि कुशल को बेगुनाह साबित करने के लिए वह किसी भी खतरे का मुकाबला कर सकता है। रॉबी ने आग्रह किया कि वह भी इन्स्पेक्टर जयचद के साथ रहेगा और हर तरह से उनकी मदद करेगा। इ० जयचद रॉबी की बातों से बेहद खुश हुए।

उसी शाम को कुशल के कमरे म एक वार्ड बॉय पानी का जार तथा गिलास रखने वहाँ आया और उसने कुशल के हाथ म एक चिट्ठी दी और कहा कि बाहर कोई आदमी कार मे आया था, उसी ने यह चिट्ठी दी है। कुशल ने वार्ड बॉय की ओर शक की नजर से देखा और पढने के लिए उसने चिट्ठी खोली। लगता था कि यह चिट्ठी रामूदादा की ही होगी। उसमे यह लिखा गया था—"चेतावनी देने के बावजूद तुमने मिलन के खूनी का नाम बता दिया है। हमारे अड्डो के बारे मे और लागो के बारे म उन्हे अगर खबर दी गई तो तुम्हे जान से मार डालेगे। तुम्हारे कमजोर शरीर को एक गोली काफी है। तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारे परिवार को भी तबाह कर देगे।

खासकर स्नेहा का अपहरण कर लगे।" चिट्ठी पढकर कुशल का शरीर काँपने लगा और उसके दिमाग म खलबली मच गई। उसने मन-ही-मन सोचा कि मेरी इस म रकर गलती की सजा कितन लोग भोगगे।

अब उसके मन मे मिलन के खून की वात आ गई। उसने कुशल के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। कुशल मे गद छुडाने के लिए उसने जी-जान से कोशिश की। एक-एक करके मिलन की सारी अच्छाइयाँ तस्वीरो के रूप मे कुशल के मामने आने लगी थी। एक आदिवासी लडके ने उसके लिए कितनी वाते की थी। कितनी वार वह अपने गाव ले गया था। कुशल मोचने लगा—नहा की जानकी माई और दयानन्द, कितने अच्छे लोग ह ये। मिलन के खून की वात से उन पर क्या गुजरी होगी। यहा ता लागो ने मुझ पर शक किया कि मैंने अपने दोस्त का खून कर दिया। वाह री दुनिया। अखबारा मे मेरा फोटो भी छपकर आ गया। हे भगवान। मैं मिलन के माता पिता को कैसे यकीन दिलाऊ कि मने मिलन का खून नही किया। कुशल को मिलन ने 'माय बेस्ट फ्रेंड' का चादी का शील्ड दिया था। बीमार होकर भी वह कुशल के जन्म-दिन पर हाजिर था। क्या रिश्ता था इस मिलन से। मेरे लिए वह शहीद हो गया और मैं एक गुनाहगार बनकर यहाँ इस सरकारी अस्पताल मे सड रहा हूँ। क्या मैं ही मिलन का खूनी नही हूँ? मिलन की मौत के लिए जिम्मेदार मैं ही तो हूँ।

अपने माता-पिता और स्नेहा के कदमो की आहट से कुशल अपने विचारो मे से जाग उठा। उसने अपने पिता राकेश की ओर याचना की निगाहो से देखा। उसने मा और वहिन को देखकर मुस्कराने की चेष्टा की। सभी ने उसकी पूछताछ की और कुशल ने कहा कि वह अब विल्कुल ठीक है। उसके इस कथन मे झिझक थी। मि० सागर फौरन समझ गए। उन्होने कुशल के माथे पर हाथ रखा और कहा—"बेटा कुशल, चिन्ता मत करो। हम तुम्हे घर ले जायेगे और वहा भी इलाज करके तुम्हे अच्छा कर देंग। हम शहर के सबसे अच्छे वकील द्वारा तुम्हे छुडाने की कोशिश करेंगे। बेटा, तुम खूनी नही हो। रामूदादा ने मिलन का खून किया है और

पुलिस उसके पीछे पडी है। बेटा, मैंने पुलिस-कमिश्नर से बात की है। वे शायद तुम्हे यहाँ देखने भी आयेगे।" कुशल ने चिट्ठी अपने तकिये के नीचे छिपा रखी थी। वह यह चिट्ठी दिखाना नही चाहता था क्योकि उसे लगता था कि उसके माता-पिता और स्नेहा—सभी रामूदादा के चगुल मे फँस जायेंगे। उसने इतना ही कहा—"डैडी मुझे बचा लीजिए। मैंने मिलन का खून नही किया है।" उसकी आखो से आँसू बहने लगे। उसकी माँ कचन और बहिन स्नेहा भी आँसू बहाने लगी। अपने बेटे की इस दयनीय हालत के लिए कौन जिम्मेदार था? मि० सागर और मिसेज सागर दोनो ने एक-दूसरे की ओर अपराधी की निगाहो से देखा।

उनके जाने के बाद, कुशल बिस्तर पर पडे-पडे सोचता ही रहा। वह ड्रग पेडलरो को अच्छी तरह जानता था। उनका बहुत बडा जाल था। कुशल अब इन लोगो से बच नही सकता। कोई-न-कोई कही भी कुशल को मार सकता था। कुशल के सिर मे दर्द शुरू हुआ और पेट भी दुखने लगा। सोच-सोचकर उसके मन मे निराशा का घोर अधकार भर गया था। उसे लगा कि अब मौत ही उसे इन सब बातो से छुटकारा दिला सकती है। क्या खुदकशी कर लेना इतना आसान है? ब्राउन-शुगर का ज्यादा नशा किया तो मौत आ सकती है। मैंने कितने कष्ट दिए सबको। मुझे मरना ही पडेगा। सभी को मुसीबतो से छुटकारा मिल जाएगा! खुदकशी के विचारो ने उसे घेर लिया था।

वहाँ वार्ड बॉय चादर और तकिये के कवर्स बदलने आ गया। उसने कुशल को सहारा देकर कुर्सी पर बिठाया और तकिए के नीचे की चिट्ठी कुशल के हाथ मे दी। चादर और कवर्स बदलने के बाद कुशल ने उसे अपने पास बुलाया। उसने वार्ड बाय को समझाया कि वह कही से ब्राउन-शुगर ले आयेगा तो उसे वह खूब पैसे देगा। वार्ड बॉय ने यहाँ-वहाँ देखा और कहा—"साब, यह तो जोखिम का काम है। यदि मैं पकडा जाऊँगा तो मेरी नौकरी चली जायगी।" कुशल ने उससे पानी मँगाया। वह अब बहुत ही उत्तेजित हो गया और उसे लगा कि किसी भी हालत मे ब्राउन-शुगर लेना ही चाहिए। इस नशे से थोडी देर के लिए ही क्यो न हो, छुटकारा जरूर मिलेगा।

वाड-बॉय ने पानी का जार रखा और वह जाने लगा था तो कुशल ने उसे रोक दिया—"देखो, मै अच्छा हो रहा हूँ। मुझे नशा नही करना है लेकिन एक बार, सिर्फ एक बार ब्राउन-शुगर लाकर दो। मै फिर से नही माँगूगा।" और उँगली से अगूठी निकालकर देते हुए बोला—"यह लो अगूठी, सोने की है और बेचने पर एक हज़ार से ज्यादा ही पैसे मिलेगे।"

वाड-बॉय ने यहाँ-वहाँ देखा और कुशल से कहा—"देखो साब, दूसरा भी दो आदमी दस नम्बर वाड मे ह। वो भी हमसे ब्राउन-शुगर मँगाता है। एक महीने से मै उनको ब्राउन-शुगर देता हू। किसी को कुछ भी मालूम नही। काम बिल्कुल सफाई के साथ होता है लेकिन आपके यहाँ तो बहुत से लोग आते ह और बाहर पुलिस भी है।" यह बाते सुनकर तो कुशल खुश हो गया और उसने अगूठी देते हुए कहा—"जाओ अभी ले आओ। मै किसी को भी नही बताऊँगा। लो, यह अगूठी। जाओ, जल्दी करो।" अगूठी लेकर वाड-बाय वहाँ से जल्दी निकल गया। पुलिस को इस वाड-बाय पर शक हुआ। उसके पूछने पर वाड-बॉय ने कहा कि वह उसके लिए फल लेकर आएगा। पुलिस कास्टेबल ने इतना ध्यान नही दिया।

कुछ ही देर के बाद वाड-बाय डरते-डरते वहा आकर झाकने लगा। अन्दर नर्स थी इसलिए वह बाहर ही रुक गया। नर्स के जाने के बाद वह कुशल के कमरे मे आ गया।

झट से कुशल ने उसके हाथ से ब्राउन-शुगर ले लिया और उसे भगा दिया और उसी वक्त प्रा० भारती तथा रावी वहा आ पहुचे। आते ही उन्हाने कुशल की ओर देखा। कुशल की घबराहट उनसे नही छिपी। प्रो० भारती ने फौरन पूछा—"क्या बात है ? सहमे-सहमे क्यो लगते हो ?" और जब कुशल ने कहा—"कुछ नही ! कुछ नही !!" तो प्रो० भारती का शक बढ गया। उन्होने फौरन तकिये के नीचे से वह चिट्ठी और ब्राउन-शुगर के पैकेटस निकाले, जैसे उन्हे पहले से ही मालूम हो गया हो। उनको देखकर प्रा० भारती आपे से बाहर हो गए और उन्होने कुशल के गाल पर एक तमाचा जड दिया। रावी ने फौरन उनका हाथ पकड लिया और कहा—"सर,

यह अस्पताल है।" अपने-आपको सयत करते हुए उन्होंने कुशल की ओर क्रोध से देखा। बाद मे उन्होने वह चिट्ठी पढी। रॉवी ने भी वह चिट्ठी पढी। थोडी देर शात रहने के बाद प्रो० भारती ने क्रोध से पूछा—"यह चिट्ठी किसने दी ? बोलो कुशल, कौन आया था यहॉ ? बोलो कुशल, यह चिट्ठी किसने दी ?" कुशल ने डरकर सब कुछ बता दिया और यह भी बता दिया कि ब्राउन-शुगर भी उसी वार्ड-बाय ने लाकर दी है और उसने उसे इसके बदले म अपनी सोने की अगूठी दी है।

रावी क्रोध से पागल हो गया और उसने वार्ड बाय को जाकर पकड लाने की बात कही तो प्रो० भारती ने उसे शात किया और कुशल के पास बैठने के लिए कहा। प्रो० भारती अस्पताल से बाहर आये और उन्होने इ० जयचद को फोन करके फौरन आने के लिए कहा। पुलिस स्टशन मे एक-दूसरे इस्पेक्टर थे और उन्होने बताया कि वे ड्यूटी पर बाहर गए हुए ह। आते ही वे उनका सदेश दे देगे। प्रो० भारती कुछ निराश होकर अस्पताल की ओर लौट रह थे कि रास्ते मे उन्हे इ० जयचद दिखाई दिये। प्रो० भारती ने उनका अभिवादन किया। वे दोना अस्पताल के खाली कमरे मे बैठ गय। प्रो० भारती ने इ० जयचद को सारी बात समझायी और यह कहा कि वार्ड बाय शायद रामूदादा को अच्छी तरह जानता है।

इस्पेक्टर जयचद को बाहर बैठे हुए दो पुलिस कास्टबलो पर भी शक हुआ लेकिन उस समय वे चुप रहे। उन्होने रॉवी से कहा कि वह अस्पताल मे जरा चक्कर लगाये और उस वार्ड-बॉय के नाम का पता लगाय। रावी सावधानी से वहॉ से निकला और प्रा० भारती तथा इ० जयचद वहा बैठ गये। थोडी ही देर के बाद बाहर शोर सुनाई दिया। रावी ने जाते-जाते उस वार्ड-बाय को पकड लिया जिसे वह हमेशा कुशल के कमरे म देख चुका था। उसने उसका नाम वगैरह नही पूछा और उसे कसकर पकड लिया। वह चिल्लाने लगा कि उसे पेशेण्टस के लिए खाना ले जाना है, लेकिन रॉवी ने उसे बिलकुल नही छोडा। दो नर्सें और तीन डाक्टर भी इस बद-तमीज़ी के कारण रावी का डाटने लगे थे। एक न तो रावी को पुलिस के हवाले कर देने की धमकी भी दी थी। इस शोर को सुनकर

इ०जयचद वाहर आ गये और उन्होने देखा कि सभी रात्री के हाथो से वाड-वॉय को छुडाने लगे है। इ० जयचद ने फौरन सभी को राका और वार्ड-वाय को पकडकर कुशल के कमरे मे ले आए।

वाहर लोगो की भीड इकट्ठा हो गयी थी और चार-पाच वाड बॉयज भी चिल्लाने लगे थे। इतने मे कुशल के डाक्टर वहा आ पहुँचे। उसी समय वार्ड-वाय ने सब कुछ वता दिया। इ० जयचद ने वार्ड-वॉय को हथकडी लगा दी और कुशल की अगूठी प्रो० भारती को देकर कहा—"प्रो० भारती और रॉवी आप दोना का वहुत वहुत शुक्रिया। मुझे लगता है कि इस वार्ड-वॉय के जरिये रामूदादा की जानकारी हासिल करना अब मुमकिन हो गया है।" प्रो० भारती मुस्कराये—"वैसे इस वार्ड वाय ने कुशल को चिट्ठी और ब्राउन-शुगर देकर अच्छा काम किया, नही तो हमे रामूदादा के बारे म कुछ भी मालूम नही होता।" "ओ० के० आपको जल्दी कामयाबी मिले यही प्राथना है। "शुक्रिया, इतना कहकर इ०जयचद न अपनी जीप स्टार्ट की और वह वहाँ से धूल उडाती हुई ओझल हो गई। जीप के जाते ही प्रो० भारती रॉवी के साथ कुशल के कमरे म वापिस आ गये। रॉवी जाना चाहता था लेकिन प्रो० भारती को यह डर था कि दूसरे वाड-वाय इससे झगडा करेगे। वे दोनो कुशल के पास आ गये। बाहर बैठे हुए दोनो पुलिस कान्स्टेवल टर गये। प्रो०भारती ने उन्ह कुशल पर नजर रखने के लिए कहा।

कुशल की मन स्थिति वहुत ही विचित्र हो गई थी। उसने कभी ऐसा सोचा तक न था कि इस तरह प्रो० भारती और रावी आ धमकेगे और वार्ड-वॉय को पकडवा देगे। कुशल प्रो० भारती के स्वभाव को अच्छी तरह जानता था। जव भी उन्हे किसी वात का स देह होता तो वे फौरन उस विद्यार्थी की गलती को तरह-तरह के सवाल पूछकर पकड लेते थे। कुशल ने प्रो० भारती को देखकर अपना सिर झुका लिया। प्रो० भारती ने वहुत देर तक कुशल को समझाया और कहा कि वह अव अच्छा हो रहा है तो उसे हर काम हिम्मत से करना चाहिए। मिलन के वलिदान का नाम लेते ही कुशल सिहर उठा। प्रो० भारती न वडे दु ख के साथ कहा—"कुशल, तुम्हे अपना विद्यार्थी कहते हुए आज मुझे शर्म आती है। मुझे

यह मालूम नही था कि तुम इतने गिर सकते हो। जिस दोस्त ने तुम्हारी खातिर अपनी जान गवा दी उसकी तुम्ह जरा भी परवाह नही। तुम्हारे रग-रग मे मिलन के खून के लिए प्रतिशोध की भावना भडक उठनी चाहिए थी। ऐसी चिट्ठियो से डरकर तुम फिर से ब्राउन-शुगर का नशा करने पर उतारू हो गये हो। लानत है तुम पर! कमज़ोरी की भी हद होती है। बुज़दिल की तरह जीने से तो मर जाना अच्छा है। मै फिर से तुम्ह कायर के रूप मे देखना नही चाहता।" प्रो० भारती से ऐसी बाते सुनकर कुशल को अपने-आप पर ही क्रोध आया। उसने कहा—"सॉरी सर, मै कुछ पलो के लिए गहरी निराशा और भयकर दु ख मे डूब गया था। सर, मै अपनी कमज़ोरियो को अपने दिमाग से निकाल दूगा। आय प्रामिज़ यु सर।" प्रो० भारती कुशल के मुँह से ऐसी बाते सुनकर कुछ शात हो गए। उन्होने कहा—"क्या, इस ससार म तुम अकेले ही दु खी हो। कितन ही ऐसे लोग है जो भयकर दु खो से पीडित ह। कितने ही ऐसे मासूम बच्चे ह जो अनाथ होकर अन्न के कण-कण के लिए तरसते ह। फिर भी भविष्य के सुनहरे सपनो को साकार करने के लिए वे जी रहे ह। तुम्हारा दोस्त रावी क्या तुमसे कम दु खी है? दुर्घटना मे पिता की मौत हो गई और गावा म जाकर मा बीमार हो गई। वह बेचारी अपन पति की मृत्यु से हिल गई और वह इस शहर मे नही आना चाहती लकिन रावी ने हिम्मत नही हारी। यहा वह अकेला रहता है। कुछ-न-कुछ काम करके अपनी पढाई करता है और अपनी मा के लिए पैसा भी भेजता रहता है। बताओ, कुशल तुमन कौन-सी ऐसी ज़िम्मेदारी निभायी? तुम्हारे जैसे बुद्धिमान नौजवानो को भावुक बनकर कमज़ोरियो का शिकार नही होना चाहिए। तुम सभी मिलकर काम करोगे तो कितनी अच्छी बाते हो सकती ह। मिलन मुझसे हमेशा कहा करता था कि सर—मै गाव के कुछ लोगो को सुधारना चाहता हूँ, गॉव मे मै अच्छी पाठशाला बनाना चाहता हूँ—वहाँ के रास्ते, वहा के घर और वहाँ के लोग—इन सभी को वह सुधारना चाहता था। क्या तुम्ह कभी ऐसा नही लगता कि जिस मिलन ने तुम्ह अच्छा करने के लिए अपनी आहुति दे दी उसके अधूरे सपनो को मै पूरा कर दू? ठीक है, सभालो अपने-आपको।"

प्रो० भारती बहुत कुछ कहना चाहते थे लेकिन वे शात हो गये। व रॉबी को वही बिठाकर चले गए और जाते समय उन्होंने यह बताया कि रॉबी को ले जाने के लिए वे पुलिस की जीप गाडी का इतजाम करेगे।

कुशल के पास अब केवल रॉबी था। दोनो दोस्त सोच-विचार करने लगे थे। प्रो० भारती का कुशल पर काफी प्रभाव पडा था। वह किसी भी हालत मे इस अस्पताल से जल्दी निकल जाना चाहता था। कुशल के चेहरे पर निश्चय की रेखाये उभर आयी थी। उसने रावी से कहा कि कुछ ही देर पहले उसके मन मे खुदकशी के विचार आ रहे थे और अब उसमे जीने की और कुछ कर दिखाने की हिम्मत आ गई। कुशल ने कहा—"रॉबी, देश की बात तो हमारे नेता सोचेंगे लेकिन हम अपने कालेज के उन विद्यार्थियो के बारे मे सोचना चाहिए जो नशीली चीजो से बरबादी के रास्ते पर जा रहे है। मै कालेज के कुछ ऐसे विद्यार्थियो को जानता हूँ जो बिना वजह अपनी जान देने पर तुले हुए है। सचमुच, प्रो० भारती ने ठीक ही कहा, क्या इस दुनिया मे केवल हम लोग ही दुःखी है? कितने ही ऐसे बदकिस्मत आदमी होगे जो मरते दम तक दुःख सहते-सहते जिन्दा रहते है। हमे कुछ करना होगा रावी! मैने जो नशाखोरी का पाप किया है और अहकारी बनकर अपने परिवार को तथा कालेज का जो ठेस पहुँचाई है वह भयकर है। मेरा एक दोस्त मुझे अच्छी राह पर लाने के लिए अपनी जान दे सकता है और मै खुदगर्ज की तरह केवल अपनी ही दुःख की बाते सोचता रहा। रावी, भगवान से प्रार्थना करो कि मै यहाँ से निर्दोष छूट जाऊँ।" कुशल की बाते सुनकर रावी फूला न समाया। कितने दिनो के बाद कुशल जाग उठा था। फिर से वह पुराना कुशल जिदा हो रहा था। एक ऐसा कुशल जिस पर सभी को नाज था। रॉबी अपनी खुशी न छिपा सका।

'शाबाश, मेरे दोस्त' कहते हुए उसने कुशल को गले लगा लिया। उसने कुशल को वचन दिया—'कुशल मैने जिन्दगी को बहुत करीब से देखा है। मेरे पिता की मौत ने तो मेरा जीवन ही मलियामेट कर दिया था लेकिन उन्ही से प्रेरणा पाकर मैने चाह में जीना सीख लिया है। दोस्त, शाति तभी मिल सकेगी जब हम मिलन के टूटे सपनो को सवार

कर उन्हे असलियत म वदल देगें। मै तुम्हे वचन देता हूँ कि तुम्हारे किसी भी अच्छे काय मे मेरा साथ जरूर होगा। मुझे यकीन है कि तुम जरूर इस कलक को दूर कर दोगे। यहाँ से छूटने के वाद हम मिलन के माता पिता से मिलने जरूर जायेगे। उन्होने अपना इकलौता वेटा खो दिया है। हम उनके वेटे वनकर गाव वालो की मदद करेग। मुझे इ० जयचद पर पूरा भरोसा है कि वे तुम्हे यहाँ से छुडा देगे। मै तो हरदम उनकी सहायता के लिए तैयार हूँ।" उसी समय जीप गाडी का हार्न सुनाई दिया और रॉवी कुशल को फिर मिलने का वादा करक उस कमरे से निकल गया। आज रावी के चेहरे पर रौनक देख-कर कुशल को एक आत्मिक शाति प्राप्त हुई।

प्रकरण पाँच

वाड-ब्राय को इ० जयचद अपने पुलिस-स्टशन ले गए और वहाँ पहले लॉक-अप मे वन्द कर दिया। एक घटे के वाद उन्हाने उसे वाहर निकाल कर अपने पास विठा लिया। जव जयचद ने तरह-तरह के सवाल पूछने शुरू किए। इस वाड-वॉय का नाम था किसन कदम। किसन ने अपनी पूरी जानकारी दी—वह चौवीस साल का है और उसकी शादी हो गई है तथा उसकी एक साल की वेटी भी है। वह उस सरकारी अस्पताल के क्वार्टरो म ही रहता है। रामूदादा इस अस्पताल मे अपने एक साथी को देखने आया था जो नशीली चीजो का बुरी तरह शिकार हो चुका था। उस समय रामूदादा ने इस

किसन को दस रुपये चाय-पानी के लिए दिए थे। जब किसन ने रामू दादा की उदारता की बात अपने और साथियो को बताई तो बाद मे रामूदादा ने उन्हे भी इसी तरह पैसे दिये। बहुत-से वाड बाय उसे जानने लगे थे। किसन ने बताया वह बेहद खतरनाक आदमी है। यदि मैं आपके द्वारा पकडा गया हूँ, ऐसा मालूम हुआ तो मेरी बुरी हालत कर देगा। किसन रोने लगा। अपनी सफाई मे उसने बताया कि यहा का पगार बहुत कम होने की वजह उसे ड्रग्ज बेचने का भी धधा करना पडता है।

इ० जयचद ने पूछा—"यह तुम्हारा रामूदादा रहता कहा है? और वह दीखता कैसे है?" किसन ने हिचकिचाते हुए कहा—"साब, उसका कोई ठिकाना नही, वह पैसे वसूल कर लेता है और चला जाता है।" उसी समय दो कास्टेबल एक चोर को पकड कर वहा ले आये। उस चोर के पीछे काफी लोग थे। इ० जयचद ने उसे लाक-अप म बद कर दिया और इन लोगो को वहा से भगा दिया। वह चोर कोई और नही था वह रामूदादा का ही आदमी था। इ० जयचद को शक तो हुआ था। उसने उसे एक दूसरे कमरे मे रखा और ठीक तरह से जवाब न देने के कारण उसे मार खानी पडी। उसे ऐसा लगा कि किसन कदम को कुछ देर के लिए छोड देना चाहिए। जरूरत पडने पर उसका उपयोग किया जा सकता था। इ० जयचद बोले—"देखो आइन्दा ऐसे बुरे काम मत करना नही तो तुम्हारी नौकरी चली जाएगी।" किसन ने पैर छू लिए और वह वहाँ से भाग गया। किसन कदम का छोडने के बाद इ० जयचद ने अस्पताल के प्रमुख डाक्टर को फोन कर दिया और बता दिया कि वह उसी रात का सभी वाड-बायज से मिलना चाहते है। डाक्टर ने बताया कि शायद यह सम्भव नही है। वे एक-एक वार्ड के वार्ड-बायज को बुलाकर उनसे मिल सकते है।

इ० जयचद ने एक एक वाड म उनसे मुलाकात की और इन जहरीली और नशीली चीजो के बारेम समझाया तथा यह चेतावनी दी कि यदि ऐसे अपराध वे करेंगे ता उनकी नौकरी चली जायेगी और वे जेल म मुसीबत उठाते रहगे। उनके बाल-बच्चे फुटपाथ पर आ जायेंगे। इतना ही नही बल्कि व बदनाम हो जायेगे। उन्होन बताया कि किसन कदम की वजह स पूरे अस्पताल की बदनामी हो गई है। इसस

लोगो का अस्पताल से विश्वास उठ जाएगा और लोग अपने बीमार आदमियो को अस्पताल भेजने के लिए तैयार न होगे।

इसके बाद इं० जयचद ने हर एक वाड-वॉय से अलग-अलग मिलकर उसकी पूरी जानकारी हासिल की। कुल चार वाड वॉयज ये नशीली दवाएँ वेचते थे। अकेले म मिलने के कारण इ० जयचद को काफी लाभ हो गया। कुछ लोगों ने रामूदादा का वर्णन किया और अन्य कुछ साथियो की भी जानकारी दी थी। अब इ० जयचद का काम आसान हो गया था।

वे अस्पताल के मुख्य डाक्टर से मिले तो उन्होंने इ० जयचद की हर तरह से मदद करने का वचन दिया। अस्पताल के आसपास नशा-खोरी के भयकर परिणामो के पोस्टर्स लगा दिये गये। उन्होंने यह भी मजूर किया कि कुछ दिनों के लिए कुछ पुलिस अधिकारी मामूली पोशाको म अलग-अलग वार्ड मे घूमते रहेगें। अस्पताल के मुख्य डाक्टर ने सभी डाक्टरो एव नर्सों को सूचित किया कि वे बाहर से आने वाले लोगों की ओर सजगता से ध्यान दे। एक हफ्ते मे ऐसी हलचल मची कि अस्पताल का नाम अखबार मे आ गया और वह बदनामी से बच गया।

इ० जयचद रामूदादा को पकडने की फिक्र मे थे। यदि यह साबित हो जाय कि रामूदादा ने ही मिलन का खून किया है तो कुशल की रिहाई हो सकती थी। इ० जयचद दो बार भेप बदलकर उस बस्ती के चक्कर लगा आए थे। एक बात की जानकारी इ० जयचद को हो गई कि बस्ती के लोगा म से बहुत-से लाग तस्करी का धधा करते है। उनके झोपडा म बम्बई के लोगो को हर चीज मिल सकती थी। ब्राउन-शुगर भी वहा मिल सकता था। वहाँ के सभी लोग रामू-दादा की बहुत इज्जत करते थे क्योंकि उसने बस्ती के अनेक गरीब लोगो की मदद की थी। रामूदादा को पकडने के लिए सबूत का होना जरूरी था। अस्पताल के वार्ड वाय से उसे काफी जानकारी नही मिल सकी लेकिन उसके अन्य साथियो पर कडी नजर रखकर इ० जयचद ने रामूदादा की जानकारी प्राप्त कर ली थी। एक बार वे भिखारी बनकर एक पेड के नीचे बैठे तो किसी बूढे ने रामूदादा कहकर बुलाया

था तो रामूदादा रुक गया था। उसी वक्त इ० जयचद ने उसे गौर से देखा और निश्चय किया कि वह इसे बहुत जल्द ही मिलन के खून के इल्ज़ाम में गिरफ्तार कर लेंगे।

रामूदादा ऊँचे कद का और मजबूत शरीर का गुण्डा था। उसका चेहरा देखकर और उसकी दाढ़ी देखकर लोग डर जाते थे। उसके हाथ के नीचे तकरीबन पचास ऐसे लोग थे जो ब्राउन शुगर, हरोइन, चरस आदि चीजे बेचते थे। इनमे से कई लोगो को उसने गलतियो के लिए खूब मारा था और जख्मी होने के बाद डाक्टर की दवाइया भी स्वय ने ही लाकर दी थी। अपने इलाके के सभी पुलिस अधिकारियो को ता वह जानता था। कुछ अधिकारियो को तो वह पैसे देकर निपटा देता था लेकिन जो अपने फर्ज के लिए ईमानदार थे, उनसे वह डरता था। इ० जयचद उनमे से एक थे जिनसे वह अपने-आपको बचाने की कोशिश करता था। ये जहरीली चीजे बेचनेवाले उसे ऐसी जगह मिलते थे जहाँ से वह आसानी से कही भी भाग सकता था। उसने किसी भी ड्रग-पेडलर को अपना पता नही दिया था। उसके सारे कार नामे रात के वक्त शुरू होते थे। ड्रग पेडलर उससे जहरीली चीजे ले जाते थे और दूसरे दिन उसे पैसे मिल जाते थे। वह पैसे इकट्ठे करके अपने बास के सुपुर्द कर देता था। उसका बास हमेशा कार मे आता था और नशीली चीजो की थैली देकर वसूल किए हुए पैसे ले जाता था।

रामूदादा ज्यादा पढा-लिखा नही था लेकिन टूटी फूटी अग्रेजी से वह काम चला लेता था। बम्बई के जुहू के किनारे मछुओ की बस्ती मे वह रहता था और उसी के घर से ज़रा दूरी पर रात के समय किनारे पर नावे आती रहती। उनमे से बहुत-से तस्करी के सामान उतारे जाते थे। वहा कुछ मोटर आती और सारा सामान लेकर अदृश्य हो जाती। रात के सन्नाटे मे सुनसान किनारे पर ऐसा धधा चलता रहता था। बीच-बीच मे कभी-कभार बहुत से पुलिस अधिकारी आते और कुछ तस्करो को पकड कर ले जाते। सागर का सुनसान किनारा दूर तक फैला हुआ था इसलिए पुलिस द्वारा इनको पकडना बहुत ही मुश्किल था। इस सुनसान किनारे पर कई बार तस्करो

के खून हो चुके थे। कुछ पुलिस अधिकारी भी तस्करो की गोलियो का निशाना बन चुके थे। रामूदादा का बचपन ऐसे ही माहौल मे गुजरा था इसलिए तस्करी की बातो मे वह बहुत सजग और चालाक बन गया था। पलक मारते ही वह दूसरे आदमी की नियत जान जाता था। वह कभी-कभी जान-बूझकर नशीली चीजो के एक दो पैकेट ज्यादा देकर अपने साथियो की ईमानदारी को परख लेता था। बद-माशी करने वाले को वह बहुत पीटता था।

रामूदादा भी गरीबी की आग मे झुलस उठा था। उसके माता-पिता बचपन मे गुजर गये थे। बाद मे उसने उसी बस्ती की एक गरीब लडकी से शादी कर ली थी और उससे चार साल का बच्चा भी था। वह अपने बच्चे को पढाना चाहता था और इस बस्ती से दूर किसी अच्छी बस्ती म मकान लेकर अपनी बीबी और बच्चो को रखने वाला था। उसने अपनी बीबी से यह कह रखा था कि कोई भी अगर उसके बारे मे पूछताछ करे तो 'मालूम नहीं' यही उत्तर देना। घर पर वह कभी भी आता और कहीं भी चला जाता। बीबी बेचारी चिन्ता और तनाव मे जी रही थी। एक बार रामूदादा पर किसी न चाकू का वार किया था लेकिन बडी होशि-यारी से उसने उस वार को बचाने की कोशिश तो की लेकिन दाहिने कान के पास के गाल पर जख्म की लकीर उभर गई थी और उससे बहने वाले खून से सारा चेहरा लाल हो गया था। बाद मे घाव तो अच्छा हो गया था लकिन दाहिने गाल पर जख्म का निशान हमेशा के लिए रह गया था। उस समय से रामूदादा की बीबी डर का शिकार हो गई थी। वह रामूदादा को यह काम छोडने के लिए भी नही कह सकती थी क्योकि रामूदादा का बॉस बहुत ही खतरनाक आदमी था। उसने कुछ महीने पहले रामूदादा के साथी को वरली के समुद्र के किनारे पर पिस्तौल की गोलियो से मार डाला था और उसी बॉस के साथियो न लाश को बडे पत्थर से बाधकर समुद्र मे फेंक दिया था। बास का रामूदादा पर बडा भरोसा था।

इ० नयचद तकरीबन ग्यारह बजे के बाद रात का अपने कुछ साथियो के साथ सागर के उस किनारे जा छिपे जहा तस्करी का

सामान आया करता था। उन्होने अपनी जीप गाडिया किनारे से दूर छिपाकर रखी थी और उन ड्राइवरो को बता दिया था कि जब पटाखो की आवाजे सुनाई दे तो वे फौरन वहा पहुँच जायें। रात का करीब एक बज चुका था फिर भी किसी का पता नही था। थोडी देर के बाद समुद्र मे कुछ रोशनी दिखाई देने लगी। अलग अलग जगहो पर रोशनी के दीये तैरते दिखाई दे रहे थे। इ० जयचद अपने साथियो के साथ सतक हो गये। किनारे पर उतरकर वे अपने सामानो के साथ चलने लगे तो पीछे से बहुत-से लाग आये और उन्होने इन सभी को पकड लिया। अचानक हमले के कारण और शरीर पर सामानो का बोझ होने के कारण वे भाग नही सके। फौरन पटाखो की आवाज़े शुरू हो गयी और चारो ओर से जीप गाडियाँ आ धमकी। सामानो सहित वे सभी गिरफ्तार हो गए। उनमे से एक था रामूदादा।

रामदादा का गिरफ्तार होना एक बडी घटना थी। दूसरे दिन इस घटना की पूरी खबर अखबार म छप गई। रामूदादा का फोटो भी अखबार मे छप गया था। पुलिस ने रामूदादा को एक विशेष कमरे मे बद कर रखा था। उससे मिलने की इजाजत किसी को भी नही दी गई। उसकी पत्नी अपने बेटे के साथ वहाँ आई थी। इ० जयचद ने उसे बिठाया और उसे चाय पिलाई और उसे समझाने की कोशिश की तो वह रोने लगी और उसके साथ वह चार साल का बच्चा भी रोने लगा। इ० जयचद स्वय उन्हे रामूदादा के पास ले गए। रामूदादा तो अपनी पत्नी पर गरम हो गया और उसने कहा—"मेरे बेटे को यहाँ क्यो ले आई। दोबारा यहाँ मत आना। यह जगह मेरे बेटे के लिए अच्छी नही है। और आगे चलकर मेरे बारे मे उसे कुछ न बताना। म तो बरबाद हो गया हूँ लेकिन इसे म अच्छा इन्सान बनाना चाहता हूँ। पढ लिखकर वह इज्जत की जिन्दगी बसर करेगा।"

इ० जयचद ने डरा-डराकर रामूदादा के जीवन के बारे म उसके साथियो से बहुत जानकारी प्राप्त की थी। उन्हे ऐसा लगा कि रामूदादा को बहुत ही सुरक्षित जगह पर ले जाना चाहिए क्योकि उसकी जान के लिए खतरा पैदा हो सकता था। रामूदादा

ही उन तस्करो के नाम बता सकता था जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तस्करी के जाल म फँसे हुए है। इ० जयचद द्वारा रामूदादा को पूना की जेल मे रखा गया। वहाँ इ० जयचद ने बडी सावधानी से और चतुराई से रामूदादा से मिलन के खून की जानकारी प्राप्त कर ली। रामूदादा को इ० जयचद ने साफ-साफ कह दिया—"तुम्हारे दूसरे साथी ने मिलन के खून के बारे मे सब कुछ बता दिया है कि खून तुम्हारे द्वारा हुआ है। अपने अपराध को स्वीकार करने से सभी काम आसान हो जायेंगे। मुझ यह भी मालूम है कि तुम्हारे बॉस ने ही तुम सबको मिलन को मार डालने का हुक्म दिया था। अब तुम्हारा बॉस भी गिरफ्तार हो चुका है। रामूदादा ने यह सुनकर आश्चर्य प्रकट किया। वह अन्दर से बहुत ही डर गया था। उसने ऐसा महसूस किया कि अब उस पर बडी मुसीबत आ गई है। जेल मे बाहर जाने के बाद बॉस के लोग उसे जिन्दा नही छोडेगे। उन्हे लगेगा कि इस आदमी ने सारा भेद बता दिया होगा और अब उनकी लाखो की कमायी डूब जाएगी।

इ० जयचद ने उसे सोचने का वक्त दिया और वे बाहर चले गए। रामूदादा की आखो के सामने उसकी बीवी और छोटा बच्चा बार-बार आ रहे थे। पश्चाताप के कारण उसे ऐसा लग रहा था कि सही बात बताकर जी का बोझ हल्का कर लिया जाये। एक घण्टे के बाद, इ० जयचद वहाँ आ गये तो रामूदादा ने उन्ह सब कुछ बता दिया और बताने के बाद उसे पश्चात्ताप भी होने लगा। इ०जयचद न रामूदादा की सारी तहकीकात टप-रेकाडर पर रेकार्ड कर ली। उसन सारी बातें बता दी लेकिन अब भी उसे अपने बॉस के बारे मे विशेप जानकारी नहीं थी। रामूदादा के द्वारा मिलन मारा गया था। मिलन ने रामूदादा तथा उसके साथियो के साथ झगडा किया और उसने रामूदादा के साथी को बहुत पीटा और उसे पुलिस स्टेशन की ओर ले जाने लगा था तब रामूदादा ने उसकी पीठ पर चाकू का वार किया था। इसी वार से मिलन गिर पडा। इरादा धमकाने का था लेकिन गलती से उसके हाथो खून हो गया था। रामूदादा ने कहा—"मिलन सचमुच एक अच्छा लडका था।"

दूसरे दिन रामूदादा ने जितने भी अड्डा के नाम बताए थे और नशीली चीजे बेचनेवाली दुकाना के पते बताये थे उन सभी लागा को गिरफ्तार कर लिया गया था। तकरीबन बीस लाख का ब्राउन शुगर, हेराइन चरस आदि चीजे पुलिस ने कब्जे म ली। अखबारो मे सारी बाते छपकर आयी और यह भी छपकर आया कि रामू दादा ने मिलन का खून किया है न कि कुशल ने। रामकृष्ण कालेज के विद्यार्थी बहुत ही खुश हुए। प्रिंसिपल खोसला और वाइस प्रिंसिपल भारती फूले न समाये। कालेज की प्रतिष्ठा और मान मर्यादा बच गई। अखबार को नोटिस बोड पर लगाया गया। सागर परिवार भी फूला न समाया। कुशल के सारे मित्र उससे मिलने के लिए बेकरार हो गए।

मिलन के गाँव मे भी यह खबर पहुँची तो दयानद और जानकी की आखे आसुओ स भर गयी। वे कुशल से मिलने का फैसला कर चुके थे। उन्होने कुशल के बारे मे ऐसा कभी नही सोचा था कि कुशल मिलन का खून कर सकता है। उनका सोचना कितना सही था। उनके दिल का बोझ हल्का हो गया था। कुशल को वे दूसरा मिलन समझने लगे थे। उसे उन्होने बेटे का प्यार दिया था इसलिए उनके सोचने का तरीका भी माँ-बाप जैसा ही था। मिलन के इस छोटे से गाव के मिलन की जीवन-कहानी छप गई और गाव का नाम भी आ गया तो सभी लोगो के दिलो मे मिलन के लिए श्रद्धा और प्यार का भाव दुगुना हो गया। चदनपुर के मुखिया शकरदास तो लाठी टेकते हुए दयानद के घर आ पहुँचे और कितनी ही देर तक वे बातचीत करते रहे। इस बूढे कक्काल म मिलन के लिए कितना प्यार छिपा था। वे वहा से दयानद और जानकी को मिलन की समाधि की ओर ले गए। उन्होने उस समाधि पर फूल चढाये और मन ही-मन मिलन की तारीफ की। शकरदास ने बताया—'मिलन बेटे की सारी इच्छाये पूरी होनी चाहिएँ। मै मरने से पहले इस गाव मे उसके सारे सपनो को साकार करना चाहता हूँ। मिलन की यह समाधि अब समाधि नही बल्कि प्रेरणा का मन्दिर होगा। पूरा गाव अब काम म लग जाएगा। देखो दया, पहले हम इस कच्ची समाधि को पक्की बनायेगे। चारो ओर गुलाब के पौधे लगायेगे क्योकि

मिलन को गुलाब बहुत अच्छे लगते थे।" कुछ देर वे दोनो मौन रहे और बाद मे वे धीरे-धीरे वहाँ से चले गये।

सुबह उठकर रॉवी ने अखबार मे पढा तो वह खुशी से उछलने लगा। उसने अपने दोस्तो को फोन किए और कुशल के घर पर भी फोन किया। जल्दी-जल्दी वह कपडे पहन कर तैयार हो गया और वहा से पुलिस स्टेशन गया। वह इ० जयचद से मिलने आया था लेकिन उस समय वे मिले नही। उन्होने वहाँ 'अभिनदन' की एक चिटठी छोड दी और वह कुशल को मिलने गया लेकिन उस समय रॉवी को अन्दर नही जाने दिया। लाटरी लगने पर या खूब पैसे मिलने पर किसी इसान की जो मन स्थिति होती है वही मन स्थिति रावी की हो गयी थी। और, जब वह वहा से कालेज गया और उसने प्रिंसिपल एव वाइस-प्रिंसिपल से मुलाकात की तथा दूसरे दोस्तो से भी वह मिला तब उसके दिल को राहत मिली। अधिक खुशी भी बाहर आने के लिए तडपती है। वह अपने दोस्तो के साथ नोटिस बोर्ड पढने लगा। इस पूरी खबर मे रावी का नाम भी आया था। इ० जयचद ने उसकी तारीफ की थी। रावी खुश हुआ और उसने सभी दोस्तो से कहा कि परीक्षाओ के बाद हमे मिलन के गाव जरूर जाना चाहिए।

कुशल के पिताजी मि० सागर ने इ० जयचद को फोन पर बधाई दी और उन्होने कुशल को बचाने के लिए जो तकलीफ उठाई थी उसके लिए शुक्रिया अदा किया। अपने बेटे को निर्दोष पाकर सबसे ज्यादा खुशी श्रीमती सागर को हुई थी। वह तो अपने बेटे को गले लगाने के लिए बेकरार थी। वह इ० जयचद को मिलना चाहती थी। उसने वहा फोन भी किया था लेकिन वे वहा नही थे। वे तो ड्रग-पेडलरो के साथ (नशीली चीजे बेचने वालो के साथ) उलझे हुए थे और इस कोशिश मे थे कि उन बडे-बडे आदमियो के नाम बता दे जो इन जहरीली चीजो का बेचकर देश के नौजवानो को बरबादी के रास्ते पर ले जा रहे है। इ० जयचद उन्हे जड से उखाड देना चाहते थे। दुर्भाग्य से उनके कुछ साथी इतनी दिलचस्पी नही ले रहे थे जितनी उन्ह लेनी चाहिए थी। इ० जयचद को इस बात का डर था

कि वहा की सारी गुप्त बात ड्रग-पेडलरो को मालूम न हो जाये। जो भी पुलिस अधिकारी इन ड्रग-पेडलरो से पैसे कमाते थे उन सभी के नामो की सूची इ० जयचद को मिली थी। ये सारे नाम उन्होने सी० बी०आई० के सुपुर्द किए थे। 'अभिनदन' के काफी पत्र उन्हे आ रहे थे लेकिन उन्हे पढने के लिए उसके पास समय न था। केवल वे कुशल से मिले और उन्होने उसकी रिहाई की खुशखबरी उसे दी। कुशल खुश हुआ लेकिन क्रोधित भी हुआ। वह चाहता था कि रामू दादा को फासी की सजा मिल जाये। इ० जयचद ने उसके जोश को शात करके कहा—"देखो, कुशल रामूदादा ने मिलन का खून जरूर किया है लेकिन वह इतना बुरा नही जितना तुम सोचते हो। यदि वह अपना अपराध स्वीकार न करता तो बहुत दिनो तक तुम्हे मानसिक सघर्ष के बीच से गुजरना पडता और पुलिस-डिपार्टमेट को भी दिन-रात की खोज मे हैरानी हो जाती। कुशल, रामूदादा का भी अपना परिवार है, उसकी बीवी है, उसका चार साल का बेटा है। कुशल, हम पुलिस वाले हमेशा इन अपराधियो से सख्ती से पेश आते है पर हम यह कभी नही भूलते कि वे भी इन्सान है। रामूदादा एक ऐसे माहौल मे पला है इसलिए वह ऐसा अपराधी बन गया। अपराधी ऐसे का जीवन तनाव और दु खो से भरा रहता है। पता नही, कानून उसे कुछ सालो की सजा देकर छोड देगा या उसे फासी की सजा देगा, लेकिन मैं जानता हूँ कि उसके हाथो मिलन का खून जानबूझ कर नही हुआ है। तुम जिस मानसिक कष्टो से गुज़रे हो उसके लिए मुझे अफसोस होता है। मिलन का खून जिस बात के लिए हुआ है, उस बात को अपने जीवन से हटा दो। कुशल नशीली और जहरीली चीजो को बिल्कुल हाथ मत लगाओ।" इ० जयचद कुछ कुछ उत्तेजित हो गये और कुशल से हाथ मिलाकर वहा से चले गये।

अब कुशल के मन मे तरह-तरह के विचार आने लगे। उसे मिलन के वाक्य याद आने लगे—मन का निश्चय होगा तो इन्सान क्या नही कर सकता ? कुशल नाचना छोडो, पढाई करो, मेहनत करो। उज्ज्वल भविष्य के प्रकाश से तुम्हारा जीवन प्रकाशित होगा। कुशल को मिलन ही दिखाई देने लगा था। मिलन के माता-पिता की याद ने उसे इस बात को सोचने पर मजबूर किया कि

उन्हे जल्दी-से-जल्दी मिलना चाहिए। उसे इस अस्पताल से जाने के लिए डाक्टरो के डिस्चाज सर्टिफिकेट की ज़रूरत थी। इस बात के लिए मि० सागर और श्रीमती सागर की जरूरत थी। कुशल उनके इन्तज़ार मे था। उसी समय, रावी वहा आता हुआ दिखायी दिया। राँवी को देखते ही कुशल का चेहरा खिल उठा। दोनो एक-दूसरे के गले लग गये। कुशल ने कहा कि हमारा पहला काम यह है कि हमे मिलन के माता-पिता से मिलना चाहिए। राँवी ने कहा—"हाँ, हम जरूर मिलेंगे। अब अकल और आण्टी आने वाले है। अब तुम्हे अपने घर जाना है।"

प्रकरण छः

'कुशल की रिहाई' के कारण उसका पुनर्जन्म हो गया था और उसके माथे का कलक धुल गया। सागर-परिवार, कालेज के प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल, प्रो० भारती, अन्य अध्यापक और विद्यार्थियो ने एक उत्साह का अनुभव किया। राँवी और अन्य मित्र तो खुशी से झूम उठे। अस्पताल छोडते समय कुशल का मन सतुष्ट था कि वह अपने प्यारे मित्र मिलन का खूनी नही है। जैसे-जैसे कुशल के कदम घर की ओर बढे, तो उसके मन मे विचारो का द्वन्द्व शुरू हो गया। मोटर-गाडी जुहू के किनारे से उसके बगले की ओर दौड रही थी। गाडी मे मि० सागर और डा० रोहित थे लेकिन कुशल अपने विचारो मे इतना डूब चुका था कि उसे उन दोना के अस्तित्व का अनुभव ही न हुआ।

दुनिया की नज़रो मे वह् बेकसूर था लेकिन मिलन की मौत के लिए जिम्मेदार कौन है ? रामूदादा ने उसका खून किया था और मिलन के खून के इल्ज़ाम मे शायद उसे फाँसी की सज़ा मिल जाये। उसके फासी के लिए कौन जिम्मेदार है ? कुशल को लग रहा था कि इन नशीली और ज़हरीली चीजो की बुरी लत ने ही इतने घोर अनथ कर डाले। मैं सोचता रहा कि माता-पिता ने स्वार्थी बनकर मेरी जिन्दगी को बरबादी के रास्ते पर ले जाने के लिए मजबूर किया। वे हमेशा एक-दूसरे से लडते रहते और अपनी इस लडाई के द्वारा वे अपने अहकार को पुष्ट करते जा रहे थे। दिखावा, अहकार, धोखेबाजी भौतिक वस्तुओ की बहुतायत आदि बातो ने कुशल के माता-पिता को जिन्दगी की असलियत से अलग कर दिया था। कुशल अपने मन के सामने अपने माता-पिता की कमज़ोरिया देख रहा था। खानदान, परिवार की प्रतिष्ठा आदि बातो की आड मे मनुष्य के खोखले और नकली व्यवहार कुशल देख चुका था। शायद इन सभी बातो की वजह कुशल का सवेदनशील मन अपनी शक्ति खोकर दुर्बलता का शिकार हो चुका था और इन जहरीली चीज़ो के सहारे झूठे और आडम्बरयुक्त व्यवहार को भुलाने की उसकी यह कोशिश थी। अब उसे ऐसा लग रहा था कि इन सब बातो के साथ उसे सघर्ष करना चाहिए था। असलियत का मुकाबला न करके उसने पलायनवाद को अपनाया था।

कुशल सोचता जा रहा था और उसकी बुद्धि कह रही थी कि दूसरो की दुर्बलताओ को देखना कितना आसान था। मनुष्य हमेशा अपने दुर्गुणो की ओर थोडा-सा ध्यान देकर अपने ही सद्-गुणो का गुणगान गाता रहता है। कुशल को लगा कि अपने माता-पिता के दोष देखने का उसे क्या अधिकार है ? क्या उसके दोष कम है ? उसने मा-बाप का दिल तो दुखाया ही है। कालेज के कितने लोगो को उसने दुखी कर दिया। मिलन की मौत ? दयानद और जानकी की असहाय अवस्था ! नही, नही, मै खूब सोचूगा तो मेरा सिर फट जाएगा। मै तो कमज़ोरियो का पुतला हूँ। मेरे बारे मे लोगो की क्या-क्या अपेक्षाए थी। मैंने अपने अहकार के चक्कर म किसी की परवाह ही नही की। उसका मन उसे धिक्कारने लगा।

कुशल, बदलो, अपने आपको बदलो। अच्छाई को स्वीकार करो, मन को दृढ करो।

जब कार बंगले के पास आकर रुक गई और पिता ने उसे बुलाया 'कुशल' । तब वह अपने विचारो से जाग गया। मि० सागर ने कहा—"बेटे, मै बहुत बदल गया हूँ। मुझे तुम पर नाज़ है। तुम्हारे बारे म कालेज म अच्छी बाते सुनकर मुझे अपनी गलतियो का अहसास हो गया है। बेटे, हमने तुम पर बहुत अन्याय किया है। सब कुछ भूलकर खुश हो जाओ। तुम्हारे घर लौटने की खुशी मे हमने एक छोटी-सी पार्टी रखी है। तुम्हारे प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल, अध्यापक, दोस्त और मेरे मित्र और तुम्हारी मम्मी की सहेलियाँ आदि लोगो का बुलाया है। मेरी इच्छा है कि तुम अपनी पिछली ज़िन्दगी भूलकर खुशी के साथ नया जीवन शुरू करो।" कार से उतरते समय अपने पिता के मुह से ऐसी बाते सुनकर कुशल को एक प्रकार की खुशी हुई। डाक्टर रोहित ने भी उसके कधे पर हाथ रखकर उसे हौसला दिया। कुशल ने कहा—"डैडी, मुझ माफ कर दीजिए। मैने आपको बहुत तकलीफ दी है।"

बगले मे प्रवेश करते ही पाश्चात्य सगीत सुनाई देने लगा। सभी कुशल को मिलने के लिए उत्सुक थे। मुस्कराकर कुशल सबसे हाथ मिलाता जा रहा था। बगले मे जाते ही उसने अपनी माँ और बहिन को गले लगा लिया और नौकरो से बातचीत की।

वह अपने दोस्तो से मिलकर खिल गया और कितने ही दिनो के बाद वह अपने दोस्तो के साथ मिलकर ज़ोर-ज़ोर से हस रहा था। जब कुशल ने प्रिंसिपल, प्रो० भारती तथा अन्य अध्यापको से माफी मागी तो प्रो० भारती ने कहा—"हम तुम्ह फिर से पुराने कुशल के रूप म देखना चाहते है। सब कुछ भूलकर पढना शुरू करो।" कुशल ने अपने-आपको सुधारने का वचन दिया। इस पार्टी मे रह-रहकर कुशल को रावी की याद आ रही थी इसलिए उसने अपने अन्य दोस्तो से राँवी के बारे मे पूछा भी लेकिन उन दोस्तो ने कहा कि राँवी ने ही उन्ह यहाँ बुलाया था। कुशल अब भी मानसिक रूप से स्वस्थ नही था क्योकि बीच-बीच मे वह एकदम निराश हो

जाता था और वह अपने-आपको अपराधी समझने लग जाता था।

थोडी देर के बाद रावी आया और वह कुशल से जा मिला। कुशल ने उसे देखते ही गुस्सा करने का अभिनय किया और देर से आने की वजह पूछी। रावी ने अपने दोस्त अजय के बारे मे यह बताया कि ब्राउन-शुगर की वजह से उसे अस्पताल मे रखना पडा था और अब ठीक होने की वजह से उसे घर छोडने गया था। कुशल अजय को जानता था और उन दोनो ने दो बार मिलकर ब्राउन-शुगर का नशा भी किया था। अजय के बारे म सुनकर कुशल दुखी हुआ और उसने रावी से कह दिया कि किसी भी हालत म उसे इन ज़हरीली चीजो मे छुडाना होगा। कुशल को ऐसा बोलते सुनकर रावी को बहुत अच्छा लगा।

बातो बातो म प्रिंसिपल खोसला और मिस्टर सागर की पीढिया के बारे मे बातचीत शुरू हो गयी। पुरानी पीढी के लोग नई पीढी के लोगो को समझने की कोशिश नही करते। इस बात को समझाते समय प्रिंसिपल ने मि० सागर से कहा कि नई पीढी के विचारो को जानना जरूरी है। प्रो० भारती ने भी यह कहा कि हमारे पुराने विचारो का अनेक बार वर्तमान जीवन के साथ कोई सम्बन्ध नही होता। उनसे कुछ भी लाभ नही होता फिर भी हमारी पुरानी पीढी जबरदस्ती से इन रीति-रिवाजो को नयी पीढी पर थोप देती है।

मि० सागर न प्रो० भारती का विरोध किया और बताया कि हमारे पुराने रीति-रिवाज ऐसे ही नही बने ह। इन रूढियो के पीछे हमारे बुजुर्गो के जीवन का अनुभव छिपा है। जीवन के इन अनुभवो के आधार पर ही ये रूढिया बनी है। इन्हे बधन मानन के बजाय मनुष्य-जीवन को ठीक तरह से चलाने के लिए इन्ह खुशी से स्वीकार कर लेना बुद्धिमानी होगी। प्रो० भारती कुछ कुछ उत्तेजित-से हो गये—"देखिए सागर साहब, जो रीति रिवाज समय के साथ अनुपयुक्त हो जाते हैं उन्ह निकाल देना चाहिए। समय की धारा के साथ मनुष्य-जीवन भी बहता जाता है। हम जीवन को सीमित बनाकर कुछ रीति रिवाजो मे नही बाध सकते। यदि हम ऐसा करते तो आज

तक हमारी जो तरक्की हो गयी है वह नही होती। एक जमाने मे जाति-भेद की भावना ठीक थी क्योकि इसके आधार पर मनुष्य के अलग-अलग व्यवसाय आधारित थे लेकिन आज इस वैज्ञानिक युग मे इस बात को हम स्वीकार नही कर सकते। उस जमाने म मनुष्य के पास काफी समय था इसलिए उस समय का मनुष्य पूजा-पाठ और कर्मकाण्डो म तीन-चार घण्टे बिता सकता था लेकिन आज की इस तेज़ ज़िन्दगी मे कोई भी नौजवान पूजा-पाठ मे इतना समय नही बिता सकता। इस तरह की कितनी ही बाते बदल गयी ह। हर बात के परिवतन के लिए विरोध तो होता रहा लेकिन इस विरोध के बावजूद रूढियाँ बदलती गयी, और बदलेगी।"

मि० सागर प्रो० भारती की बाते ध्यान से सुन रह थे। उन्हे लगा कि मि० सागर गलती पर हैं। उन्होन अपने विचार रखे —"हमारी नयी पीढी जवानी के जोश मे उतावली बनकर गलत काम कर बैठती है। वे अनेक बार बिना सोचे समझे कदम उठाते ह और नतीजा यह होता है कि वे जीवन मे असफल हो जाते ह। उनकी असफलता की वजह मे मा-बाप को परेशानियाँ उठानी पडती ह। हम किसी भी बात का जब समझाते है तो वह इन नौजवानो की भलाई के लिए ही होती ह और उसमे स्वार्थ की बात तो बिल्कुल नही होती। फिर भी इन नौजवानो को ऐसा लगता है कि हम अपने विचार थोप रहे ह। वे हमारी बाते सुनते नही और अजाम ? निराशा! और इसी निराशा के कारण उनके कदम गलत रास्ते पर पड जाते ह।"

कुशल अपने पिता की बाते सुन रहा था और उसे ऐसा लग रहा था कि पिताजी उसी के जीवन को सामने रखकर बातें करते जा रह हे। प्रिंसिपल खोसला ने इस बहस मे दिलचस्पी ली—"देखिए सागर साहब आप रूढिया और सिद्धातो को मिलाकर सोच रहे ह। प्रो० भारती रूढियो, रीति-रिवाजा की बाता पर जोर दे रह ह और आप उन आदर्शा की बाते कर रहे हे जो हम सभी क लिए लागू होते ह। मै समझता हूँ कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओ के अनुसार नियम बना लेता है और उनका पालन करके अपने जीवन को

सुचारु रूप से चलाने का प्रयास करता है। समय-परिवतन के साथ जब मनुष्य की आवश्यकताएँ खत्म होती है और वे नियम रूढिया बनकर चलते रहते है तब नयी पीढी इन रूढियो के विरुद्ध बगावत कर देती है। आज ये जाति-भेद, ये प्रातीय-भेद, ये भाषा-भेद, य धर्म-भेद आदि भेदा की दीवार खडी हो गई ह' इसलिए जीवन मे सघष की भावना का आगमन हो गया है। नई पीढी खुली हवा मे सास लेना चाहती है और इन भेदो की दीवारो का तोडना चाहती है।" सागर साहब ने विरोध प्रदर्शित करते हुए कहा—"जिन्ह आप भेद की दीवार कह रहे ह वे तो मनुष्य जीवन की सुविधाए ह। और मुझे लगता है हर इन्सान को अपने-अपन उसूलो पर चलने का पूरा हक है।"

प्रिसिपल ने कहा—"आप बिल्कुल सही फरमा रहे ह, लेकिन अपने उसूलो पर चलने का पूरा हक निभाते समय हमे इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि दूसरो के हक भी होते है। बात यह है कि हम अपनी ही बातो का बढा-चढाकर महत्त्व प्रदान करते रहते है और अप्रत्यक्ष रूप से दूसरा के हको पर दबाव डालते जाते ह। नयी पीढी रूढियो की गुलाम नही बनना चाहती।

एक बार अजमेर मे स्वामी विवेकानदजी को एक मुसलमान सज्जन ने खाने पर आमन्त्रित किया। उन्ह लगा कि स्वामी जी कुछ बहाना बनाकर निमन्त्रण टाल दग। स्वामी विवेकानदजी ने आभार प्रदर्शित करते हुए निमन्त्रण को सहष स्वीकार किया तो वे मुसलमान सज्जन गदगद हो गए। स्वामीजी उसके घर गये और उन्हान उनके साथ खाना खाया। इनका एक पडोसी हिन्दू धम का कट्टर भक्त था इसलिए उसे यह बात अच्छी नही लगी। उसने स्वामीजी से पूछा—"आप हिन्दू ह फिर भी आपने मुसलमान के घर खाना खाया ?"

स्वामीजी ने कहा—"उसने प्यार से बुलाया तो म कैसे टाल सकता हूँ ? मैं तो सन्यासी हूँ और सन्यासी के लिए धम या जाति का कोई महत्त्व नही। किसी की श्रद्धा और किसी का प्रेम ही मेरी जाति ह, मेरा धम है।" रूढि के विरुद्ध स्वामीजी की यह बगावत

थी जो इसानियत की भावना को बढावा देती है। समय और माहौल के साथ बदलने वाले विचारो का हमको यानि पुरानी पीढी को स्वागत करना चाहिए। मै यह नही कहता कि नई पीढी गलतियाँ नही करती। हमे उनकी गलतियाँ इस प्रकार दिखानी चाहिए जिनसे उनको ऐसा न लगे कि उनका अपमान किया जा रहा है। और साथ-साथ गलतियाँ दिखाने वाले को आत्म-गौरव का अनुभव नही होना चाहिए। पास-पडोसियो के सामने, रिश्तेदारो के बीच हममे से अधिकाश लोग अपने बच्चो की गलतिया दिखाकर उनकी आलोचना करते ह। उन्हे ऐसा लगता है कि ऐसा करन से उनके बच्चे सुधर जाएँगे। मै तो कहूँगा कि उल्टा उनमे क्रोध की और बदले की भावना आ जाती है। कारण ? सबके सामने उनका अपमान हुआ है। बात ऐसी है कि हमारी नई पीढी भी पुरानी होने वाली है। यदि उनमे स्वस्थ विचारो के बीज अकुरित होगे तो आनेवाली पीढी को आजादी के साथ अपने विचारो को प्रकट करने का मौका मिलेगा।"

कुशल, राँत्री आदि नौजवान इनकी बाता को सुन रहे थे। कुशल को लगा कि प्रिसिपल के विचारो मे सच्चाई की खुशबू है। मि० सागर भी सोच मे पड गए थे। उन्होने उस वक्त तो पार्टी का मजा लूटने की बात कहकर प्रिसिपल की बाता की उपेक्षा की लेकिन भीतर से वे अपने स्वभाव का विश्लेषण कर रहे थे। मि० राकेश सागर के दादा एक सिद्धातवादी इसान थे लेकिन वे अपने विचारो को मि० सागर पर थोप देते थे। मि० सागर अपने पिता को समझाने की कोशिश मे हार जाते थे। आज उन्हे अपने पिता की याद आई। अपने पिता के मना करने पर भी उन्होने बहुत-सी बाते उनके मन के विरुद्ध कर डाली थी। वे अब अपने पिता का ही किस्सा दोहरा रहे थे।

थोडी देर के बाद, वे प्रो० भारती के पास आये और उन्होने कहा—"आप के प्रिसिपल के विचारो से मै प्रभावित हो गया हूँ। पुरानी पीढी के हम लोगो को अपना दुराग्रह त्यागना चाहिए। हँसते-हँसते उन्होने हमारी गलतियो को बडी बखूबी से दर्शाया है।"

प्रो० भारती ने कहा—"आप जरा सोचिए, कालेज म पढने वाले कितन प्रकार के विद्यार्थी होते हैं। तरह-तरह की जातियो के, धर्मो के और प्रातो के इन विद्यार्थियो मे भेद-भाव नही होता। वे सब मिलकर एक स्वस्थ जीवन जीते ह। आप अपने बेटे कुशल की ही बात लीजिए। रांबी गोवा का एक कैथलिक लडका है और मिलन? एक छोटे से गाँव का आदिवासी लडका। आपस म एक दूसरे से प्यार करते समय एक-दूसरे की मदद करते समय कभी धर्म के बारे मे उन्होने सोचा है? बिल्कुल नही। लेकिन पुरानी पीढी के लोग जरूर सोचेंगे। मि० सागर धर्म, या जाति मनुष्य के लिए है, मनुष्य धर्म या जाति के लिए नही है। जिस धम के कारण हम आपस मे लडते हो उस धर्म का क्या उपयोग है? फिर भी मै किसी धम या जाति का दोष नही देता। मेरा कहना बस इतना ही है कि धम या जाति के नाम पर हम इसानियत का गला न घोट द। धम का काम है इसानियत की रक्षा। वास्तव मे हमारे विचार स्पष्ट रूप से नयी पीढी के सामन आते ही नही। हम अपन को उनसे बडे और अनुभवी समझ कर नई पीढी का उपहास करने पर तुल जाते ह। नई और पुरानी पीढियो मे विचारो का आदान-प्रदान एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चीज ह। यदि ऐसा नही होता तो हम गलतफहमी के शिकार हो जाते हे। अच्छे बुरे का फैसला तभी हो सकता है जब हम साथ-साथ बैठकर आपस के विचारो को समझने की कोशिश करे।" मि० सागर कुछ पलो के लिए विचारो मे डूब गये फिर भी वे सभी बातो से सहमत नही थे। मि० सागर ने कहा—"हाँ, प्रो० मुझे ऐसा लग रहा है कि यह विषय गम्भीर है और हम इस पर सोचना चाहिए। हम दोनो अपने-अपने हाथ मे खाली तश्तरियाँ पकडे बैठे ह। आइए, कुछ पट-पूजा हो जाए।" दोनो ने अपनी तश्तरियो म कुछ भोजन परोस लिया और वे खाने बैठ गये। पार्टी मे जो भी खाना लेना चाहते थे वे मेजो पर रखे गये खाद्य-पदार्थों की ओर जाकर अपनी-अपनी तश्तरी मे जो भी चाहते ले लेते थे।

कुशल का सोचना शुरू हो गया क्योकि सोचने की उसे एक आदत-सी पड गई थी। पार्टी उसके लिए रखी गयी थी और आधे से ज्यादा लोग उसी के बारे म बातचीत कर रहे थे लेकिन कुशल

इतनी भीड में भी अपने-आपको अकेला महसूस कर रहा था। आज उसे अपने-आप पर ही क्रोध आ रहा था, क्योंकि उसे लग रहा था कि वह अपने माँ-बाप के लिए बोझ बन गया है। उसे अपने पैरों पर खडे होकर जीवन का नया अध्याय शुरू करना था, अपनी कमजोरियों से लड़ना था और जहरीली और नशीली चीज़ों की बुरी लत को जलाकर खाक करना था। पता नहीं, उसके दिमाग में कितने विचार आ रहे थे। वह रॉबी के पास गया। उसने रॉबी को बाहर बुलाया और धीरे से कहा—"रॉबी, मैंने कितने ही दिनों तक कुछ भी पढाई नहीं की। यदि मैं बी० काम० की इस फाइनल परीक्षा में अच्छा परिणाम न लाऊं तो मुझे दुःख होगा। मैं प्रो० भारती से कहकर अगले वर्ष के लिए बी० काम० की तैयारी करूंगा।" रॉबी ने सोचकर बताया, "कुशल, बात सही है। इस फाइनल इयर में फर्स्ट क्लास नहीं मिला तो पूरी जिन्दगी बिगड जाएगी। अब तक तो तुम अव्वल आते रहे हो और डटकर परिश्रम करोगे तो तुम फिर से अव्वल आ सकते हो। मेरी यह बहुत ही तीव्र इच्छा है कि तुम पूरे विश्वविद्यालय में प्रथम आओ। छोटे-मोटे कामों की वजह से मेरा भी अध्ययन रुक गया था। माँ की बीमारी के कारण भी मुझे चार पांच बार गांवा जाना पडा। मैं भी अगले साल ही प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की कोशिश में रहूंगा। चलो, हम प्रो० भारती से अपना इरादा बता दें और उनकी सलाह लें।"

कुशल और राबी ने प्रो० भारती को वचन दिया कि वे कड़ी मेहनत करके अच्छी सफलता प्राप्त कर दिखाएंगे। कुशल ने दूसरी एक बात के लिए प्रो० भारती से सलाह मांगी। कुशल की बात सुनकर प्रो० भारती को ताज्जुब हुआ क्योंकि कुशल अपने पिता का घर छोड़कर रॉबी के यहां रहना चाहता था और वह पिता की किसी भी हालत में मदद नहीं लेना चाहता था। प्रो० भारती ने उसे इस बात के लिए टोका कि वह परिवार की जिम्मेदारियों से पलायन करना चाहता है। कुशल ने यह बताया—"सर, मैं अपने परिवार से सम्बन्ध थोड़े ही तोड़ना चाहता हूं। इसी शहर में मैं रहूंगा और अपनी व्यक्तिगत प्रगति करूंगा। छोटी-मोटी कोई भी नौकरी करके मैं स्वावलंबन का जीवन व्यतीत करना चाहता हूं। घर पर रहूंगा

तो मुझे ये लोग कुछ भी करने नही दगे। मैं ड्रग्ज लेने वाले दोस्तो को भी सही रास्ते पर लाने की कोशिश करने वाला हू। पिताजी इस बात के लिए तैयार नही होगे। मर, यकीन कीजिए कि काफी ठोकरे खाने के बाद मैं इस प्रकार सोच रहा हू।" प्रो० भारती ने विरोध नही किया।

पार्टी के बाद, कुशल ने अपना फैसला सुनाने का निश्चय किया। कुशल ने घर के लिए एव परिवार के लिए कुछ भी नही किया था। माता पिता से जरूरत पडने पर पैसे माग लेना और दोस्तो के साथ खचते रहना। पैमे न मिलने पर घर की कितनी ही चीजे उसने बेच डाला थी। गद के लिए पैसो की चोरियाँ भी की थी। मिसेज सागर ने अपने बेटे की बहुत मारी बाते मि० सागर से छिपा दी थी। नशीली चीजो की लत ने कुशल को कुछ भी करने पर मजबूर कर दिया था। एक बार उमने स्नेहा के गले का सोने का हार चुराकर बेच दिया था। स्नेहा यह जान गई थी लेकिन उसने मम्मी को बता दिया था कि उसने इसे कही खो दिया है। स्नेहा को अपने भाई कुशल की कमजोरी का बहुत दुख हो रहा था। उसने कुशल को समझाने की कोशिश की थी और एक दिन उसकी डाट भी खायी थी।

कुशल शायद यहा रहकर अपने आपको अपराधी के रूप मे देख रहा था। परिवार के लोगो को देख-देखकर वह अपनी पुरानी बुरी वातो को याद करता। उसके अतमन मे कही सघष चल रहा था। खूब सोचने के बाद वह अपना निणय सुनान मे हिचकिचाने लगा। क्या परिवार के लोग कुशल के मनोभावो को समझेंगे? कही वे ऐमा तो नही सोचेंगे कि मैं उनसे प्यार ही नही करता? मा तो कुशल के निणय को बिल्कुल मानेगी नही। स्नेहा भी ऐसा ही सोचेगी कि इतने दिनो के बाद आकर अब कुशल जाने की बात कर रहा है। क्या कुशल का परिवार से जरा भी लगाव नही है? जगह बदलकर दूसरी जगह जाने से प्यार की भावना थोड ही बदलती है? ऐसे प्रश्नो ने कुशल को झकझोर दिया था, अन्त मे उसने सभी को चिटठी लिखकर घर से निकल जान

का फैसला किया। रॉबी तो कुशल का स्वागत करना चाहता था लेकिन कुशल अमीर परिवार का बेटा था। क्या वह जीवन की मुश्किलों से मुकाबला कर पाएगा? कितनी बार मैं भूखा सोया हूँ! क्या कुशल के लिए यह मुमकिन है? रावी को कुशल के निश्चय में शक नहीं था। सोच-विचार के बाद उसने कुशल का साथ देने का फैसला कर लिया।

"आदरणीय पिताजी, माताजी और प्रिय स्नेहा,

मेरी यह चिट्ठी पढकर शायद आप नाराज हो जायेंगे लेकिन मेरे मन की कमजोरियों को दूर करने के लिए मुझे ही इनसे मुकाबला करना पडेगा और यह मुकाबला मैं तभी कर सकता हूँ जब मैं आप लोगो से दूर रहूँ, अकेला रहूँ। अपने प्यार के कारण आप हमेशा मेरी सहायता के लिए दौडकर आयेंगे तो मैं स्वावलम्बी कब बनूगा? जब तक मैं सागर-परिवार के योग्य नही बनता तब तक मैं घर मे कदम नही रखूगा। कृपया आप इस बात को जानने की कोशिश मत कीजिए कि मैं कहा रहता हू और क्या करता हू। जो भी करूगा मैं उसकी जानकारी पत्रो द्वारा देता रहूगा। मेरे इस फैसले के लिए मैंने आपकी अनुमति नही मागी इसलिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।"

आपका आज्ञाकारी

कुशल

प्रकरण सात

कुशल और रॉबी दोनो सोचते-सोचते रास्ते मे रॉबी के घर की ओर जा रहे थे, इतने मे पीछे से एक तेज कार उनकी दिशा मे आती हुई दिखाई दी। रॉबी ने कुशल को बीच रास्ते से इतने ज़ोर से खीच लिया कि वे दोनो सडक के किनारे गिर पडे। वे उठकर खडे हुए और उन्होने उस कार को देखा तो कार रुकी हुई दिखाई दी। वे दोनो एक-दूसरे की ओर देखकर दग रह गए और जब कार मुडकर उनके पास आकर रुकी तो वे दोनो आश्चय के साथ भयभीत हो गये। कार चलाने वाले ने काला चश्मा पहना था। उसने इन दोनो की ओर देखकर कहा, "देखो, कुशल, पुलिस को अड्डो के नाम बताओगे तो हम तुम्हे जिन्दा नही छोडेंगे। तुम्हे शायद पता नही कि हमारा जाल कहाँ तक फैला हुआ है। अगर हमारे आदमियो को कुछ हो गया तो हम तुम्हे ऐसी जगह पर ज़िन्दा रख देंगे जहा तुम तडप तडप कर दम तोड दोगे। बस समझदार ड्रग-अडिक्ट को इतना इशारा काफी है।" और तेजी से वह कार वहा से अदृश्य हो गयी।

कुशल ने रॉबी से कहा कि वह ऐसी धमकिया से डरने वाला नही। कुशल काफी उत्तेजित हो चुका था लेकिन रॉबी सोच मे पड गया था और उसे मिलन की याद आ गई थी। मिलन तो इन दोनो से मजबूत था लेकिन इन लोगो ने उसकी मामूली धमकी से उसका

खून कर दिया और कुशल तो पहले से ही उनके शिकजो मे फँसा हुआ है। दोनो घर पहुँचे। राँवी का बूढा नौकर बैठे-बैठे सो रहा था और जब दरवाजे की घण्टी बजी तो वह चौक कर उठ गया। उसने दरवाजा खोल दिया और घर के भीतर आते ही उसने राँवी के हाथ मे तार दे दिया। रावी की मा गोवा मे गभीर रूप से बीमार हो गयी थी और उसे अस्पताल मे भरती कर दिया गया था। रावी ने तार पढकर उसे अपनी जेब के हवाले कर दिया तो कुशल ने समझ लिया कि शायद मा की बीमारी का ही तार होगा। दोनो कुछ देर तक मौन थे तब तक नौकर ने मेज पर खाना लगाया उसी समय कुशल का माथा दुखने लगा। कुशल जैसे ही बाहर आया और आँगन मे पेड के पास बैठ गया तो उसके पेट मे बल पडने लगे और शरीर पसीने से तर हो गया, वह जमीन पर, गिर कर हाथ-पैर पटकने लगा—'मुझे चाहिए। मुझे चाहिए।' चिल्लाने लगा। पास मे खडे दो ड्रग-पेडलरो ने उसे उठाकर अपनी कार मे डाल दिया। शोरगुल के कारण राँवी बाहर आ गया लेकिन तब तक वहाँ से कार कुशल के साथ गायब हो गई। कुशल ! कुशल !! चिल्लाता हुआ वह कार के पीछे दौडा। खूब दौडने के बाद राँवी रुक गया और रास्ते के किनारे खडा होकर सोचने लगा। रावी की मानसिक स्थिति विचित्र-सी हो गई थी। यदि वह पुलिस इस्पेक्टर जयचद को जाकर बता देगा तो कुशल के खून का खतरा पैदा हो जाएगा।

रात के सन्नाटे मे राँवी ने ड्रग-पेडलरो के अड्डा पर कुशल की खोज जारी रखी। अचानक उसके मन मे एक बात आई। वह पुलिस-स्टेशन की ओर तेजी से कदम बढाने लगा और पुलिस-स्टेशन के करीब आते ही वह झाडियो मे छिप गया। थोडी देर के बाद उसने वही कार देखी जिसमे वह काले चश्मेवाला गुण्डा बैठा हुआ था। जोश मे आकर राँवी उस कार की ओर दौडा और उसमे झाँक कर कुशल को देखने लगा। राँवी ने अपने आपको सयत करके उस गुण्डे से कहा—"कुशल कहाँ है ? उसे कुछ हो गया तो आप सब मुसीबत मे आ जायेगे। मेहरबानी करके उसे छोड दो। मै वचन देता हूँ कि मै उसे गोवा ले जाऊगा। वह बम्बई मे नही रहेगा।" उस गुण्डे ने राँवी के सामने पिस्तौल तान दी और कहा—"इसकी एक गोली

आपके लिए या कुशल के लिए काफी है। कल तक तुम दोनों को बम्बई में नहीं होना चाहिए, नहीं तो कल आप इस दुनिया में नहीं रहेंगे।" रावी ने साहस किया—"आय प्रामिज यु! मैं चाहे तो कुशल को लेकर आज ही रात को चला जाऊंगा लेकिन कुशल कहां है? बताइए प्लीज़ बताइए।" कार में बैठे गुण्डे ने रास्ते के एक पेड़ की ओर इशारा किया और रॉवी ने वहाँ भयंकर दृश्य देखा।

उस पेड के पास कुशल जखमी हालत में पडा हुआ था और गद के नशे में चूर था। रावी वहाँ दौडकर गया और यहा से कार भी तेज़ी से चली गई। रॉबी ने कुशल की हालत देखी और कुछ देर तक टैक्सी के लिए यहाँ-वहा देखता रहा। बाद में टैक्सी में डालकर वह उसे घर ले आया और उसने नौकर की मदद से उसे कपड पहनाए और जखमों को गरम पानी से और आयोडिन से धो डाला तथा सभी जख्मो में पट्टियाँ बाँध दी। अब भी कुशल करीब-करीब बेहोशी की हालत में था। उसने उन ड्रग-पेडलरों से हाथापाई की थी और कोल्ड-टर्की की बीमारी से भी वह परेशान हो गया था। इस कोल्ड-टर्की का लाभ उठाकर उन्होंने कुशल को काफी ब्राउन-शुगर दे दी थी। कुशल लाचार तथा कमजोर होकर तडपने लगा था। रावी के मन में विचारों का तूफान उठा था। यहाँ कुशल को रखना खतरे से खाली नहीं था। अचानक उसके दिमाग में चंदनपुर की बात आ गई और उसे लगा कि दयानंद और जानकी कुशल की देखभाल कर सकते हैं। उसने सोचने में जरा भी समय नहीं गंवाया। चंदनपुर के लिए उसने एक टैक्सी तय की और वह कुशल के साथ चंदनपुर की ओर रवाना हो गया।

टैक्सी चंदनपुर की ओर दौड रही थी और रावी का मन अपनी बीमार मां की ओर दौड रहा था। इस दुनिया में मां के सिवा उसका कोई नहीं था। दोस्त को बचाने की ज़िम्मेदारी ने थोडी देर के लिए मां को भुला दिया था। रावी ने बाहर देखा तो घुप अंधेरा था और मध्य-रात्रि बीत चुकी थी। कुशल नशे में होने की वजह से सो गया था। रात के वक्त यातायात न होने के कारण टैक्सी तेजी से दौड रही थी। चंदनपुर तकरीबन एक किलोमीटर की दूरी पर था

कि टैक्सी का टायर पक्चर हो गया। टैक्सी-ड्राइवर ने कहा कि करीबन आधा घटा तो लग ही जाएगा। रॉबी ने भी ड्राइवर की मदद की और जल्दी-जल्दी दोनो ने मिलकर दूसरा टायर बिठा दिया। बीस मिनट के बाद टैक्सी टेढे-मेढे रास्ते से चदनपुर मे मिलन के घर के सामने खडी थी।

रॉबी ने दयानद और जानकी को जगा दिया। इतनी रात म रॉबी और कुशल क्यो आये होगे ! सवाल पूछने के लिए बिल्कुल समय नही था। राबी और टैक्सी ड्राइवर—इन दोनो ने कुशल को अपने हाथो मे उठा लिया और मिलन के कमरे के पलग पर उसे लिटा रखा। कुशल नीद और नशे मे चूर था। राबी ने सारी बाते उन्हे समझायी और यह बता दिया कि बम्बई मे कुशल के लिए खतरा पैदा हो गया है। जिन्होने मिलन को मार डाला है वे ही लोग कुशल के पीछे पड हुए है। रॉबी ने बता दिया कि वह जल्दी मे है और उसे माँ को देखने के लिए गोवा जाना है। गोवा से लौटने के बाद उसने वापिस आने का वचन दिया। जानकी ने चाय बनाने की बात की तो रॉबी ने मना कर दिया लेकिन जानकी ने थोडी देर रुकने के लिए कहा और दोनो को एक-एक गिलास दूध दे दिया। टैक्सी-ड्राइवर थक-सा गया था उसे अब जरा अच्छा लगने लगा था। राबी ने जानकी माई और दयानद के पैर छुए तो जानकी की आख गीली हो गयी। उसने कहा—"बेटे, सभलकर जाना, सब कुछ ठीक होगा। कुशल की चिन्ता न करना। हम उसकी देखभाल अच्छी तरह करेगे। तुम जल्दी आ जाओ और माँ के बारे मे जरूर लिखो। मेरा आशीर्वाद।"

राबी ने जाने से पहले कुशल की ओर देखा और टैक्सी-ड्राइवर के साथ वह घर मे से बाहर आ गया। जानकी और दयानद टैक्सी तक आ गए और उन्होने दोनो को सभल कर जाने की सलाह दी। टैक्सी चलनी शुरू हो गई और रात के सन्नाटे मे ओझल भी हो गई। दयानद और जानकी देर तक वही खडे रहे। गाव के इन मासूम लोगो को कुछ भी समझ मे नही आ रहा था कि बम्बई जैसे शहर मे यह क्या हो रहा है। चेहरा पर प्रश्न-चिह्न थे लेकिन उन्होने एक-

दूसरे से कुछ नही कहा । जानकी ने कुशल के शरीर पर चादर ओढा दी और उसके पैर सीधे कर दिये । उस कमरे मे पहली बार उसने दीप जलाया था ।

सुबह हो गई और सूर्य भगवान् ने पूर्व दिशा मे अपनी सुनहली रश्मियो से प्रकाश को चारो ओर बिखेर दिया । चिडियो की चह-चहाट ने मधुर सगीत का काम किया । मन्दिर के घटो की आवाज सुनाई देने लगी और चारो दिशाओ मे चहल-पहल शुरू हो गई । दयानद अपने वैलो के साथ कब के खेत पर चले गये थे और जाते जाते जानकी को कुशल की देखभाल के विषय मे बताकर गए थे । जानकी ने स्नान वगैरह करने के बाद, पूजा-पाठ किया और कुशल को जगाने के लिए मिलन के कमरे मे गई । कुशल ने आहट पाकर आँखे खोली और वह कमरे के चारो ओर देखने लगा । अब भी उसे लग रहा था कि वह सपने मे ही है । जानकी माई न कहा—"बेटे कुशल, रावी ने तुम्हे यहा लाकर छोडा है । वह आज की गाडी से गोवा जानेवाला था इसलिए यहाँ न रुका । चिन्ता की कोई बात नही, म तुम्हारी देखभाल करूँगी ।"

कुशल ने जानकी माई की ओर देखा । उसे लगा कि वह पहले से अधिक दुर्बल हो गई है । उठकर उसने पद-स्पर्श किया । जख्मो के कारण कुशल का सारा शरीर दुख रहा था । जानकी ने उसके स्नान के लिए गरम पानी रखा और हल्दी का लेप तयार किया । स्नान के बाद जानकी ने हल्दी का लेप जख्मो पर लगाया और उसे मन्दिर जाने के लिए कहा । कुशल के पेट मे आग-सी लगी थी लेकिन जानकी माई की आज्ञा का उल्लघन करना उसके लिए मुश्किल था । उसके अपने कपडे काफी मैले हो चुके थे और उस पर खून के धब्बे भी लगे हुए थे । जानकी माई ने अलमारी से मिलन के कपडे निकाले और कुशल को दे दिये । मिलन के कपडे देखकर कुशल के चेहरे पर मायूसी छा गई और उसे मिलन की याद आने लगी । अतीत के चित्रो की भीड-सी हो गई और उसका मन सुन्न हो गया । उसके मन के दूसरे कोने मे एक सन्तोष की भावना यह थी कि उसे अपने दोस्त के कपडे पहनने का मौका मिला है । मिलन कुशल से कुछ ऊँचा और

और तगडा था इसलिए उसके कपडे कुछ ढीले लग रहे थे। जानकी माई ने कुशल को उन कपडो मे देखा तो उसके चेहरे पर मुस्कराहट की झलक दिखाई दी। उसने कुशल को समझाया कि वह इन ढीले कपडो में कुछ सेहतमन्द लग रहा है—"बेटे, इन कपडो में मिलन का प्यार छिपा है। इन्हे पहनकर तू बहुत जल्द अच्छा हो जाएगा। जा, मन्दिर से हो आ तब तक मैं तेरे लिए बाजरे की रोटी बनाती हूँ। आम के अचार के साथ रोटी खाकर एक गिलास दूध पी लेना और सो जाना। आराम करने से मन ताजा हो जाएगा।"

कुशल के पेट मे चूहे दौड रहे थे। वह तेजी से गाव के मन्दिर की ओर चल पडा। वहा पहले से ही एक नौजवान शिवजी की पूजा मे लगा हुआ था। उसने यहाँ-वहाँ जल छिडका। कुछ बूद कुशल पर भी पडी। बाद मे अगरबत्तियाँ जलाकर दीप जलाये। प्रार्थना के बाद वह धीरे-धीरे मन्दिर के बाहर आ गया। कुशल एक कोने मे खडा होकर उसे निहार रहा था। उस नौजवान ने कोने से छडी उठायी और धीरे-धीरे मन्दिर से ओझल हो गया। अरे, यह तो अन्धा है! इसने फिर भी पूजा के सारे नियमो का ठीक तरह से पालन किया। कुशल ने क्षण भर के लिए सोचा कि शरीर मे आखो का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है! बिना उनके सारा अधेरा! यह नौजवान कितना तेजस्वी लग रहा था। इसकी आखो के आगे अधेरा-ही-अधेरा है और इस अधेरे मे मन की रोशनी से वह खुश दिखाई देता है। सचमुच, जानकी माई से पूछना चाहिए कि गाँव मे यह कहाँ रहता है। इसे देखकर मुझे एक आत्मिक आनन्द हो रहा है। हमारे सामने चारो ओर प्रकाश फैला हुआ है फिर भी हम उसे न देखकर मन के अधेरे मे ठोकरें खाते फिर रहे हैं! कुशल ने शकर भगवान् को हाथ जोडकर प्रणाम किया और कुछ पलो के लिए वह वही बैठ गया। सुबह की रोशनी मे दूर से कोहरा दिखाई दे रहा था और वह धीरे-धीरे अदृश्य हो रहा था। उसके अदृश्य होते ही हरियाली और लहलहाते खेत दिखाई दे रहे थे। पास मे पक्षियो की चहचहाहट भी सुनाई दे रही थी। मिलन के इस गाव ने कुशल के मन को मोहित कर दिया था। मन्दिर से बाहर निकलते ही बैलो के गलो की घटियो की आवाजें सुनाई देने लगी थी। कुछ

किसान अपने साथियो के साथ खेतो की ओर अपने कदम बढा रहे थे। सचमुच, यहा की सुवह कितनी सुन्दर है! कुशल के पैर जानकी माई के घर के पास आकर रुक गये।

जानकी माई ने कुशल को देखा तो किंचित् क्रोधित होकर वोली —"मन्दिर मे क्या शिवजी से वाते कर रहे थे। यहाँ पूरा नाश्ता ठडा हो गया। चलो, बैठो यहाँ अभी गरम कर देती हूँ।" कुशल ने मुस्करा कर कहा—"माई, आपके गाँव मे मैने एक जादूगर देखा, अन्धा था फिर भी वह शिवजी की पूजा इस तरह कर रहा था कि देखने वाले को जरा भी मालूम नही होगा कि वह अन्धा है। कमाल यह है कि उसने दीप जलाये और आरती तैयार की तथा अपने वायें हाथ से घण्टी वजाई।

माई मुस्करायी। उसने मिलन के कमरे से गोपी को पुकारा, और गोपी कुशल के पास आकर बैठ गया—"देखो कुशल, माई ने तुम्हारे वारे मे मुझे कुछ-कुछ वताया है लेकिन अभी वहुत-कुछ जानना वाकी है। मुझे वार-वार अन्धा क्या कह रहे हो? अरे, भाई मेरे, मैं विना आँखो के भी सव कुछ देख सकता हूँ। ईश्वर की कृपा से एक वार किसी की आवाज सुन लेता हूँ तो उसे पहचान लेता हूँ। फूलो की खुशवू, खेतो से आनेवाली एक प्रकार की सुगध महसूस करता हूँ तथा मिट्टी के स्पर्श से जगह का नाम वता सकता हूँ। यह कोई चमत्कार नही है, यह तो सभी अन्धो के लिए आम वात है।" जानकी ने गोपी को रोक दिया और कहा—"तुम दोनो वाद मे वाते करना। कुशल, गोपी तुम्हे सारा गाव दिखाएगा और पूरी जानकारी देगा। चलो, अब नाश्ता कर लो।" कुशल गोपी की जिन्दगी के वारे मे जानने के लिए उत्सुक हो उठा था। आँख नही फिर भी मुझे गाँव दिखाने वाला है? गोपी उसे वडा दिलचस्प नौजवान लगा।

नाश्ते के वाद दोनो जानकी माई के घर से निकले। गोपी आगे-आगे और कुशल पीछे-पीछे। गोपी उसे मदिर ले गया और मदिर के पास उसने गाव के अनेक छोटे-छोटे रास्तो पर कुशल को घुमाया। वीच-वीच मे कोई गाँव का आदमी मिल जाता और गोपी को

पुकारता तो गोपी उसका नाम लेकर अभिवादन करता। यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी गोपी को जानते थे। गोपी ने खेत दिखाये और शकर दास का घर दिखाया। वह शकरदास से कुशल का परिचय कराना चाहता था लेकिन शकरदास सूर्योदय से पहले ही पहाडो की सैर करने निकल गए थे। बाद मे उसने कुशल को गाँव का कुआँ दिखाया और कहा—"इस कुएँ मे मै गिरने वाला था और बिल्कुल कुएँ के किनारे पर एक गज की दूरी पर था लेकिन शीतल हवा के स्पर्श से मैंने वहाँ पानी होने का अनुभव कर लिया। बाद मे मेरी छडी ने भी सूचना दे दी।" कुशल ने कुआँ देखा तो डर गया क्योकि कुएँ के चारो ओर छोटे-मोटे पौधे थे और रक्षा के लिए दीवार नही थी। वहाँ से वह कुशल को गाँव की एक छोटी-सी पाठशाला की ओर ले गया। छोटी-छोटी तीन झोपडियो मे प्राइमरी तक बच्चे पढकर हाई स्कूल म पढने के लिए दूसरे गाँव म जाते थे। कुशल को लगा कि मिलन ने भी यही पढाई की होगी। अब तक गोपी ने या कुशल ने मिलन के बारे मे कुछ भी नही कहा था। गोपी जब गाव से बाहर कुशल को ले आया। बडे रास्ते से छोटे रास्ते पर दोनो चलने लगे। गोपी मिलन की समाधि के पास आकर रुक गया—"यह है मिलन की समाधि! तुम्हारे दोस्त की। मिलन मेरा पक्का दोस्त था। हम दोनो उसके खेत मे हल चलाते थे। उसने तुम्हारे बारे मे मुझ जानकारी दी थी लेकिन जब-जब तुम यहाँ आये मैं दूसरे गाव मे था या किसी के खेत मे। आज हम दोनो का मिलन हुआ है बिना मिलन के। कितना दुर्भाग्य है हमारा। खैर, ईश्वर की इच्छा के आगे हम क्या कर सकते हैं!"

गोपी और कुशल दोनो मिलन की समाधि के पास बैठे हुए थे। उसकी समाधि पर गाँववालो मे से कोई-न-कोई फूल अर्पित करता और चला जाता। उसकी समाधि के आसपास की जगह साफ-सुथरी थी और चारो ओर मिट्टी की दीवार थी। उस पर पानी छिडकने से मृदु गध आ रही थी। समाधि के पास गुलमोहर के पेड थे इसलिए नीचे लाल फूल बिखरे पडे थे। कुशल को थोडी देर तक ऐसा लगा कि मिलन उस समाधि से बाहर आकर कुछ कहना चाहता है। उसके मन मे अजीब ख्याल आने लगे थे। क्या मिलन

की आत्मा यहाँ होगी ? या उसने कही दूसरी जगह जन्म लिया होगा ? देर तक दोनो खामोश थे। ऐसा लग रहा था कि वे मिलन के इतजार मे बैठे ह।

जब कुशल ने गोपी के बारे मे जानने की इच्छा प्रकट की तो गोपी गभीर हो गया वहाँ बैठे-उठे ही उसने अपनी पूरी जीवन कहानी बता दी—शिवजी के मदिर की सीढिया पर तीन महीने के एक बालक को किसी ने रख दिया था। उसके रोने के कारण मदिर के पुजारी जाग गये और उन्होने इस बालक को गोद मे उठा लिया। पुजारी ने ही उस बालक की देखभाल की। उनका इस दुनिया म कोई नही था। उस बालक को पाकर वे धन्य हो गये। गाँव के लोगो ने भी उसकी देखभाल करने म अपने हाथ बँटाये। उस बालक के माता-पिता का कोई पता नही। पुजारी ही उस बालक के लिए सब कुछ थे। पुजारी ने ही उसका नाम गोपी रखा था। गोपी धीरे धीरे पुजारी जी और गाववालो की ममता पाकर जीवन की राह पर कदम बढा रहा था। उसे कभी ऐसा लगा ही नही कि उसके माता-पिता नही हैं। गाव म उसकी प्राइमरी की शिक्षा पूरी हो गयी थी और आगे पढने की सोच ही रहा था कि दुर्घटना के कारण ग्यारह वष की आयु मे उसने आखे खो दी। बलगाडियो की दौड का मुकाबला था। गाव का मेला लगा हुआ था। तेज दौडती हुई गाडी से वह एक पत्थर पर गिर पडा था। माथा पत्थर से इतने जोर से टकराया कि लोगो को लगा कि उसकी खोपडी ही टूट गयी हो। गाववाले चदनपुर से उसे बबई ले गये और उन्होने डाक्टरो से इलाज करवाया लेकिन गोपी का दुर्भाग्य। वह अधा हो गया। जब उसे अपने अज्ञात माता पिता की याद आने लगी तब पुजारी ने इस आघात से अपने प्राण दे दिए। गाववालो ने हर तरह से उसकी सेवा की और तब से वह मदिर के पास वाली झोपडी मे जी रहा था। उसने बबई के ब्लाइन्ड स्कूल मे ब्रेल लिपि भी सीख ली थी। उसे बबई म किसी कारखाने म नौकरी भी मिलने वाली थी लेकिन गाववालो को और खास तौर से शकरदास एव दयानद को यह पसद नही था। इसी कारण वह गाव मे ही उन लोगो के साथ अपना जीवन चला रहा था।

गोपी की कहानी सुनते समय कुशल के मन म अनेक विचार आ रहे थे। शहर में तो हर आदमी अपने-अपने काम मे मस्त रहता है। दूसरो के बारे मे सोचने के लिए शहरवासियो के पास समय कहाँ है? सचमुच गोपी यहाँ कितना खुश है! पूरा गाव उसकी देखभाल करता है, प्यार करता है। गोपी भी हमेशा गाववालो के बारे म सोचता रहता है। गाँववाले कितना खयाल रखते ह गोपी का! शाम को खेतो से लौटने वाले किसान उसकी पूछताछ करके ही अपने घर जाते है। गोपी कभी-कभी गाँववालो को रामायण और महाभारत की कथाएँ सुनाता है और उन्हे समझाता है। कुशल को लगा कि गोपी तो इस गाँव का राजा है। कितने ही लोग उसके पास सलाह लेने आते है। आस-पास के गाँववाले भी शिवजी के दर्शन के साथ-साथ गोपी के भी दर्शन कर लेते हैं।

कुशल ने जब उससे पूछा कि बिना पैसो के वह किस तरह अपना जीवन चलाता है तो गोपी ने कहा—"यह गाँव मेरा बैंक है। उसकी झोपडी मे हमेशा अनाज भरा रहता है। त्यौहारो के दिन गाँव के मुखिया तथा दयानद आदि लोग उसके लिए नए कपडो का प्रबध करते है।' उसके बिना गाव के त्यौहारो मे जान नही आती। सजी हुई बैलगाडी मे बैठकर वह अपने-आपको राजा समझने लगता है।

गोपी की जिन्दगी की कहानी ने कुशल को बहुत ही प्रभावित किया। अब कुशल की सेहत भी सुधरने लगी। कितने ही गाँव-वालो से उसका परिचय हो गया। गोपी के साथ वह खेतो मे जाकर हल चलाता तो लोग मन-ही-मन उसकी दिलचस्पी देखकर मुस्कराने लगते। कुशल मिलन के ही कपडे पहनने लगा था। गाववालो के पास वह अपना परिचय भी ऐसा ही देता था कि वह मिलन का दोस्त है। कुशल को इस चदनपुर गाव मे हर व्यक्ति जानने लगा। गोपी के साथ बार-बार देखकर गाँव वाले कुशल पर बहुत खुश थे। कुशल गाँव के मुखिया शकरदास से मिला तो वे जोश मे आ गये। उनकी निगरानी मे ही मिलन की समाधि बन रही थी। सगमरमर के पत्थर, सिमेंट, रेत आदि चीजे समाधि-स्थल पर पहुँची थी और

काम शुरू हो गया था। कुशल भी उन लोगो के साथ काम करके एक आत्मिक सुख की अनुभूति प्राप्त कर लेता था।

समाधि-स्थल बहुत ही सुन्दर बन गया था। सफेद संगमरमर का चबूतरा बनाया गया था और चारो ओर गुलाब के पौधे लगाये गये थे। समाधि के आस-पास और भी पेड लगाये गये थे। कुशल और गोपी तो रोज वहाँ जाकर काम मे हाथ बँटाते थे। वे दोनो गुलमोहर पेड के नीचे बैठकर बाते करते रहते। वही दो बार कुशल के पेट मे दर्द शुरू हुआ था और थोडा पसीना भी आ गया था लेकिन उसने अपने कमजोर शरीर को गाव की आबोहवा तथा वहाँ के लोगो के प्यार मे मजबूत बना लिया था। उसे अपनी सारी कमजोरिया दिखाई देने लगी थी। गोपी ने इस तरह सभी को अपना लिया था कि उसे अपने बारे मे सोचने का मौका ही नही मिलता। कुशल इस माहौल म मानसिक और शारीरिक शक्तियाँ प्राप्त कर रहा था। कहाँ शहर का गदगी से भरा वातावरण और कहा प्रकृति की सुन्दरता से और स्वच्छता से भरा स्वस्थ माहौल! कुशल सोचने लगा कि शहर की इमारतो ने मनुष्य के स्वाभाविक जीवन को बहुत ही कृत्रिम बना दिया है। कुशल को अपना बगला और वहा का वातावरण अच्छा नही लग रहा था। शहर मे हर एक आदमी अपना महत्त्व बढाने के लिए अपने-आपको कुछ खास समझने लगता है। यहा गोपी कितना जानता है अपने लोगो के बारे मे! एक भी शब्द अहकार का उसके मुह से नही आता। गोपी धर्म-ग्रथो को छोडकर ब्रेल लिपि मे लिखी अन्य किताबे भी पढता रहता है। विभिन्न महापुरुषो के जीवन से वह प्रभावित है। गाँव मे या आस-पास के गाव मे वह तरह-तरह के लोगो के प्रवचन सुनने जाता है। कभी-कभी वह भी चर्चा मे भाग लेता है। कुशल को लगा कि उसका किताबी ज्ञान बेकार है। उसे यह अनुभव हो रहा था कि मनुष्य-जीवन मे वह अपने अधिकाश ज्ञान को नही उतार सकता। गोपी अपने देश के बारे मे बहुत-कुछ जानता था। उसने अन्य धर्मो का अध्ययन भी किया था इसलिए वह कुशल से बहस करता रहता था।

उसने कुशल से कहा—"अगर वह कुछ करना चाहता है तो उसे दिन-रात उसके लिए मेहनत करनी चाहिए। रात-दिन उसी का सपना देखना चाहिए। जब कुशल ने कहा कि इस गाँव मे वह कुछ कार्य करना चाहता है तो गोपी ने कहा, "मिलन के सपनो को पूरा करना हम दोनो का कर्त्तव्य है। गाँव मे अच्छी पाठशाला, गाव मे अच्छे कुएँ, गाँव मे अच्छे मकान और पक्के रास्ते आदि कामो के लिए कडे परिश्रम की आवश्यकता है।" कुशल ने यह बताया कि वह प्रो० भारती को खत लिखेगा। यहाँ आने के बाद अनेक विद्यार्थी और विद्यार्थिनियो को कुशल चदनपुर मे बुलाकर समाज-सेवा करना चाहता था। कुशल ने कहा, मिलन नही होगा लेकिन उसका जोश हमारे साथ होगा। उसकी आत्मा हमारे साथ होगी। गोपी, तुम्हारी वजह से मुझमे हिम्मत आ गई है। मैं खुद शहर जाकर अन्य लोगो को आमन्त्रित करूँगा। शकरदास ने भी अपनी ओर से शहर-वासियो को आमन्त्रित किया है।"

कुशल बार-बार शहर के लोगो की आलोचना करता जा रहा था और कुशल का यह स्वभाव गोपी को अच्छा नही लग रहा था। एक बार गोपी ने उत्तेजित होकर कहा, "कुशल, हम अपने-आपका सुधारना है, अपनी कमजोरियो को दूर करना है। दूसरो की कमजोरियो को दिखाने से हमारी कमजोरियाँ कम नही होती। शहरवासियो की कुछ मजबूरिया होगी इसलिए उन्हे उस प्रकार न चाहते हुए भी जीना पड रहा है। वे भी तो अपने ही देश मे रहते है। और कुशल, तुम यह क्यो भूल रहे हो कि शहर की सुविधाओ को गाँववाले भी चाहते है। मेरे भाई, इस वैज्ञानिक युग मे धीरे-धीरे सारे गाँव एक-न-एक दिन शहरो मे बदलने वाले हैं।" गोपी की बातें सुनकर कुशल को ताज्जुब हो गया और उसे लगा कि गोपी के विचारो मे कितनी स्पष्टता है।

दयानद, आनकी माई, गोपी और कुशल बहुत दिनो के बाद एक साथ भोजन कर रहे थे। कुशल ने प्रो० भारती को पत्र लिखा था और उसके बारे मे तथा गोपी के बारे मे पूरी जानकारी दी थी। उसने चन्दनपुर गाँव के विषय मे और वहाँ के लोगो के जीवन के

विषय मे सविस्तार से लिखा था। उसने दयानद और जानकी माई से कहा—"माई, प्रो० भारती का पत्र आते ही मै बवई जाऊँगा और फिर से जब गरमी की छुटिटयाँ शुरू होगी मैं अपने साथियो के साथ यहाँ आ जाऊँगा। वैसे इस गाँव म मेरा पुनजन्म हुआ है। आप लोगो का प्र म और आपकी सेवा का मूल्य मैं अगले जन्म मे भी नही चुका सकूँगा। आप सब इतना याद रखिए कि चदनपुर गाँव मेरे लिए तीर्थ-स्थल वन गया है। मरतेदम तक मै यहाँ आता रहूँगा। दो पहाडो की गोद म वसे इस गाँव का पूरा नक्शा ही वदलना है और मिलन की इच्छानुसार हर सपने को साकार करना है।" कुशल की वातो से सभी हर्षित हुए। जानकी माई की आँखो मे खुशी के आँसू छलक उठे—'मेरा मिलन गया तो क्या हुआ ? गोपी ने और तूने ता मेरा दुख दूर कर दिया। तुम दोनो मे मिलन की हर वात मुझे नजर आती है।" दयानद वैसे भी वहुत कम वोलते थे लेकिन एकाध वाक्य इतना सुन्दर होता था कि उसमे उनका पूरा व्यक्तित्व झलक उठता था। कुशल और गोपी के हर काम मे वे खूब दिलचस्पी लेते थे। गाँववाले उनका खूब आदर करते थे। वे शंकरदास के पास जाकर गाँववालो की समस्याओ की चर्चा करके कुछ सही रास्ता खोज निकालने और शाति से जीने की सलाह देकर समझाते रहते। उन्हाने गाँववालो के पास कुशल और मिलन की दोस्ती की वात इसलिए भी वताई थी ताकि गाँववाले कुशल के साथ घुलमिल जाये और उसकी मुसीवता को समझने का प्रयास कर। दयानद न कहा, 'कुशल, हम सवके विचारो के फूल प्यार के धागे म ऐसे गुथ गये हे कि हम कभी दूर नही हो सकते। वेटे, गोपी तुम्हारे साथ रहकर तुम्हे प्रेरणा देता रहेगा। तुम्हारे जैसे नौजवानो के जोश को देखते हुए ऐसा लगता ह कि मिलन के सारे सपने साकार हो जायेगे।"

उस दिन के भाजन के वाद कुशल गोपी के घर गया। वैसे भी वह गोपी की सादगी से प्रभावित हुआ था। गोपी की झोपडी देखकर उसे वहुत ही शाति मिली थी। इसमे एक कोन मे स्नानगृह था। एक पलग, एक अलमारी, काने मे एक मिट्टी का घडा और उस पर एक गिलास। जमीन गोवर से पुती हुई थी और दरवाजे पर

सुन्दर रगोली थी। मिट्टी के घड के पास मिट्टी का चूल्हा और मिटटी के कुछ बर्तन। मिटटी के घडो मे ही आटा, चावल आदि चीजें थी। कुशल के मन मे यह जिज्ञासा थी कि गोपी खाना किस तरह पकाता होगा। उसने एक बार कहा था, "गोपी, मै तुम्हारे हाथ का पकाया भोजन खाना चाहता हूँ।" गोपी मुस्कराया था और उसने कुशल को उसी शाम को घर पर बुलाया था। कुशल को लगा था कि वह उसकी मदद से भोजन पकाएगा लेकिन गोपी तो खाना पकाने के बाद बासुरी बजाने बैठा था। कुशल के कदमो की आहट से वह जान गया था कि कुशल आ रहा है। गोपी कमरे की हर चीज ऐसे उठाता जैसे हम आखो वाले करते है। इस बात से कुशल हैरान था। जानकी माई ने दयानद द्वारा खीर भेज दी थी तो गोपी नाराज हो गया था क्योकि उसने भी खीर पकायी थी। दयानद ने विषय बदलना चाहा तो गोपी ने कहा, "बापू, वह खीर रखिए यहाँ और यह खीर आप दोनो के लिए ले जाइए।" भोजनापरान्त वे मन्दिर म बैठे गप्पे हाकते रहे और मन्दिर मे ही सो गये।

इस गॉव मे कुशल करीबन एक महीने तक रह चुका था। इस दरम्यान वह बबई को भूल-सा गया था। उसने अपने माता-पिता को पत्र लिखकर बता दिया कि वह सुरक्षित है और कुछ दिनो के के बाद उन्हे मिलने जरूर आ जाएगा। पत्र म उसने चदनपुर का पता नही लिखा था। राबी को भी कुशल ने पत्र लिखा था और राँबी की माँ की बीमारी के बारे मे पूछा था। राबी ने पत्र के जवाब मे लिखा था कि उसकी मा अब अच्छी है और वह बबई जाकर अपनी नौकरी शुरू कर देगा। कुशल ने गोपी को राँबी के बारे मे भी बता दिया था। अब कुशल को ऐसा लग रहा था कि कुछ-न-कुछ काम शुरू कर देना चाहिए। इसी कारण वह बम्बई जाना चाहता था और प्रो० भारती से मिलकर गरमी की छुट्टियो म चदनपुर मे अपने साथियो के साथ काम मे जुट जाना चाहता था।

प्रो० भारती का पत्र पाकर कुशल खुशी से झूम उठा क्योकि चदनपुर मे सोशल सर्विस कैम्प की तैयारी हो चुकी थी और करीबन

सौ विद्यार्थी तथा विद्यार्थिनियाँ इसमे शामिल थे। इनके साथ चार प्रोफेसर्स और दो लेडी प्रोफेसर्स भी थी। चदनपुर के मदिर के पास की जगह उन्हे मिलने वाली थी जिस पर वे अपने तम्बू लगाने वाले थे। कैम्प के लिए आवश्यक चीज़ो की व्यवस्था हर विद्यार्थी को करनी थी। खाना वगैरह विद्यार्थी ही पकाने वाले थे। पत्र पढकर कुशल बबई जाने के लिए बहुत उतावला हो गया था। उसने दयानन्द, जानकी माई और गोपी को प्रो० भारती का पत्र पढकर सुना दिया और उसी दिन वह बबई के लिए रवाना हो गया।

प्रकरण आठ

कुशल को बबई म न देखकर मि० सागर और मिसिज सागर बहुत ही चिन्तित हुए थे और वे कुशल की खोज म लगे हुए थे। उन्होने पु० इस्पेक्टर जयचद को सब कुछ बता दिया था और कुशल का पत्र भी पढकर सुनाया था। इ० जयचद अब कुशल के बारे मे निश्चिन्त थे क्योकि कुशल ड्रग-पैडलस के साथ नही था। वे अब उन ड्रग-पेडलस के अडडो पर जाकर अपराधियो को गिरफ्तार करने मे लगे हुए थे। इसके कारण ड्रग्ज़ की तस्करी करने वालो मे बडी हलचल मच गयी थी। इन गिरफ्तारियो से लाखो का नुकसान हो रहा था। गद, हराइन आदि चीजे बेचने वाले लोग डर रह थ क्योकि जनता भी उसका साथ नही दे रही थी। प्रो० भारती ने

.। ड्रग-पेटलर्स को पकडवा दिया था इसलिए ड्रग-पैडलर्स ने उन्हे धमकी के पत्र भी भेजे थे। इस तरह माहौल मे भय और खतरा दिखाई दे रहा था।

कुछ दिनो के बाद कुशल के माता-पिता प्रो० भारती से मिलने कालेज आ गये। थे उन्होने कुशल के बारे मे पूछताछ की थी लेकिन उस वक्त प्रो० भारती को कुछ भी मालूम नहीं था। यहाँ से वे राँबी के घर गये, तो वहाँ ताला लगा हुआ था। पडोसियो ने बताया कि राँबी अपन नौकर के साथ गोवा गया हुआ है। क्योकि उसकी माँ वहाँ बीमार है। उन्होने कुशल का भी जिक्र किया तो उन्हे ऐसा लगा कि कुशल शायद राँबी के साथ गोवा गया हुआ है। पडोसियो से ये बाते सुनकर उन्हे कुछ-कुछ राहत-सी मिल गयी, लेकिन उनके मन मे डर की भावना भी बैठ गयी थी। वे अपने बेटे को आखो के सामने चाहते थे। जब इस्पेक्टर जयचद ने बताया कि बबई से बाहर रहना कुशल के लिए बेहतर होगा तो वे सोच-विचार मे डूब गये। स्नेहा भी अपने भाई के कारण दु खी हो गयी थी, लेकिन उसे अपने भाई पर विश्वास था। वह कुशल के निश्चय को देख चुकी थी। कभी-कभी कुशल आठ आठ घण्टो तक लगातार पढाई करता था। स्नेहा की भी उसने मदद की थी। अखबारो मे रोज खबरे आने लगी थी और ड्रग्ज लेकर मरने वाले नौजवान के फोटो भी छप जाते थे। शहर मे तनावपूर्ण वातावरण था।

कुशल चदनपुर से बबई आ पहुँचा तो राँबी के घर गया। राँबी ने कुशल को देखा तो दग रह गया। चदनपुर मे कुशल की सेहत अच्छी हो गयी थी। चेहरे पर सेहत की रौनक थी। दोनो दोस्त एक-दूसरे के गले लग गये और मिलकर खाना खाया तथा भविष्य के बारे मे चर्चा करने बैठे। कुशल ने चदनपुर की अपनी पूरी कहानी सुना दी और गोपी के बारे म बार-बार वह बोलता रहा। इन दोनो की बाता को सुन-सुनकर राँबी का नौकर हँसता जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि एक रात इनके लिए काफी नही है। रात को वे बहुत देर के बाद सो गये। सुबह होते ही उन्हे प्रो० भारती के पास जाना था।

दूसरे दिन कुशल और रॉवी कालेज गये तो वहुत-से विद्यार्थियो ने उन्हे घेर लिया। कुशल को स्वस्थ देखकर हर विद्यार्थी खुश हो रहा था। वे दोनो प्रो० भारती से मिलने के लिए उत्सुक थे। प्रो० भारती उस वक्त अपने काम मे व्यस्त थे इसलिए वे उनसे उस समय मिल न सके। आध घण्टे के वाद उन्होने कुशल और रावी को अपने केबिन मे बुला लिया। वहुत देर तक उनमे वातचीत होती रही और प्रो० भारती ने उनके भविष्य के वारे मे सलाह दी। उन्होने इन दोनो को अव एक ही काम सौप दिया था और वह था सोशल-वक के कैम्प की तैयारी। इस कैम्प के कुशल और रावी दोनो नेता थे।

कुशल अपने माता-पिता और स्नेहा से मिलकर रावी के घर आ गया। सागर परिवार म फिर से खुशी का माहौल छा गया था। कुशल ने अपनी सारी योजनाएँ पिता को वतायी। मि० सागर और श्रीमती सागर खुश थे। बिना देर किये कुशल और रॉवी दोनो ने चदनपुर के सोशल वर्क के कैम्प के वारे मे प्रचार आरभ कर दिया था। सभी विद्यार्थियो का यह अच्छी तरह मालूम हो गया था कि चदनपुर मिलन का गाँव है। अव तक इन दोनो ने अस्सी विद्यार्थियो के नाम दज किये थे। स्नेहा विद्यार्थिनियो के नाम दज करती जा रही थी। कुल तीस विद्यार्थिनियाँ तयार हो गयी थी। प्रो० भारती ने सभी को पहले से ही चेतावनी दी थी कि मई का पूरा महीना वे चदनपुर मे रहेगे और इस छोटे से गाव का काया पलट करेंगे। कैम्प को बीच मे से छोडकर कोई नही जा सकता। कालेज मे जगह-जगह पोस्टस लग गये थे। प्रो० भारती ने सीनियर विद्यार्थियो को बुलाकर चार ग्रुप्स वनाये और हर ग्रुप का एक नेता था। उस ग्रप के काम के लिए वह जिम्मेदार था।

प्रो० भारती एव प्रिंसिपल खोसला इस मत के थे कि पढाई के साथ-साथ शारीरिक श्रम भी महत्त्वपूण है। मिलकर काम करने से एक-दूसरे के लिए प्यार वढता है। और आपस मे भाई-चारे की भावना का विकास होता है। बौद्धिक काम करनेवाले शारीरिक काम करना अपमान समझते है। दुर्भाग्य से हमारे देश मे ऐसा ही

सोचने वाले लोग हैं। हम जापान का उदाहरण ले सकते हैं। वहाँ का कोई भी बड़ा आदमी कोई भी काम करने के लिए तत्पर रहता है। वह काम को पूरा करने के लिए किसी छोटे आदमी की सहायता पर निर्भर नहीं रहता। यही कारण है कि आज जापान अपने उद्योगों में सबसे आगे है। बौद्धिक कार्य के साथ-साथ शारीरिक कार्य भी उतना ही महत्त्व रखते हैं। हमारे राष्ट्रपिता गांधीजी ने स्वयं शारीरिक श्रम करके हमारे नौजवानों के लिए एक अच्छी मिसाल कायम की है। उसी प्रकार अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपने सारे काम स्वयं करते थे। एक बार एक सैनिक अधिकारी किसी महत्त्वपूर्ण काम के लिए उनसे मिलने आये थे। उन्होंने देखा कि लिंकन साहब अपने जूतों की पालिश करने में मशगूल थे। उन्होंने पूछा, "क्या अमरीका के राष्ट्रपति अपने जूतों की पालिश कर रहे हैं?" लिंकन ने उस अधिकारी की ओर देखा और उन्होंने मुस्करा कर कहा, "मैं तो अपने ही जूतों की पालिश कर रहा हूँ, क्या तुम किसी दूसरे के जूतों की पालिश करते हो?" अधिकारी शर्मिन्दा हो गया और उसने माफी माँग कर क्षमा याचना की। किसी भी काम को हमें खुशी के साथ करना चाहिए। आदमी काम से छोटा या बड़ा नहीं कहलाता बल्कि काम में उसकी सच्चाई और सोचने के तरीके से वह पहचाना जाता है। महापुरुषों के ऐसे कितने ही उदाहरण हैं जो किसी भी काम के लिए सदैव तैयार रहते थे। प्रो० भारती कभी-कभी कालेज के बगीचे में फूलों के पौधे लगाने का काम करते थे और पौधों को पानी देने का काम भी करते थे। बाद में कुछ विद्यार्थी उनके इस काम में शामिल हो जाते थे।

अप्रैल का दूसरा सप्ताह था और परीक्षाएँ शुरू हो चुकी थीं। और, रतनपुर जाने के लिए पन्द्रह दिन बाकी भी थे। प्रो० भारती जानते थे कि कुमार और गार्गी इस साल परीक्षा नहीं दे रहे हैं। उन्होंने दोनों को बुलाकर रतनपुर जाने का आदेश दिया। वे दोनों कैम्प के लिए मंदिर के पास की जगह निश्चित करें। साथ-साथ पानी का भी प्रबंध आवश्यक था। दोनों खुश होकर रतनपुर चले गए।

चदनपुर मे सभी को यह ज्ञात हो गया कि बबई से काफी विद्यार्थी वहाँ आ रहे है। उनमे से मिलन के दोस्त भी काफी ह। शकरदास, दयानन्द और अन्य लोगो ने जगह निश्चित की और विना वताये उसकी सफाई भी की। पास ही मे कुआ था। उसकी भी मरम्मत गाँववालो ने की और पानी को स्वच्छ किया गया। चन्दनपुर के लोग तो इन सभी विद्यार्थियो को रोज भोजन देने का भी प्रवन्ध करने वाले थे लेकिन कुशल ने इन्कार कर दिया। गोपी ने अपनी झोपडी देनी चाही तो कुशल ने हँसकर कहा, 'काम करके थकने के बाद हम इसमे आराम करेगे।" दयानद और जानकी कुशल और रावी को देखकर पुलकित हो गये। सचमुच उन्हे ऐसा ही लग रहा था कि मिलन के लिए इनमे कितना प्रेम है ? उन्होने कुशल और राँबी का स्वागत किया।

कुशल, रावी और गोपी—इन तीनो ने गाँव का पूरा चक्कर लगाया। पहले यह निश्चित हो गया कि वे पहले पाठशाला को बाँधने के लिए वीस से पच्चीस विद्यार्थियो के एक दल को नियुक्त कर देगे। इस पाठशाला के लिए सीमेंट, रेत और इटो की व्यवस्था कुशल उम्बई के एक बिल्डिंग-कान्ट्रैक्टर से करनेवाला था। इस काम मे मार्गदर्शन करने के लिए उनके दो आदमी आनेवाले थे। पाठशाला के आस-पास की जगह की सफाई की जरूरत इसलिए थी कि बच्चो को खेलने का भी मौका मिले। वैसे चदनपुर गाव से स्टेशन लगभग एक किलोमीटर दूर था। यह रास्ता टेढा मेढा था और केवल बैलगाडियाँ आ-जा सकती थी। स्टेशन के पास से ही मुख्य सडक जाती थी जिस पर बसे, ट्रक और कारे दौडा करती थी। वैसे गाँव मे मोटरे आती थी, लेकिन रास्ते की खराबी की वजह से बहुत धीरे-धीरे आती थी। मिलन की शव-यात्रा के समय कारे और मोटर-साइकिले धीरे-धीरे आकर दयानद के घर के पास रुक गयी थी। कुशल और राँबी ने इस रास्ते की योजना के बारे मे बातचीत की। इसमे गाववालो का साथ भी जरूरी था। शकरदास ने गाँववालो को मदद के लिए भेजने का वचन दिया तो रावी और कुशल खुश हो गये। इस रास्ते की मरम्मत के लिए करीबन पचास विद्यार्थियो की नियुक्ति हुई। गाव के कुओ की मरम्मत भी आवश्यक

थी। रास्ते का पानी बरसात के दिनो मे कुएँ के पानी को गदा कर देता था। कुएँ के चारो ओर पक्की गोल दीवार बनाने की योजना मन मे आ गई। इसी प्रकार गाँव के बीच के रास्तो की भी मरम्मत होने वाली थी। चदनपुर मे आधे से ज्यादा लोग कच्चे झोपडो मे रहते थे। बरसात मे उनकी स्थिति दयनीय हो जाती थी। इनकी मरम्मत के लिए भी कुछ विद्यार्थी नियुक्त हो गये। इस प्रकार के सभी कार्यों की योजनाएँ तैयार हो गई थी। गाँववालो का साथ था और विद्यार्थियो मे कुछ कर दिखाने की हिम्मत थी।

तीन दिनो के बाद कुशल और रांवी प्रो० भारती से आ मिले। प्रो० भारती ने यहाँ कुछ लोगो को मार्गदर्शन देने के लिए लेक्चरर नियुक्त कर दिए थे। वे अपने-अपने व्यवसाय मे निपुण थे। रोज़ वहाँ के लिए पूरी चीज़े मिलती रहनी चाहिएँ इसलिए ट्रक्स का इतज़ाम किया गया था। प्रो० भारती ने यहाँ पहले से ही अपना काम शुरू कर दिया था। एन सी सी के कैम्प-कमाण्डर से अनुरोध करके तबुओ की व्यवस्था भी कर दी थी। एक दिन के लिए एन सी सी के दो सौ कैडेट्स भी काम करने वाले थे। इस प्रकार चदनपुर के सोशल वर्क कैम्प की तैयारी पूरी तरह हो चुकी थी। पहली मई से यह कैम्प शुरू होने वाला था। कैम्प मे आनेवाले सभी विद्यार्थी हर तरह की तैयारी मे जुट गए थे। हर-एक के दिल मे जोश था। कुछ विद्यार्थी वहाँ अध्यापक बनकर बूढो को पढाने वाले थे। चदनपुर अब जाग उठा था। वहाँ के सभी लोग हर काम के लिए कमर कसकर प्रतीक्षा कर रहे थे।

□□

प्रकरण नौ

जब भी व्यक्ति कोई अच्छा काम करने जाता है तो दूसरे लोग विघ्न की तरह उपस्थित होकर उसके काम को बिगाडना चाहते है। काम करने वाला दृढ-प्रतिज्ञ व्यक्ति हो तो उसका काम सभी के विरोधो के बावजूद भी होता ही है लेकिन वह कच्चे मन का हो तो अच्छा काम वही ठप्प हो जाता है। प्रो० भारती, कुशल, राँवी, सीनियर विद्यार्थी, अन्य प्रोफेसर्स आदि लोगो म उत्साह का और चेतन-शक्ति का सचार हो गया था। चदनपुर के सोशल-वर्क कैम्प की तैयारी करीव-करीव हो चुकी थी। कालेज से इन सभी की यात्रा आरम्भ होने वाली थी। अब केवल सात दिन बाकी थे। कुशल और रावी रात को दस बजे तक कालेज मे काम करते थे। सभी लोग एक नये माहौल मे जाने के लिए बेकरार थे।

शाम का सूरज ढलने लगा था और एक एक करके सभी विद्यार्थी अपने-अपने घर चले गए थे। कुशल और राँवी भी सात बजे के करीब कालेज छोडकर चले गये थे। प्रो० भारती के केबिन मे अब भी रोशनी जल रही थी। नीचे कालेज का पहरेदार एक पिउन से गप्पे हाक रहा था। उसी समय कालेज के कपाउण्ड के पीछे की दीवार से दो गुण्डे कूदकर कालेज के भीतर घुस गए। उन्हे किसी ने भी नही देखा। वे धीरे-धीरे सीढियाँ चढ रहे थे और साढिया चढते

समय यहाँ-वहाँ देखते जा रहे थे। वे जब ठीक प्रो० भारती के केबिन के पास आ गए और उसी समय फोन की घण्टी बजी। प्रो० भारती ने फोन पर बात की और खिड़की से पहरेदार को बुलाया। 'जी साब' कहकर वह ऊपर चढ आया। दोनो गुण्डे ज़रा डर से गये और फौरन केबिन के पीछे के क्लास-रूम मे छिप गये। उन गुण्डो को लगा कि यदि प्रो० भारती चले गए तो उनकी मेहनत बेकार हो जाएगी। प्रो० भारती कुछ थक से गए थे इसलिए उन्होंने चाय लाने के लिए कहा। पहरेदार पैसे लेकर चाय लाने के लिए नीचे की ओर चला गया। उसके जाते ही दोनो गुण्डो ने केबिन के दरवाज़े की ओर सरकना शुरू कर दिया। प्रो० भारती को कदमो की आहट सुनायी दी। बाहर की रोशनी इन दोनो गुण्डो ने बुझा दी। प्रो० भारती तब तक सजग हो गए थे। इतने मे दोनो ने केबिन के भीतर प्रवेश कर लिया और भीतर से दरवाजा बद कर दिया। प्रो० भारती ने जिन दो ड्रग पैडलस को पुलिस के हवाले किया था, वे ही ये दो आदमी थे। ये कैसे छूट गये ? प्रो० भारती को यह समझने मे ज़रा भी देर नही लगी कि उनकी जान खतरे मे है। वे सजग हो गए। उनकी मेज के पास भारत का नक्शा था जिसे लपेट कर रखा गया था। उस नक्शे की लकडी के एक सिरे को पकडकर वे बिजली की तरह उन पर झपटे और एक गुण्डे के सिर पर तीन बार ज़ोर से लकडी पटक दी। वह गुण्डा गिर पडा तो दूसरे ने दरवाजा खोलकर भागने की चेष्टा की। प्रो० भारती उसके पीछे-पीछे दौडने लगे थे कि पीछे से उस दूसरे गुण्डे ने प्रो० भारती की पीठ पर चाकू के तीन वार किये। प्रो० चिल्लाकर नीचे गिर पडे। दूसरा गुण्डा भी भाग निकला। भागते समय चाय लाने वाले पहरेदार से वह टकराया और पूरी चाय पहरेदार के कपडो पर गिर गई। ऊपर मे प्रो० भारती की आवाज़ आ रही थी। पहरेदार तेजी से सीढियाँ चढता हुआ केबिन के पास आ गया। उसने प्रो० भारती को केबिन के दरवाज़े के पास पडा देखा। चारा ओर खून फैल गया था। प्रो० भारती केवल एक ही शब्द कह सके—'डॉक्टर'।

फौरन पहरेदार नीचे की ओर दौडा। उसने दूसरे पीअन को

प्रोफेसर के पास रहने के लिए कहा और नीचे से ही चिल्लाकर उसने होस्टेल मे रहने वाले विद्यार्थियो तथा प्रोफेसरो से वता दिया। सभी प्रो० भारती की ओर दौडने लगे। एक प्रोफेसर ने प्रिंसिपल का बुलाया। उन्होने फौरन रोगी-वाहन के लिए फोन किया। कालेज की खामोशी तरह तरह के लोगो की आवाजो से भर गयी। प्रो० भारती को जाँचने डॉक्टर भी आ गए। काफी खून वह चुकने के कारण वे वेहोश हो गए थे। उसी समय पुलिस भी आ गयी थी। सभी लोग रोगी-वाहन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके आते ही प्रो० भारती को वम्वई अस्पताल मे भरती करा दिया गया। उनकी सारी पीठ खून से भर गयी थी।

चारो ओर फिर एक वार तहलका मच गया। अखवारो मे प्रो० भारती के फोटो छप गये। उनके बारे मे खास जानकारी दी गयी थी। यह तो दूसरे दिन की बात थी। जिस रात प्रो० भारती को अस्पताल मे दाखिल कर दिया गया, वह रात भयकर थी। डाक्टरो ने फौरन उन्हे आपरेशन टेवल पर ले लिया। तकरीवन चार घटो तक आपरेशन होता रहा। हालत बहुत ही नाजुक थी क्योकि उस गुण्डे ने एक साथ तीन वार किये थे। प्रो० भारती को ग्लूकोज पर रखा। वे होश मे आये तो सामने डाक्टस थे। उन्हाने उन्हे वोलने की इजाज़त नही दी। प्रि० खोसला ने उनसे हाथ मिलाया और कहा—"ईश्वर कृपा से आप वच गए।' विद्यार्थियो तथा अन्य लागो से बचाने के लिए उन्हे अति-दक्षता-विभाग (इटेंसिव केयर यूनिट) मे रखा गया था। हर अखबार म रामकृष्ण कालेज की यह घटना छप गयी थी। चाकू चलाते समय खुद पहरेदार प्रो० भारती के लिए चाय लाने गया था। इस वात को लेकर कालेज की काफी आलाचना की गयी। पहली वार एक मासूम विद्यार्थी का खून हो गया था और अव चार महीनो के वाद स्वय प्रोफेसर का खून करने की साजिश रची गयी थी। प्रिंसिपल खोसला की भी कटु आलोचना की गयी थी।

प्रिंसिपल से तरह-तरह के सवाल पूछे जाने लगे। वे जो कुछ जानते थे उनका उत्तर देते थे। उन्होने इस मामले मे पुलिस के दोष

निकाले। प्रो० भारती को अब तीन दिनो के बाद स्पेशल कमरे मे रखा गया था। उनके पास तीन पुलिस-कास्टेबल्स थे। वे आने-जाने वाले लोगो पर ध्यान रख रहे थे। सौभाग्य से प्रो० भारती बहुत ही जल्द सुधरने लगे। चदनपुर सोशल-वर्क कैम्प के लिए सिर्फ चार दिन बाकी थे। प्रिंसिपल ने कैम्प की तारीख बदलने की बात छेडी तो प्रो० भारती ने इसका विरोध किया। वे सोच रहे थे कि चार दिनो मे वे काफी अच्छे हो जायेगे। उनके निश्चय के कारण प्रिं० खोसला ने स्वय कैम्प मे जाने का फैसला किया और प्रो० भारती से कहा—"जब तक डॉक्टर्स आपको इजाज़त नही देगे आप यही शाति से रहेगे।"

प्रो०भारती प्रिं०खोसला के सामने कुछ न बोल सके लेकिन उन्होने डाक्टरो से अनुरोध किया कि वे उन्हे जल्द-से-जल्द अच्छा करने की कोशिश करे। उन्होने डाक्टरो से बताया कि वे पिछले बीस सालो से सोशल-वर्क के कैम्प का इन्तज़ाम करते आ रहे है लेकिन चदन-पुर का कैम्प एक खास बात के लिए महत्त्व रखता है। यह मिलन का गाँव है और प्रो० भारती ने मिलन की समाधि के सामने गाँव-वालो को वचन दिया था कि वे भी मिलन के सपनो को पूरा करने मे गाँववालो के साथ रहेगे। इस कैम्प से उनका भावनात्मक सबध है। वे डाक्टरो की सलाह मानकर नियमित रूप से आज्ञाकारी विद्यार्थी की तरह सभी दवाइया लेते जा रहे थे। वैसे काफी स्वस्थ हो गये थे लेकिन जख्म अभी भरे नही थे और पीठ मे वार होने से सोने मे असुविधा हो रही थी।

धीरे धीरे अब मुलाकातियो की सख्या बढने लगी थी। उनका कमरा फूलो से भर जाता था। इस वक्त उन्हे अपने माता-पिता की याद आती थी। वे तो कब के गुज़र चुके थे। बनारस मे उनका छोटा-सा मकान था। वहाँ उनकी विधवा चाची रहती थी। वे हर महीने उसे पैसे भेजते थे। जब कमरे मे कोई नही होता और कमरे के सारे फूल निकाल कर बाहर रख दिए जाते और वे अकेले रह जाते तो उन्हे अपनी चाची की याद आती थी। अब भी वे दिन उन्हे याद है जब वे बीमार थे तो चाची ने उनके लिए कितने व्रत किये थे।

वे सम्कृत की पडिता थी। सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर गीता के श्लोक गाकर उन्हे जगा देती। चाची को देखने की उनके मन मे तीव्र इच्छा पैदा हो गयी। उन्होने चाची को पत्र लिखने का निश्चय किया। जब शाम हो गयी और रात का आगमन होने लगा तो उन्होने चाची को पत्र लिखा और जून के पहले सप्ताह मे वहा आ जाने का वचन दिया था। उस रात वे बहुत देर तक जागते रहे। उन्हे अतीत की घटनाएँ सता रही थी। प्रो० भारती अब तक शादी-शुदा न थे और उनकी शादी की उम्र भी बीत चुकी थी। अनेक साथियो ने उन्हे सवाल किये थे लेकिन वे हँसकर इनके सवालो को टालते रह थे। जिस लडकी से उनकी शादी होनेवाली थी वह बनारस की ही रहने वाली थी। शादी की तैयारिया हो चुकी थी लेकिन दुर्भाग्य से गगा मे नाव उलट जाने से उसकी मृत्यु हो गयी थी। अपनी भावी पत्नी की दुघटना को वे सह न पाये थे और उन्होने बनारस छोड दिया था। तब से वे अपनी पढाई और विद्यार्थी इन दो बातो मे ही खो-से गये थे। अतीत को याद करते करते वे सो गए और सुबह हुई तो नस ने आकर उन्हे जगा दिया।

उनके जख्मो पर नया बैडेज बाधा गया। दवाइया आदि लेने के बाद, जब उ होने अखबार पढना शुरू कर दिया था तो उस समय इ० जयचद वहा आ पहुँचे। अब तक उन्होने विशेष रूप से कुछ पूछा नही था। बातो-बातो म इ० जयचद ने प्रो० भारती से सभी जानकारी हासिल की। इ० जयचद ने उन्ह आश्वासन दिया कि वे बहुत शीघ्र उन दोनो को गिरफ्तार कर लेगे। प्रो० भारती ने उन दोनो को पकडवा दिया था इसलिए उन दोनो ने एक प्रकार से प्रो० भारती से प्रतिशोध लिया था। उनके अपराध साबित न होन के कारण व मुक्त हो गये थे लेकिन अब उनका बचना मुश्किल है। इ० जयचद को ऐसा लग रहा था कि कुछ दिनो के लिए उन्होने बबई शहर छोड दिया है। जहा-जहाँ गर्द आदि नशीली चीजे बेची जाती है वहा उनकी खोज जारी है। प्रो० भारती ने बताया कि ड्रग्ज बेचने वालो के पीछे कुछ अन्य शक्तियाँ काम कर रही है। उनके मूल की खोज आवश्यक है।

चदनपुर के कैम्प के लिए अब एक दिन बाकी था और डाक्टरो न प्रो० भारती को और चार दिनो तक अस्पताल मे रुकने के लिए कहा था। डाक्टर की सलाह उन्हे पसन्द नही थी लेकिन वे मजबूर थे। इसी बीच कुशल और राँवी तथा कुछ सीनियर विद्यार्थी चदनपुर हो आए थे। उन्होने शकरदास और दयानद आदि लोगो से बातचीत की थी और वहाँ के लोगो को समझाया था। शकरदास और दयानद आदि गाँव के लोग प्रो० भारती को देखना चाहते थे। कुशल ने बताया था कि वे चार-पाँच दिनो के बाद ही उन्हें मिल सकते है। जबकि कैम्प के लिए एक दिन बाकी था शकरदास, दयानद और कुछ गाँववाले प्रो० भारती से मिलने अस्पताल आ पहुँचे।

गाव के इन सब लोगो को देखकर प्रो० भारती पुलकित हो गये। वे भारती जी के लिए फूल और फल लाये थे। शकरदास को देखकर वे भावुक हो गये। इतनी उम्र मे भी उन्होने प्रो० भारती को देखने का कष्ट उठाया था। उन्होने अपने काँपते हाथो से प्रोफेसर को आशीर्वाद दिया। दयानद ने कहा—"हम जानते है कि आपकी यह तीव्र इच्छा है कि आप अपने विद्यार्थियो के साथ चदनपुर आये लेकिन आपकी सेहत अच्छी होने के बाद आपको कौन रोकनेवाला है? इतना विश्वास रखिए कि आपके इन विद्यार्थियो का हम अच्छी तरह से स्वागत करेगे। उनकी हर तरह से सहायता की जाएगी।" उसी समय कुशल और राँवी वहाँ आ गये। कुशल ने यह बताया—"आज प्रिंसिपल का कैम्प के सम्बन्ध म भाषण है और उन्होने कैम्प मे शामिल होने वाले विद्यार्थियो को बुलाया है। सर, आप निश्चिन्त रहिए। यह कैम्प अविस्मरणीय होगा। सभी विद्यार्थी चदनपुर जाने के लिए मचल रह हैं। वे जोश मे हैं और शायद पहली बार उनके दिलो मे इतनी उमग भर गयी है।" प्रो० भारती ने कुशल की बाते सुनी और वे मुस्कराये। वे चाहते थे कि इन जवानो की शक्ति का उपयोग रचनात्मक कार्यों के लिए हो। कालेजो के सकडो विद्यार्थी पढाई के साथ-साथ हमारे गाँवो को सुधारने के लिये छुट्टियो मे उनके पास जाकर उन्हे ज्ञान देते रहे तो गाँवो मे जागृति आ जायेगी।

प्रिंसिपल के भाषण के बाद, कुशल विद्यार्थियो के साथ ड्रग्ज बेचनेवालो के खिलाफ जुलूस ले जाने वाला था। उन्होने अपने साथियो की मदद से बहुत से पोस्टस बनाये थे। वे बम्बई के कालेजो मे जाकर वहाँ अपने साथियो से मिलने वाले थे। प्रो० भारती पर हुए हमले के लिए विद्यार्थी ड्रग-पेडलर्स के विरुद्ध नारे लगाने वाले थे। उस प्रकार उनकी तैयारी हो चुकी थी 'ड्रग-पेडलर्स के लिए—हथकडिया', 'समाज के खतरनाक दुश्मन—ड्रग-पेडलर' आदि घोषणाएँ वे करने वाले थे। उन्होने पहले से ही प्रिंसिपल खोसला से इजाजत ले ली थी। कालेज मे पोस्टस लगे थे—"खुदगर्ज और लालची लोग कुछ रुपयो के लिए हमारे देश के नौजवानो को बरबादी के रास्ते पर ले जा रहे है। दुर्भाग्य से कमजोर नौजवान इसके शिकार हो रहे है। कुछ विदेशी लोग अपने लाभ के लिए हमारे देश के नौजवानो को कमजोर कर रहे है।" दूसरा एक पोस्टर कालेज के गेट पर लगा हुआ था—"ब्राउन शुगर, हेराइन, चरस आदि जहरीली चीजे बहुत ही खतरनाक है। इनकी लत पडने के बाद, अनेक शारीरिक और मानसिक रोग हो जाते है। इन नशीली चीजो को लेनेवाला नौजवान त्वचा रोग से पीडित होता है। शरीर पर फोडे हो जाते है। आँखे अदर धँस जाती हैं। भूख नही लगती और गुर्दे की बीमारियो के कारण पेशाब ठीक तरह से नही होता। सास लेने मे तकलीफ होने लगती है। फेफडो पर भी इन जहरीली चीजो का असर होता रहता है। लगातार इन नशीले पदार्थों के सेवन से वह नौजवान दो सालो मे नपुसक हो जाता है। इस तरह वह अपनी जिन्दगी को बरबाद कर देता है।"

कालेज के विद्यार्थी ऐसे पोस्टर्स जगह-जगह लगा रहे थे। कुशल ने कुछ ड्रग-अडिक्टो के फोटो लिये थे। उनकी नशा शुरू करने से पहले की तस्वीरो के साथ नशीले पदार्थों के सेवन करने के बाद की तस्वीर लगायी गयी थी। प्रि० खोसला ने इन सबकी ये जोशीली बातें सुनी इसलिए उन्होने भी दिलचस्पी ली थी। इन सारी बातो की खबर प्रो० भारती को भी मिली तो वे खुश हो गय।

प्रिंसिपल खोसला का तीन बजे भाषण था। वे अपने भाषण मे

कैम्प के बारे मे जानकारी देनेवाले थे और साथ-साथ चदनपुर के लोगो के बारे मे भी बताने वाले थे। भाषण का समय नजदीक आ पहुँचा था और कालेज के सभागृह मे विद्यार्थी इकटठे होने लगे थे। ठीक तीन बजे कुछ प्रोफेसर और प्रिंसिपल आ गये। सभागृह शात हो गया। प्रिंसिपल खोसला ने प्रो० भारती पर हुए हमले की निन्दा की और विद्यार्थियो को बताया कि बम्बई के सभी कालेजो मे कुछ विद्यार्थी नशीली और जहरीली चीजो के शिकार होते जा रहे हैं। ऐसे कमजोर नौजवानो को उचित राह दिखानी चाहिए। वे नशीले पदार्थ क्यो लेते है? यह सवाल दूसरा है। यदि नशीले पदार्थ मिलेगे ही नही तो लगे कहाँ से?

प्रिंसिपल खोसला ने शुरुआत ऐसी की थी। बाद मे उन्होने कैम्प के बारे म बताया। अपने भाषण मे उन्होने समाज-सेवा के महत्त्व को बताया। उनके भाषण का सार इस प्रकार था—

विद्यार्थी यह न सोचे कि कालेज मे आकर पढाई करके परीक्षाओ मे सफलता प्राप्त करना ही उनका कत्तव्य है। पढाई के साथ-साथ उन्हे और भी बहुत-सी बाते करनी होती है और करनी चाहिएँ। शिक्षा म हमारा बौद्धिक विकास होता है और तरह तरह के खेलो मे प्रशिक्षण लेकर उनका अभ्यास करने से शारीरिक विकास होता है। दूसरो की मुसीबतो मे मदद करना, उनकी सेवा करना और उनके लिए त्याग करना आदि बातो से आत्मिक विकास होता है। शारीरिक, बौद्धिक एव आत्मिक विकास—ये तीनो शिक्षा के अग है। इन तीनो के विकास से ही शिक्षा मे सपूर्णता आ सकती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षाएँ पास करना नही है। ऐसा सोचने वाले विद्यार्थी अपने-आपको सीमित बना देते है। अधूरे ज्ञान के कारण जीवन मे बार-बार उन्हें असफलताओ का मुह देखना पडता है। ऐसे विद्यार्थी जीवन से निराश हो जाते हैं। बाद मे वे किसी तरह जीते जाते है। वे अपने किए पर पश्चात्ताप करते रहते ह, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होती है।

चदनपुर के कैम्प के बारे मे बताते हुए उन्होने यह बताया कि —गाव वालो की कोई आलोचना नही करेगा। इनके दोषो को

निकालना छोडकर उनसे मेलजोल रखकर प्यार का वर्ताव रखना चाहिए। कभी-कभी अनजाने मे ही हम दूसरो की गलतियाँ निकालते समय अपनी प्रशसा करते रहते है। इस प्रशसा म अहकार की भावना प्रकट हो जाती है। दूसरी एक बात यह हे कि केवल घरो, रास्तो और पाठशाला की मरम्मत करने से हमारा उन गाववालो के लिए कत्तव्य पूरा नही होता। गाववाले भोले और मासूम होन से हमारे विचारो का प्रभाव उन पर तुरन्त पड सकता है। दोषो को दिखाते समय उनके गुणो की भी सराहना करनी चाहिए। स्वच्छता का महत्त्व समझाते समय भी अपनी मिसाल से बात को बताया जा सकता है। गाँवो मे देवी-देवताओ के बारे मे काफी अध-श्रद्धा है। इस अध श्रद्धा को दूर करने के लिए उनके सामने अनेक उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिएँ। ऐसी बातो को समझाते समय हमे विज्ञान का उपयोग करना चाहिए।

कम्प मे जाने के बाद, केवल काम करके बैठना नही। शाम के समय गाववालो के पास जाना, उनके परिवार के विषय मे जानकारी लेना तथा उनके बच्चो के बारे मे जान लेना आदि चीज महत्त्व रखती है। इस कैम्प मे शिक्षा, परिवार नियोजन, सफाई आदि बातो पर ज़ोर देना है लेकिन साथ साथ यह भी देखना है कि आपकी बातो से किसी का दु ख तो नही हो रहा है। शारीरिक श्रम मे गाववाले हमसे आगे हे लेकिन उनके लिए किसी अच्छे माग-दशक की आवश्यकता होती है। गाँव मे कभी कभी ऐसे साधु और फकीर आ जाते है जो चमत्कारपूण कहानिया सुनाकर इनसे पसे वसूल करते रहते हैं। कभी-कभी बीमार लोगो का इलाज के लिए डॉक्टर के पास न भेजकर उनके गले म ताबीज आदि बाँध देते ह। कभी-कभी छोटे बच्चे ऐसे साधुओ और फकीरो के कारण मर भी जाते हैं। ऐसे साधुओ और फकीरो पर विश्वास न करके उन्ह गाँव से भगा देना चाहिए।

प्रिंसिपल ने यह बताया कि हरएक का एक डायरी रखनी चाहिए। दिन भर काम करन के बाद तीन या चार निश्चित किये परिवारो के साथ हर विद्यार्थी और विद्यार्थिनी का कुछ समय

बिताना होगा। कभी-कभी मिलकर उनके साथ भोजन करने या भोजन पकाने का काम भी करना चाहिए। उन परिवारो को ऐसा लगना चाहिए कि आप भी उनके परिवार के सदस्य हो गये है। भोजनोपरान्त अलग-अलग चलचित्रो का आयोजन भी आवश्यक है। प्रिंसिपल ने यहाँ-वहाँ से दस प्रोजेक्टर मँगा लिये थे। डाक्यूमेंटरी फिल्मे करीबन सौ के ऊपर थी जिनमे दहेज-प्रथा परिवार-नियोजन, अंध-विश्वास, बचत आदि विषयो पर फिल्मे थी। अर्थात जो भी योजनाएँ प्रिंसिपल ने बतायी उनकी तैयारी प्रो० भारती ने की थी। प्रिंसिपल खोसला ने बहुत-से विद्यार्थियो से अनुरोध किया कि वे अपने अच्छे अच्छे कैमरे तथा टेप-रेकार्डस ले जाये। इन टेप-रेकार्डों द्वारा खुद उनको उनकी ही आवाजे सुना देंगे तो वे खुश हो जायेगे। इस कैम्प के लिए प्रिंसिपल ने करीबन बीस डाक्टरो से सम्पर्क स्थापित कर लिया था और उनकी सुविधा के अनुसार वे एक या दो दिनो के लिए कैम्प मे आकर जानेवाले थे। इसका अर्थ यह था कि रोज एक या दो डाक्टर चंदनपुर मे उपस्थित होने वाले थे। ये डॉक्टर गाँववालो की भी मुफ्त मे जाँच करके इलाज करने वाले थे।

कैम्प म आवश्यक चीजो की सूची बनाकर प्रिंसिपल ने सभी को साइक्लोस्टाइल कापीज दी। बम्बई की दो कपनियो न पाँच बसें मुफ्त म दी थी। चार बसो मे सभी विद्यार्थी एव विद्यार्थिनियाँ जाने वाले थे और पाँचवी बस मे सभी सामान था। सभी को ठीक सात बजे कालेज मे जमा होना था और वही से ये बसे छूटनेवाली थी। बिना प्रो० भारती के कुछ-कुछ फीका लग रहा था। बसो के छूटते समय प्रिंसिपल को प्रो० भारती की चिटठी मिली। वे चार दिनो के बाद इस कैम्प मे शरीक होने वाले थे। प्रिंसिपल खोसला ने चिटठी पढकर सुनायी तो सभी ने जोर से तालिया बजायी और इसके बाद बसे चदनपुर के लिए निकल पडी।

प्रकरण दस

डॉ० रोहित ने भी प्रिंसिपल खोसला को वचन दिया था कि वे भी चार दिनो के लिए इस चदनपुर कम्प मे ज़रूर आयेगे। उन्होने यह बताया था कि वे प्रो० भारती को साथ लेकर आयेगे। प्रो० भारती के साथ किसी डाक्टर का होना ज़रूरी भी था, इसलिए डॉ० रोहित के कथन मे सब खुश हो गए। डॉ० रोहित के अस्पताल मे काफी बीमार आदमी थे इसलिए उनकी ज़िम्मेदारी काफी बढ गयी थी, इसलिए वे अन्य दो डाक्टरो को सब कुछ समझा रहे थे। इसी बीच उन्हे अचानक एक ऐसे बीमार आदमी को बचाने का सामना करना पड जिससे वे थोडे हिल से गये थे। उनका पेशेण्ट था एक ड्रग-अडिक्ट अजय कुलकर्णी।

अजय कुलकर्णी पिछले दो सालो से ड्रग-अडिक्ट था और कभी-कभी वह अपने दोस्तो को ड्रग्ज़ बेचता भी था। दुर्भाग्य यह था कि वह एक अच्छा और होशियार विद्यार्थी था लेकिन शराबी पिता की वजह से उसके जीवन मे ये ज़हरीली चीज़े आ गयी थी। एक ज़माने मे अजय के पिता पुलिस इस्पेक्टर थे लेकिन उनका भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी इतनी बढ गयी थी कि एक दिन रिश्वत लेते समय वे रगे-हाथ पकडे गये। अपमान और बेइज्ज़ती वे बर्दाश्त न कर सके। उनकी नौकरी छूट गयी तो उनसे डरनेवाले चोर-उचक्के भी

सीना तानकर उनके सामने चलने लगे थे। एक ज़माने मे उन्होने किसी सेठ जी की जान बचायी थी इसलिए उन्होने इन्हे मिल मे सिक्यूरिटी अफसर की नौकरी दी थी। अजय की माँ पहले से कमज़ोर थी और पति के ये लक्षण देखे तो वह दु ख से भर गयी। उसे तपेदिक की बीमारी ने पकड लिया था। न ठीक तरह से खाना न ठीक तरह से सोता। दिन-रात पति-पत्नी मे झगडे होते रहते थे और अजय के पिता नशे मे अपनी पत्नी को खूब मारते रहते थे। अजय इन बातो से परेशान हो चुका था। उसका ध्यान पढाई से हट गया था और हरदम सोच-विचार मे बैठा रहता था। एक दिन उसके एक मित्र ने उसे ब्राउन शुगर की सिगरेट दी तो अजय स्वर्ग मे उडने लगा था।

और, तब से आज तक वह गद आदि ज़हरीली चीज़ें लेता आ रहा था। उसने कई बार ड्रग्ज़ के लिए चोरियाँ की, किताबें बेच डाली और दोस्तो से उधार पैसे लिये। उसके शरीर को ड्रग्ज़ की आदत-सी हो गई थी। उसने ड्रग-पेडलर्स से दोस्ती कर ली थी और पैसे न मिलने पर वह उनसे उधारी लेता था। कभी-कभी वह उनके ड्रग्ज़ बेचकर उनके पास से अपने लिए ड्रग्ज़ माँग लेता था। ड्रग्ज़ न मिलने पर उसकी हालत दयनीय हो जाती थी। जब ड्रग-पेडलर्स ने उसे ड्रग देने बद कर दिये तो वह तडपने लगा। उसने अपने दोस्त की घडी चुरायी और ब्राउन शुगर की तीन पुडियो के लिए घडी दे डाली।

अजय को प्यास लग रही थी लेकिन पानी पीने की उसकी इच्छा नही हो रही थी। वह खाना भी ठीक तरह से नही खा पाता था क्योंकि उल्टी की इच्छा होती रहती थी। ऐसी हालत मे क्रोध से अजय ने गद के तीनो पैकेट वैसे ही खा डाले। कुछ समय तक तो वह नशे मे झूमता रहा लेकिन बाद मे उसके पेट मे दर्द शुरू हुआ और वह ज़ोर-ज़ोर से खाँसने लगा। खासते समय, उसके मुह से खून निकल आया तो अजय घबरा गया। वह अस्पताल की ओर दौडने लगा और दौडते-दौडते तीन बार गिर पडा। अस्पताल के बाग मे लिलि

के सफेद फूलो के पास वह आकर गिर पडा। जब उसने उठने की कोशिश की तो मुह मे खून का फव्वारा सा निकल पड़ा। वहाँ के सफेद फूलो पर रक्त की लाल बूदे दिखायी देने लगी। अजय की कमीज़ सामने से लाल हो गयी थी, उल्टी करते समय वह जोर से चिल्ला उठा ता अस्पताल के माली का ध्यान गया। वह दौडता हुआ वहाँ आया। अजय को रक्त मे सना देखकर वह भयभीत हो गया। उसने और लोगो को पुकारा और सभी ने अजय को तडपते देखा। दो वार्ड बायज दौडकर स्ट्रेचर लाने गये। अजय को स्ट्रेचर पर डालकर वे उसे डा० रोहित के पास ले गए।

अजय कुलकर्णी को इस हालत मे देखकर डा० रोहित को आघात-सा लगा। उन्हे लगा था कि अजय सुधर गया होगा। नर्स की मदद से उसने फौरन उसे इन्टेन्सिव-केअर यूनिट म ले लिया। रोहित ने दो और डाक्टरो को बुला लिया और फौरन उसे इजेक्शन देकर ग्लुकोज देना शुरू किया। डाक्टरो ने उसे जाचना शुरू किया लेकिन अजय के मुह से लगातार खून बह रहा था। डा० रोहित समझ गये कि उसका बचना मुश्किल है। अजय की आखे माथ की ओर चली गयी और उसकी सास ज़ोर से चलने लगी। सभी डाक्टर पेट के आपरेशन की सोच रहे थे कि अजय ने दम तोड दिया। नर्स ने डाक्टरो को पुकारा और सभी वहाँ दौडकर आ गये। अजय अब खामोश हो गया था और दुर्भाग्य से वह एक शब्द भी न बोल सका था।

अजय कुलकर्णी भी रामकृष्ण कालेज का ही विद्यार्थी था। ड्रग-पेडलर्स ने मिलन का खून किया था चाकू से, और अब इन्ही ड्रग-पेडलर्स ने ही नशीली और ज़हरीली चीज़ो द्वारा अजय का खून किया था। मौत के बाद, अजय का मृत शरीर अस्पताल म पडा रहा। मृत शरीर को मागने कोई नही आया तब डा० रोहित ने प्रो० भारती को फोन करके अजय के बारे मे जानकारी दी। प्रो० भारती ने अजय की मौत के बारे मे सुनकर पलभर के लिए आघात के कारण बुत जैसे हो गये। बाप शराबी था और माँ तपेदिक की बीमारी मे मौत से लड रही थी। प्रो० भारती अजय की लाश

अस्पताल से ले जाने के लिए तैयार थे क्योंकि वह उनका विद्यार्थी था। प्रो० भारती ने हास्टल के एक विद्यार्थी का वता दिया था कि वह कुछ विद्यार्थियो को लेकर डा० रोहित के अस्पताल मे आ जाये। प्रो० भारती धीरे-धीरे चलकर डा० रोहित के पास गये और उन्होने रजिस्टर की खाना पूरी की। प्रो० भारती ने अपने एक विद्यार्थी से कहा—"अजय के लिए कफन और फूलो का प्रवन्ध करो।" प्रो० भारती ने उस सीनियर विद्यार्थी के हाथ मे पाँच सौ रुपये दिये। करीब पचास विद्यार्थी और लगभग आठ अध्यापक भी आ गये थे। उन्होने ही जनाज़ा तैयार किया। अस्पताल मे ही अजय की शव-यात्रा शुरू होने वाली थी।

प्रो० भारती ने कुछ विद्यार्थियो को बुलाया और कुछ पोस्टस तैयार करने के लिये कहा। अर्थात वे वताते गये और विद्यार्थी पोस्टस के लिये नारे लिखते गये। 'अजय की मौत के लिये ब्राउन शुगर का इस्तेमाल।' 'ड्रग बेचने वालो ने ही अजय का खून कर डाला।' 'क्या इन नशीली और जहरीली चीजो से अपने देश के नौजवानो को हम बचा नही सकते?' 'लालची और खतरनाक तस्करो को पकडकर नौजवानो को बचा लो।' बहुत-से विद्यार्थी हाथो मे ये पोस्टर्स लेकर चुपचाप अजय की लाश के साथ चल रहे थे। प्रो० भारती और डाक्टर रोहित दोनो कार मे बैठे थे। प्रो० भारती कुछ कुछ थके हुए दिखाई दे रहे थे।

अजय की लाश, भारतीय नौजवान की लाश और उसकी इस तरह मृत्यु! श्मशान भूमि मे मायूसी छा गयी थी। अजय के कुछ मित्र चिता बना रहे थे। माँ बाप के होते हुए भी अजय की लाश लावारिस थी। लाश चिता पर रखी गयी और अजय के एक मित्र ने ही अग्नि-संस्कार का कार्य किया। चिता जल उठी और अजय का शरीर पंच-तत्वो मे विलीन हो गया। प्रो० भारती ने कुछ विद्यार्थियो को वहाँ रुकने के लिये कहा और वे स्वय डा० रोहित के साथ श्मशान-भूमि से धीरे धीरे चले गये। उन्हे चंदनपुर के कैम्प के लिये अपने आपको तन्दुरुस्त और मजबूत रखना था। दूसरे प्रोफेसर उन विद्यार्थियो के साथ वही रहे। अजय जैसे दो-तीन लोग रोज़ इन

भयानक और खतरनाक नशीली चीज़ो के शिकार हो रहे थे।

दूसरे दिन अखबारो मे अजय की कहानी छप गयी थी और प्रो० भारती ने अपने शहर के लोगो को जो चेतावनी दी थी वह भी छपी हुई थी।

'कुछ बाहर के देश भारतीय जवानो की कमज़ोरियो का लाभ उठाकर हज़ारो नौजवानो को तबाही की राह पर ले जा रहे है। यह तो युद्ध से भी भयानक बात है। हमारे लोग अब तक इस बात को गभीरता से नही ले रहे है। दिन-ब-दिन नशीले पदार्थों के सेवन करने वाले नौजवाना की सख्या बढ रही है। बम्बई शहर मे ही करीबन एक लाख के लगभग यह नबर पहुँच गया है। इसका मतलब यह हुआ कि हमारे एक लाख नौजवान देश के लिये बेकार साबित हो गये। वे जिन्दा लाशो की तरह निरुद्देश्य यहाँ-वहाँ भटक कर रास्ते के किसी कोने पर अपना दम तोड देने वाले है। अब हमे जागना चाहिए। सरकार को नशीले और ज़हरीले पदाथ बेचने वालो को कडी-से-कडी सज़ा देनी चाहिए। बाहर से नशीली चीज़े लानेवाले तस्करो को फाँसी की सजा ही उचित होगी। मै सभी लोगो से, सरकार से और पुलिस अधिकारियो से दिल से अनुरोध करता हूँ कि नशीली चीज़ो के शिकार हमारे नौजवानो को वे बचा ले। हमे यह नही भूलना चाहिए कि आखिर नौजवान ही हमारे देश की शक्ति है।'

चदनपुर तक खबर पहुँचने मे देर न लगी। वहाँ समाज-सेवा का कार्य आरभ हो चुका था। प्रि० खोसला ने अखबार मे छपा प्रो० भारती का भाषण पढकर सबको सुनाया और अजय की आत्मा की शाति के लिए सभी दो मिनट तक मौन रहे। बाद मे उन्होने उसके लिए प्रार्थना की। चदनपुर के गाँववालो का मिलन की याद आ गयी। कुशल और राबी ने अजय को बचाने की दो बार कोशिश की थी लेकिन असफल हो गये थे।

प्रकरण ग्यारह

जाने वाली मुसीबतो की पर्वाह किये बिना निरतर अच्छे कार्यों मे लगे लोगो की आरभ मे काफी आलोचना होती है लेकिन बाद मे उनकी सच्चाई, उनकी लगन और उनकी मेहनत के कारण वे लोगो के दिलो को जीत लेते है। रामकृष्ण कालेज के बारे मे भी यही बात हो गयी। शुरू-शुरू मे मिलन की मृत्यु के कारण और बाद मे प्रो० भारती पर हुए हमले के कारण कालेज की काफी बदनामी हो गयी। अखबारो मे आलोचनाएँ हुइ लेकिन प्रिंसिपल खोसला ने इन बातो को जरा भी महत्त्व नही दिया था। अब वे ही अखबार इस रामकृष्ण कालेज के बारे मे स्तुति-सुमनो की वर्षा कर रहे थे। इस कालेज के जिन्दादिल विद्यार्थी भारतीय विद्यार्थियो के लिए एक मिसाल कायम करना चाहते थे। क्लास रूम मे शरारत करने वाले विद्यार्थी तथा अपने से बडो के साथ लडने वाले विद्यार्थी आज अपनी शक्ति का उपयोग रचनात्मक कार्यों के लिए कर रहे थे। योग्य मार्गदर्शन के कारण हमारे जोशीले जवान चदनपुर मे क्रान्ति पैदा कर रहे थे। इन विद्यार्थियो को परिश्रम करते देखकर वहाँ के लोगो ने अपने आलस्य को छोड दिया था।

चदनपुर मे विद्यार्थियो ने जब से काम शुरू किया था तब से आज तक कितने परिवतन आ गये। चदनपुर की पाठशाला बनकर

तैयार हो गयी थी और उसके सामने का मैदान खेल का मैदान हो गया था। गाँव से स्टेशन तक पक्का रास्ता बन गया था। बम्बई के अलग-अलग ठेकेदारो ने रास्ते के लिए सभी सामान मुफ्त मे पहुँचा दिया था। इस एक किलोमीटर की पक्की सडक पर चदनपुर के लोए नाच रहे थे। एक महीने का काम पचीस दिनो मे ही हो गया। गाँव मे भी रास्ते चौडे बन गये। जिस किसी का मकान या झोपडा रास्ते के बीच आता वह खुशी से वहाँ से उसे हटा देता। क्या अपने गाव के लिए वह इतना नही कर सकता? चदनपुर के गाववालो को लगा कि बम्बई के ये विद्यार्थी फरिश्ते बनकर यहाँ आये है। गाव मे किसी का विरोध नही था। शकरदास ने अपने गाव को इस तरह बदलते देखा तो वे गद्गद हो गये। उन्होने इसी गाँव मे अपनी जिन्दगी के सौ साल पूरे किये थे। हर बार लोग इकट्ठे होते और त्यौहार मनाते। मगल कार्यक्रमो पर आदिवासियो के नाच-गाने होते लेकिन इस तरह का मेल उन्होने अपनी जिन्दगी मे पहली बार देखा था। जब पूरा गाव इस प्रकार बदलने लगा था तब हर एक गाववाले को ऐसा लग रहा था कि उसका घर अच्छा हो, मजबूत हो।

कुछ कच्ची झोपडियाँ तोड दी गयी। लोग वहा अपने पक्के मकान बना रहे थे। गाव मे जरा दूरी पर शौचालय बनाये गये थे जिनका उपयोग विद्यार्थी आदि कर रहे थे। व पक्के और मजबूत थे। उन्ही के पास कुआ बनाया गया था। अब चदनपुर की शोभा और भी बढ गयी। स्टेशन से चदनपुर तक बनायी गयी सडक पर रोशनी के खम्भे खडे हो गये थे।

लोगो की चेतना-शक्ति उन्हे थकने नही देती। जो लोग छोटी-छोटी मागो पर सरकार की आलोचना किया करते थे, वे चुपचाप अपने-अपने काम करते जा रहे थे। अथक परिश्रम, आपसी मेलजोल और एक-दूसरे की मदद करने की भावना ने सभी की शक्ति जगा दी थी। चदनपुर की पाठशाला का नाम 'मिलन पाठशाला' रखा गया था और उस पाठशाला पर नाम-पट्ट भी लग गया था। इस पाठशाला की तस्वीर जब अखबारो मे छप गयी तब चदनपुर के

गाँववालो के सीने गर्व से फूल उठे। चदनपुर के बच्चे-बच्चे मे काम करने की उमग भर गयी थी। बूढो ने भी घर मे बैठना अपनी शान के खिलाफ समझा। मिलकर हाथ बढाने का यह नतीजा था कि चदनपुर चदनवन बन गया था। भारत के लाखो गाँवो के लिए चदनपुर प्रेरक-शक्ति बन गया था। अब चदनपुर मे बिजली, पानी और अच्छे मकानो की सुविधा प्राप्त हो गयी थी। यहाँ लोग व्यक्तिगत सुख की बात को बिल्कुल भूल से गये थे। लोगो के इन बाह्य-परिवर्तनो के साथ-साथ स्वभाव भी बदल गये थे। उनमे कुछ सीखने की इच्छा तीव्र हो गई थी। चदनपुर के करीब-करीब साठ बूढे लोगो ने देवनागरी लिपि सीख ली थी। धीरे-धीरे क्यो न हो, लेकिन वे लिख सकते थे और पढ सकते थे। बहुत-से आदिवासी बच्चो ने टेप-रेकार्डर चलाना सीख लिया। अधिकाश बच्चो और जवानो को बम्बई के इन विद्यार्थियो ने कल्क्यूलेटर चलाना सिखा दिया। अब तक हमारे कितने ही आदिवासी भाई घडी को देखकर समय नही बता सकते थे, लेकिन अब वे घडी मे देखकर समय बता कर पुलकित हो रहे थे। छोटे छोटे चलचित्रो ने चदनपुर के गाँववालो को खूब प्रभावित किया। एक चलचित्र मे उन्होने हृदय की शल्य-क्रिया देखी तो वे हैरान रह गये। शकरदास ने फिल्म-प्रोजेक्टर खरीदने के लिए अपनी जमा की सारी पूजी दे डाली। इनके पैसो मे गाँववाले एक टी० वी०, एक वीडियो और एक फिल्म-प्रोजेक्टर आसानी से खरीद सकते थे। बहुत-से किसान गरीब थे इसलिए इन चीजो को खरीदकर सुरक्षा के लिए मदिर की अलमारी मे रखने वाले थे।

चदनपुर की क्राति से आस-पास के गाँव भी प्रभावित हो गये थे। लोग इस गाँव को देखने आते और देखकर चकित हो जाते। स्टेशन से आनेवाली पक्की सडक का जहा अत हो रहा था वहा एक हरे बोर्ड पर लिखा गया था—

"चदनपुर के निवासी आपका स्वागत करते है।"

अब पडोस के गाँववालो को भी ऐसा लगने लगा कि वे

भी चदनपुर की तरह अपने गाँवो का विकसित करें। वहाँ के मुखिया और सरपच यहाँ आकर इनकी सलाह लेकर जाते। एक छोटे से गाँव ने कितने ही गाँवा को प्रेरणा दी थी। एक छोटी-सी चिनगारी शोलो का रूप धारण करती है। ऐसी जागृति की क्राति देश के हर गाँव मे हो जाए तो देश की प्रगति मे चार चाद लग जायेंगे।

चदनपुर की काया पलट करने म मग्न विद्यार्थियो को और चदनपुर के लोगो को समय का भान ही न रहा। मई का आखरी दिन भी आ पहुँचा। उस दिन गाव म करने के लिए कुछ काम ही नही था लेकिन चदनपुर के लोग वहुत ही व्यस्त थे। शकरदास और दयानद आदि लागो ने बम्वई के लोगा के लिए प्रीति-भोज रखा था और इनके मनोरजन के लिए उन्होने आदिवासी नृत्यो का आयोजन किया था। आदिवासी महिलाओ न वहुत से फूलो के हार वनाये थे। जानकी माई ने इसका प्रवन्ध कर रखा था। चदनपुर का हर एक घर सज गया था। शकरदास न सभी लोगो मे कह दिया था कि वे अपनी-अपनी नयी पोशाका मे शाम को सजधज कर तैयार रहे। दयानद ने तो कुशल, रावी और गोपी के लिए आदिवासी किस्म की पोशाके सिलाई थी। ये तीना 'वाघ का शिकार' यह नृत्य पेश करने वाले थे। डफली के ताल के साथ नृत्य करने का वे अभ्यास कर रहे थे।

चदनपुर के सोशल-सर्विस के कैम्प का अतिम दिन था इसलिए प्रिंसिपल अपने कालेज मे वापिस आ गये थे। प्रा० भारती तो यहाँ आकर विल्कुल स्वस्थ हो गये थे। उन्होने आदिवासी लोगा की भाषा भी कुछ-कुछ सीख ली थी। कितने ही आदिवासी गुड मार्निग, गुड ईवनिंग, थक यू सॉरी, आदि शब्द सीख चुके थे। विद्यार्थियो को आश्चय तव हुआ जव अधे गापी ने भी आठ आठ घण्टा तक रास्ता वनाने म मदद की।

शाम का समय आ गया ता शकरदास और दयानद न प्रिंसिपल और प्रोफेसरो स अनुरोध किया कि वे सभी विद्यार्थियो को मदिर

के पास बुला ले। इनकी बात वे समझ न सके। फिर भी सभी मदिर के पास इकट्ठे हो गये।

सूरज डूबने की तैयारी मे था। इन दो पहाडो की गोद म बसे, चदनपुर की शोभा शाम के समय आसमान की लालिमा पाकर और भी बढ जाती है।

उसी समय दूर से मधुर सगीत सुनायी देने लगा। बासुरी की तान और डफली की ताल मे तालिया बजाते हुए गाँव के आदिवासी पुरुष महिलाओ के साथ नाचते हुए मदिर की ओर आने लगे। उनके हाथो मे और पैरो मे घुघरू बँधे थे। उनकी रगीन पोशाको और उनकी लाल टोपियो मे वे प्राचीन युग के दरबारी लोग लग रहे थे। इस दृश्य मे एक जोश था। बूढे शकरदास ने भी नृत्य मे भाग लिया था। विद्यार्थियो की भीड के पास आकर वे रुक गये। सभी ने ज़ोर से तालियाँ बजायी। महिलाओ ने सभी को पुष्पहार पहनाये। कुछ महिलाओ ने उन्हे आदिवासी गहने दे दिए। दयानद ने गाँव की ओर से सभी को प्रीति-भोज के लिए निमन्त्रित कर दिया। विद्यार्थियो को शहर मे इतना प्रेम नही मिला था। वे हर्षित और चकित थे।

भोजन के पश्चात कुशल, रॉबी और गोपी ने एक जोशीला नाच दिखाया। किसी को इस बात का पता नही था इसलिए सभी खुश हो गये। शकरदास ने कायक्रम के अत मे कहा—"आज चदनपुर का भाग्य जाग उठा है। इसी तरह हमारे देश के हर गाव को सुधारा जा सकता है। हम पडोस के गाँवो मे ज़रूर जायेगे और उनकी मदद करेगे।" दयानद आदि लोगो ने सभी के लिए आभार-प्रदर्शन किया।

इस तरह चदनपुर एक आदर्श गाव बन गया। हमारे विद्यार्थी-नौजवानो को लगा कि ज़िन्दगी मे और भी कितनी बातें हैं पढाई के अलावा। मनुष्य-जीवन को करीब से देखने का उन्हे यह अवसर मिला था। प्रिंसिपल और प्रोफेसर भारती ने विद्यार्थियो की खूब सराहना की और इनके इस जोश ने हज़ारो, लाखो नौजवानो का

नयी दिशाएँ दिखाने के लिए प्रेरणा दी।

मिलन का वलिदान व्यर्थ नही गया। उसके वलिदान मे सत्य की ज्योति थी और यही ज्योति हजारो जवानो के दिलो में प्रज्वलित हो उठी थी। मनुष्य म वहुत बडी शक्ति छिपी है। एक वार वह जाग उठती है तो उचित मार्गदर्शन पाकर वह मनुष्य-जाति का कल्याण करती ह और तब मनुष्य क्षुद्र भेद-भावो से ऊपर उठकर मानवता की पूजा करने लगता है।

□□□